श्री दरियाव दर्शन

[रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य एवं आचार्य पीठ
रामधाम रेण के संस्थापक **श्री दरियावजी महाराज**
का प्रामाणिक जीवन चरित्र व उनका साहित्य]

लेखक व सम्पादक :

रेण पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी शास्त्री
रामधाम-रेण (नागौर)

प्रकाशक :

साधु आनन्दराम रामस्नेही
म०—झोकर (म० प्र०)।

मूल्य : दस रुपये

मुद्रक :

हिमालय प्रिण्टर्स
कुमारिया कुआ, खाण्डा फलसा,
जोधपुर (राज०)

विषय-सूची

विषय	पृ०सं०
निवेदन—रेण पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज	
सम्मतिया—श्री बलरामजी जाखड	
श्री रामनिवासजी मिर्धा	
श्री परसरामजी मदेरणा	
श्री नाथूरामजी मिर्धा	
आभार—साधु श्री आनन्दरामजी, झोकर	
ग्रन्थ-परिचय—श्री यशोराज शास्त्री	
स्तुति-पुष्पाञ्जलि—श्री महादेवोपाध्याय:	
युग निर्माण की परिस्थितिया व रामस्नेही धर्म की आवश्यकता	१-४८
लेखक—रेण पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज	
राष्ट्र की परिस्थितिया	१-७
रामस्नेही सम्प्रदाय के उद्गम का कारण	७-९
सामन्ती सामाजिक व्यवस्था	१०-११
मध्यवर्गीय, कृषक व निम्न वर्गीय	११-१२

विषय	पृ०सं०
सामाजिक व्यवस्था	
धार्मिक स्थिति	१२-१३
मुगल बादशाहो की धार्मिक नीतियां	१३-१६
दरिया से प्राप्त पन्द्रहवां रत्न	१६-१८
स्वयं प्रभ रत्न (दरियाव) का प्रकाश-विकास	१८-२५
तत्वनिष्ठ तथा धर्म रक्षक स्वभाव	२५-२८
शिष्य शाखा और सदुपदेश	२९-४७
श्री दरियावजी महाराज की अणभ वाणी	
सतगुरु का अंग	१-६
सुमिरन का अंग	६-११
विरह का अंग	११-१२
सूरातन का अंग	१२-१६
नाद परचे का अंग	१६-१९
ब्रह्म परचे का अंग	१९-२४
हंस उदास का अंग	२४-२५
सुपने का अंग	२५-२६
राग भैरव	२६-२८
साध का अंग	२९
चिन्तामणि का अंग	३०
अपारख का अंग	३०
उपदेश का अंग	३१-३४
पारस का अंग	३४-३५
चेतावणी का अंग	३५-३६

विषय	पृ०स

साच का अग ३७
नाम महातम का अग ३७-४
मिश्रित साखी का अग ४१-४

श्री दरियावजी महाराज रचित कुछ पद

आदि अनादि मेरा साई—राग भैरव ४
जो सुमिरू तो पूरणराम ४
जाके उर उपजी नही भाई ४
जो घुनिया तो भी ४
आदि अन्त मेरा है राम ४
पतिव्रता पति मिली ५
चल चल वे हसा ५
चल सूवा तेरे ५
नाम बिन भाव करम—राग विहगड़ा ५
दुनिया भरम भूल बौराई ५५
मैं तोहि कैसे विसरू ५६
जीव बटाऊ रे बहता ५७
है कोई सन्त राम अनुरागी—राग सोरठ ५८
साधो राम अनूपम बानी ५९
साधो ऐसी खेती करई ६०
वावल कैसे विसरा जाई ६१
साधो मेरे सतगुरु ६२
साधो एक अचम्भा दीठा

	पृ०स०
अब मेरे सतगुरु करी	६४
मुरली कौन बजावैं हो	६५
कहा कहूँ मेरे पिउ की बात—राग भैरो	६५
ऐसे साधु करम दहै	६६
राम भरोसा राखिये—राग बिलावल	६७
साहब मेरे राम है	६८
अमृत नीका कहै सब—राग गुण्ड	६६
साधो अरट बहै	६६
साधो अलख निरजन	७०
सन्तो क्या गृहस्थ त्यागी	७१
सतगुरु से शब्द ले—रेखता	७३
श्री पूरणदासजी महाराज का	
अनुभव आलोक मन चरित्र का अग	७४-७५
श्री किसनदासजी महाराज कृत	
राम रक्षा	७६
अथ गोरख छन्द	७७-७६
श्री सुखरामजी महाराज कृत	
विरह का अंग	८०-८१
श्री नानकदासजी महाराज कृत	
साखी, छन्द दोहा	८१-८२
श्री हरकारामजी महाराज की	
अनुभव गिरा, छन्द पचीसी सार	८३-८८

विषय	पृ० स०
श्री अम्भावाईजी महाराज कृत	
अणभै वाणी-मुरकी प्रसंग	८९
आरती सग्रह	९०-९६
श्री दरियाव महाप्रभु का प्रादुर्भाव प्रसग	९७-१०६
श्री रामरतनजी कृत वाणी	
पुना गिरी माता का प्रसग	१०६-१०७
प्रेत का उद्धार प्रसंग	१०८-११२
एक पारधी का प्रसग	११२-११७
पूरणदासजी रक्षा प्रसंग	११८-१२४
अथ कुवा को प्रसग	१२५-१२७
जाट केसोरामजी को प्रसग	१२८-१३१
श्री पद्मदासजी कृत वाणी	१३२-१३४
अथ भगत वीसतार को प्रसंग	१३५-१३८
अथ बालपणो का प्रसग	१३८-१३९
अथ पण्डित को प्रसग	१३९-१४०
विद्या पढण को प्रसग	१४१-१४२
सिख गुर मिलण प्रीत को प्रसग	१४२-१४४
अथ घट परचा को प्रसग	१४४-१४७
अथ समाद को प्रसग	१४८-१५०
अथ नारदजी को प्रसग	१५१-१५२
अथ माया को प्रसग	१५२-१५३
अथ फतारामजी को प्रसग	१५४

विपय	पृ० स०
अथ समनजी को प्रसंग	१५५
अथ मधुचन्दजी को प्रसंग	१५६
मदली खान पठान को प्रसग	१५७
अथ जाट को प्रसग	१५८
अथ खाजु मीरा को प्रसग	१५९
अथ भेरू को प्रसग	१६०-१६१
अथ राजा वखतसिघजी को प्रसग	१६१-१६२
अथ राजा विजेसिघजी को प्रसग	१६२-१६४
अथ फतैचन्दजी भोजक को प्रसग	१६४-१६६
अथ महिमा को प्रसग	१६७
अथ सिखा को प्रसंग	१६८-१७८
अथ दूगरो अग लिख्यन्ते	१७९-१८८
अथ सरूपचन्दजी को प्रसग	१८८-१९१
अथ उदेगिर किस्तुरा वाई की परची	१९२-२०३
श्री दरियावजी महाराज की लावणी सन्त जयरामदासजी कृत	२०३-२०८
श्री दरियाव महाप्रभु की लावणी सन्त आत्मारामजी कृत	२०९-२१५

रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री दरियावजी महाराज
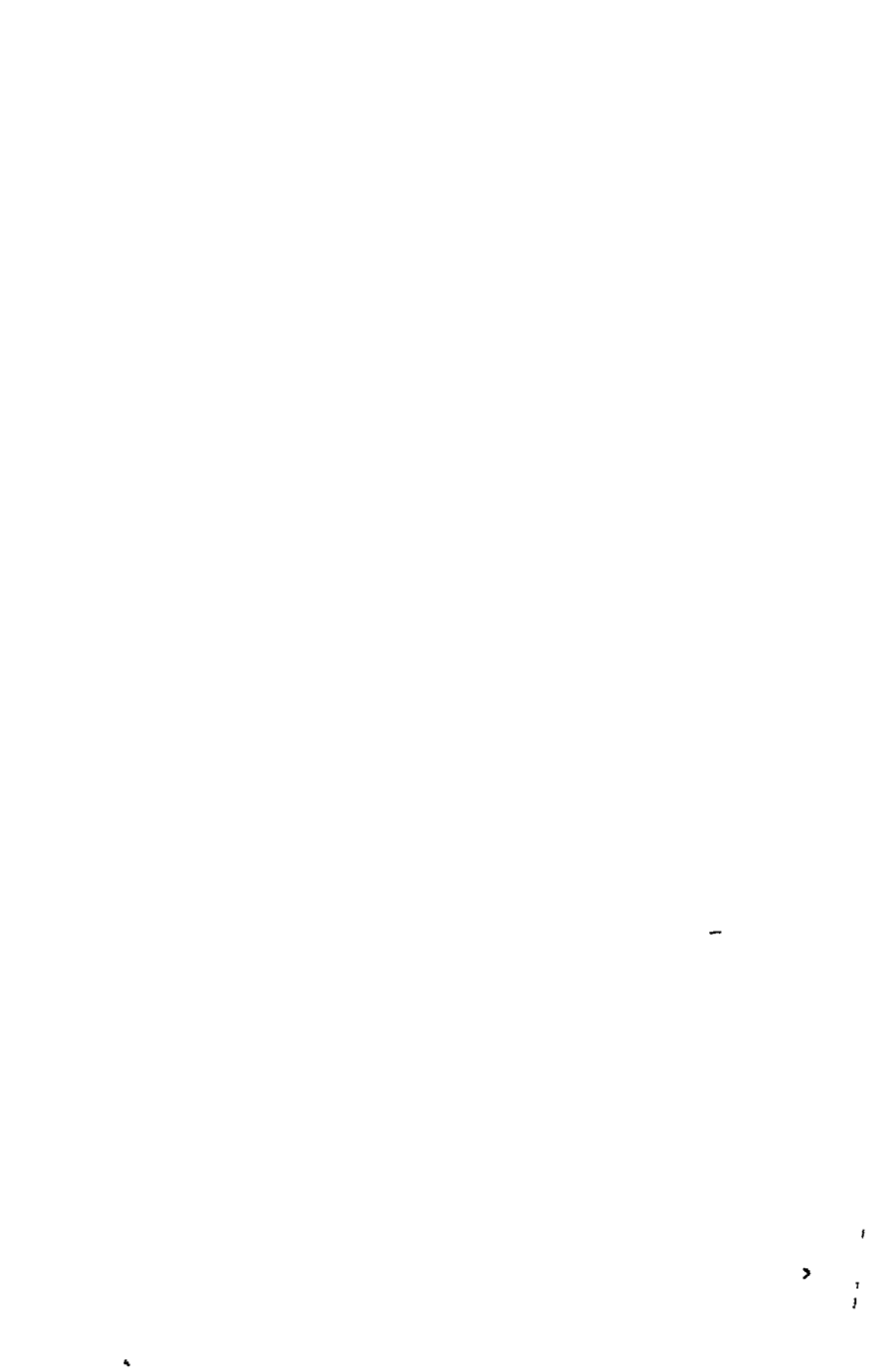
निवेदन

श्री १००८ श्री हरिनारायणजी महाराज

यद्यपि भारत धर्म प्रधान देश है और यहा के निवासियों के हृदय मे सदा से ही भक्ति की पावनधारा प्रवाहित होती रही है तदपि इसी देश के विशाल मरु-प्रदेश राजस्थान के गाव-गाव और घर-घर तक रामभक्ति का प्रचार करने का श्रेय रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री दरियावजी महाराज को ही है। श्री दरियावजी महाराज ने हो सर्व प्रथम सर्वजन ग्राह्य सरल रामभक्ति का प्रचार किया था। रामभक्ति के पावन सन्देश और उसके महात्म्य को सभी वर्गो के लोगो तक पहुचाने के उद्देश्य से उन्होने रेण मे रामधाम की स्थापना की। थोडे ही समय मे यह पवित्र रामधान रेण राजस्थान ही नही अपितु सारे भारत वर्ष मे रामभक्ति का प्रचार केन्द्र वन गया। श्री दरियावजी महाराज उच्चकोटि के साधक थे अत: दिन-प्रतिदिन उनका प्रभाव बढता ही गया। अत्यल्प काल मे ही उनके अनेक शिष्य बन गये। उनके शिष्य भी उनके समान ही उच्चकोटि के सन्त थे और उन्होने श्री दरियावजी महाराज के आदेश से भारत के अनेक स्थानो पर पहुँच कर रामभक्ति का प्रचार किया।

श्री दरियावजी महाराज एव उनके शिष्यो ने 'वहुजन-हिताय' के पावन लक्ष्य को ध्यान मे रखकर लोकभापा म ही अपने 'वाणी-साहित्य' की रचना की। उन्होने अति सरल सुबोधभापा मे उच्चकोटि का ज्ञान प्रस्तुत किया है। यद्यपि श्री दरियावजी महाराज सस्कृत भापा के प्रकाण्ड पण्डित थे लेकिन उन्होने लोक कल्याण की भावना से ही जनभापा का आश्रय

लिया । उनका ध्यान-योग सम्बन्धी भक्ति साहित्य तो अद्वितीय है ।

श्री दरियावजी महाराज की वाणियां शताब्दियों से जन-जन तक पहुँचने के उपरान्त भी मुद्रित व प्रकाशित नहीं हो सकी । उनकी वाणियां केवल "पाण्डुलिपि" के रूप मे कर्पट पट्टिकाओं मे ही सुरक्षित रही । अद्यपर्यन्त श्री दरियावजी के साहित्य के प्रकाशित न होने का एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि सन्त अपने गुरुओ की 'वाणी' को बडा आदर देते है व उनकी 'पाण्डुलिपि' को ही साक्षात् गुरु समझते है । सन्तो की यह धारणा है कि कपड़े की तह मे लिपटी 'पाण्डुलिपि' केवल रामद्वारे की परिधि मे ही समुचित आदर प्राप्त कर सकती है, मुद्रित व प्रकाशित होने पर इन वाणियो को लोग कहा भी डाल देंगे और इस प्रकार वाणी और गुरू का अपमान होगा । मैंने वड़ी कठिनाई से सन्तो को प्राचीन सकीर्ण विचार त्याग कर समय के साथ वदलने का महत्व वताया और उन्हे .म-झाया कि वाणियो के प्रकाशित होने पर लाखो लोग लाभ उठा सकेंगे तथा श्री दरियावजी महाराज का यश. सोरभ सारे भारत मे प्रसारित हो सकेगा । इस प्रकार सन्त वडी कठिनाई से सहमत हुए । इसके अतिरिक्त पाण्डुलिपिया शता‌ब्दियो पुरानी हैं, उनके कागज गल गये है या फट गये है तथा अक्षरो की वनावट मे भी कही कही अन्तर है, उन सवका समायोजन करने मे मुझे वडी कठिनाई हुई लेकिन श्री दरियावजी महा-राज व रामकृपा से अव शताब्दियो से अपूर्ण कार्य पूर्ण हो गया है, इसी मे मैं अपनी तथा सन्तों को सवसे वडी उपलब्धि समझता हू । आशा है अवशिष्ट पाण्डुलिपिया भी शाघ्र प्रका-शित हो जावेगी ।

प्रसंगवश मै यहां स्पष्ट रूप से उल्लेख कर देना चाहता हूं कि अ. भा. रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री दरियावजी महाराज ही है। हिन्दी के कुछ विद्वानो ने किसी अन्य सन्त को आद्याचार्य माना है लेकिन यह सब उन्होंने अपने सीमित ज्ञान के आधार पर ही लिखा है। उन विद्वानों ने श्री दरियावजी महाराज के साहित्य का अध्ययन ही नही किया था।

अब मैं इसी सन्दर्भ मे ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत कर रहा हूँ जिससे विद्वज्जन अपनी भ्रान्ति का निवारण करके वास्तविकता को स्वीकार कर सके। रामस्नेही सम्प्रदाय के मुख्य रूप से तीन आचार्य माने गये हैं। रेण के श्री दरिआवजी महाराज; गुरूदीक्षा स. १७६९ कार्तिक शुक्ल ११, सिहथल के श्री हरिरामदासजी, गुरूदीक्षा स. १८०० आषाढ कृष्ण १३; शाहपुरा के श्री रामचरणजी गुरूदीक्षा स. १८०८ भाद्रपद शुक्ल ७; खेडापा के आचार्य श्री रामदासजी सिंहथल के आचार्य के ही शिष्य थे लेकिन बाद मे गुरु की आज्ञा से खेड़ापा को भी स्वतन्त्र आचार्य पीठ घोषित कर दिया गया। (वि. सं. ~~[illegible] फाल्गुन कृष्ण ४)~~ । १८०९ - वैशाख - शु. ११

उल्लिखित ऐतिहासिक तथ्य से स्पष्ट है कि रेण पीठ के सस्थापक श्री दरियावजी महाराज ही अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य है।

मैं उन महानुभावो का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने मुझे इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे अपना सहयोग देकर मुझे प्रोत्साहित किया। सर्व प्रथम मै श्री रामनिवासजी मिर्धा का प्रत्यन्त आभारी हूँ, जो मुझे बारम्बार श्री दरियावजी महाराज की वाणी प्रकाशित करवाने की प्रेरणा देते रहे है। गत वर्ष गीता

भवन जोधपुर मे आयोजित चातुर्मास के अवसर पर हजारो भक्तजन श्री दरियावजी महाराज की वाणी पर प्रवचन सुनकर बड़े प्रभावित हुए और उन्होने मुझ से श्री दरियावजी महाराज की वाणी प्रकाशित करवाने का सामूहिक अनुरोध किया, साथ ही भक्तो की आकाक्षाओ को पूर्ण करने के उद्देश्य से गीता भवन के सचालक शुभराजजी लोढा ने मुझे विशेष प्रेरणा दी। मैं श्रीनिवासजी तापड़िया श्री सोहनलालजी राठी, श्री छगन-लालजी को भी धन्यवाद देता हूँ जो समय समय पर वाणी साहित्य के प्रकाशन में मुझे सहयोग देते रहे है। अन्त मे मै श्री यशोराजजी शास्त्री के प्रति अपना आभार प्रकट करता हू जिन्होने श्री दरियावजी महाराज के वाणी साहित्य का अध्ययन करके पाठकों की सुविधार्थ सक्षेप मे 'ग्रन्थ परिचय' लिखा है। मै इस ग्रथ के प्रकाशक मध्य प्रदेश के झोकर थम्भा के सन्त श्री आनन्दरामजी के प्रति कृतज्ञता प्रका-शित करता हू जिन्होने इस ग्रन्थ के प्रकाशन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है।

—हरिनारायण शास्त्री
रेण पीठाचार्य
रामधाम रेण

❀ सम्मति ❀

रामनिवास मिर्धा

भूतपूर्व केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री व

उपसभापति राज्य सभा

मै विगत १५ वर्षो से अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदाय के रेण पीठ के वर्तमान पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज को बहुत ही निकट से जानता हू। आप उच्चकोटि के विद्वान् है। आपका निरभिमान, निस्पृह, सादा जीवन, त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति है। आपने अपने निष्कलक उदात्त चरित्र एवं पाण्डित्य पूर्ण प्रवचनो से अत्यल्प समय मे ही रेणधाम की चिर-लुप्त प्रतिष्ठा को राजस्थान के गाव-गांव, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तो एव देश के बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, अकोला, हैदराबाद, मैसूर आदि विशाल नगरों में पुनः प्रतिष्ठापित करने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उससे रामस्नेही सम्प्रदाय आपका सदा ऋणी रहेगा।

मुझे स्वय आपके श्रीमुख से आपकी ओजमय मधुरवाणी मे 'श्रीमद्भागवत' की कथा तथा श्री दरियावजी महाराज की "वाणी" पर प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मै

आपकी प्रवचन शैली से बड़ा प्रभावित हुआ हूं, क्योंकि आपकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि आप सभी धार्मिक प्रसंगों को सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिवेश मे प्रस्तुत करने की अपूर्व क्षमता रखते हैं, इसलिए आपके प्रवचनों को सुनने के लिये अपार जन समूह उमड पडता है।

श्री हरिनारायणजी महाराज साहित्य की भी बड़ी सेवा कर रहे हैं। आपने श्री दरियावजी महाराज के शताब्दियों पुराने हस्तलिखित साहित्य–उनकी वाणी को प्रकाशित करवाने का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि उनका यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य मे विशिष्ट गौरवमय स्थान प्राप्त करके श्री दरियावजी महाराज की विचारधारा का प्रचार करेगा। ईश्वर ऐसे समाजसेवी सन्त को शतायु करे।

—**रामनिवास मिर्धा**

सम्मति

बलराम जाखड़

अध्यक्ष, लोकसभा

अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य एव रेंण पीठ के सस्थापक श्री दरियावजी महाराज के जीवन चरित्र के माध्यम से उनके जीवन सम्बन्धी कार्यों एव उनके धार्मिक विचारो को रेण पीठ के वर्तमान आचार्य श्री हरिनारायणजी महाज ने बहुत ही प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया है। जिस समय हमारे देश की धार्मिक स्थिति डावा डोल थी तथा समाज मे बहुदेवोपासना, कर्मकाण्ड की कठोरता एव ऊच-नीच के भेदभाव चरम सीमा पर पहुँचे हुए थे उस समय सर्व प्रथम श्री दरियावजी महाराज ने धर्म तथा जातिगत भेदभावो से ऊपर उठकर मानव मात्र को रामभक्ति (भगवद् भक्ति) का अधिकार प्रदान किया था। उनका यह कार्य विश्रृंखलित समाज व राष्ट्र को एकता के सूत्र मे बाधने का महान् कार्य था।

सम्प्रति रेणधाम के वर्तमान पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज भी श्री दरियावजी के समान ही अपने धर्म प्रचार के साथ-साथ समाज एव राष्ट्र को एकता के सूत्र मे बाधने का पुनीत कार्य कर रहे है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने प्रवचनो से जनता मे पावन रामभक्ति के प्रचार के साथ समानता व राष्ट्रीयता का भी उद्‌बोधन कराते रहेगे तथा उनका यह ग्रथ जीवन मे सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिए जनता को समुचित दिशा प्रदान कर सकेगा।

—बलराम जाखड़

सम्मति

परसराम मदेरणा

सिंचाई, राजस्व एव अकाल राहत मन्त्री,

राजस्थान

बाल्यकाल से ही मेरी रुचि सन्त साहित्य के अध्ययन की रही है क्यों कि मुझे इसी साहित्य मे आदर्श भक्ति एवं सच्ची मानवता के दर्शन हुए हैं। सन्त कबीर और उनके परवर्ती सन्तों ने धर्म के नाम पर प्रचलित बाह्याडम्बरों का जिस निर्भीकता से विरोध करके भक्ति के शुद्ध स्वरूप को प्रस्तुत किया, उससे मैं बडा प्रभावित हुआ।

सन्त साहित्य के अध्ययन की मेरी इसी प्रवृत्ति की शृंखला मे अब मुझे अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य एव रेण पीठ के संस्थापक श्री दरियावजी महाराज रचित 'अणभै वाणी' का अध्ययन करने का अवसर मिला। अध्ययन से विदित होता है कि वे उच्चकोटि के साधक थे इसीलिये उन्होने अपनी 'वाणी' मे स्वानुभूत भक्ति का वर्णन 'नाद परचे के अंग', 'ब्रह्म परचे का अंग' आदि शीर्षकों से बडे ही मार्मिक शब्दो मे किया है। इसके अतिरिक्त आपके साहित्य मे मानव मानव को समान समझने की विशेष प्रेरणा दी गई है। रेण धाम के वर्तमान पीठाचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज ने उनके साहित्य एवं प्रामाणिक जीवन चरित्र को प्रकाशित करवा कर साहित्य की बडी सेवा की है। मुझे विश्वास है कि उनका यह ग्रंथ भगवद्भक्तो एव साहित्य प्रेमियो के लिये बडा उपयोगी सिद्ध होगा।

—परसराम मदेरणा

सम्मति

नाथूराम मिर्धा
भूतपूर्व केन्द्रीय वित्त मन्त्री

रेणपीठ के वर्तमान आचार्य श्री हरिनारायणजी महाराज ने रेण पीठ के संस्थापक एवं अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री दरियावजी महाराज के जीवन चरित्र को प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर प्रस्तुत किया है। वास्तव मे आचार्य श्री हरिनारायणजी ने सतत कठोर परिश्रम करके आचार्य श्री दरियावजी महाराज के अनेक अज्ञात प्रसगो को प्रस्तुत किया है।

श्री दरियावजी महाराज ने लगभग तीन शताब्दी पूर्व अकर्त्तव्यविमूढ एव दिशाविहीन भारतीय जनता को रामभक्ति की ओर प्रेरित कर उनके जीवन मे शान्ति और आत्म विश्वास की भावना जागृत की थी। उन्होने अपनी "वाणी" मे लोकभाषा में भक्ति का जो वर्णन किया है उसमे उनकी स्वानुभूति की छाप स्पष्ट रूप से बिम्बित हो रही है। ऐसे उच्चकोटि के निस्पृह सन्त का जीवन चरित्र प्रस्तुत करके श्री हरिनारायणजी महाराज ने समाज की बडी सेवा की है। इसके अतिरिक्त जब से वे पीठाचार्य के पद पर आसीन हुए है तभी से 'श्री मद्भागवत' की कथा व श्री दरियावजी महाराज की वाणी पर प्रवचन सुनाकर जनता का वड़ा उपकार कर रहे है। ईश्वर उन्हे शतायु करे।

—नाथूराम मिर्धा

श्री आचार्य दरियाव चरिताष्टकम्

कर्मन्दिना विश्वजनीन रामस्नेही जगद्विश्रुत सम्प्रदाय ।
तपोबल वीक्ष्य न यस्य केवा भवन्ति मग्ना: भुवि विस्मयाब्धौ ॥१॥

बभूव यस्यादिम भव्य धर्माचार्य परिव्राट् दरियाव योगी ।
यदुद्भव वारिधी कूलवर्ति, श्रीद्वारका क्षेत्र मुदाहरन्ति ॥२॥

गुणाग्नि सप्तेन्दु मितेसदब्दे, मासे शुभे भाद्रपदे सुदिष्टे ।
कृष्णाष्टमी सस्कृत सद्दिनेऽसो, स्वजन्मनाभूमिमलञ्चकार ॥ . ॥

बाल्ये मतीत्वाप्त समज्ञ गीगा वाई महेच्छो मनसादिराम· ।
बभूवतुस्तत .िचार रक्तावुपेक्ष्य सासारिक कृत्यजातम् ॥४·।

त्यक्तेष्णाग्रेसरयोगी मुख्यात्, तपस्वी ससेवितपादपद्मात् ।
सञ्चक्रमुर्यत्र गुणा: समस्ता:, श्रीप्रेमदासादवतीर्यवर्यात् ॥५॥

महात्मनो शिष्यवरा अभूवन्, श्रीकृष्णदासोऽस्य सुखादिराम: ।
श्रीपूर्णदासो हरकादिराम: तपोनिधिर्नानकदास नामा: ॥६॥

ज्ञानाग्नि दग्धाऽखिलकर्मणोऽस्य, वेदोदितायां सरणौ स्थितस्य ।
भक्तेषु सञ्चारित सद्गृहस्थ, जाता मुमुक्षा स्वशरीरकस्य ॥७॥

बाणक्षमाष्टेन्दु मितेसदब्दे पूर्णातिथौ प्राञ्चितमार्गमासे ।
सन्क्रन्दतो भक्तजनान्विहाय, कैवल्यमाप तपसा निधि स: ॥८॥

ततश्च रेनान्वित मारवाड़ देशेऽस्य भक्तैर्वपुष समाधि: ।
विनिर्मित: मुख्यतम हि पीठ, तत्सम्प्रदायस्य यमामनन्ति ॥९॥

लेखक—महादेवोपाध्याय, साहित्यवेदान्ताचाय
प्राध्यापक
श्री वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय, काशी ।

मेरा पीठाधीश्वर
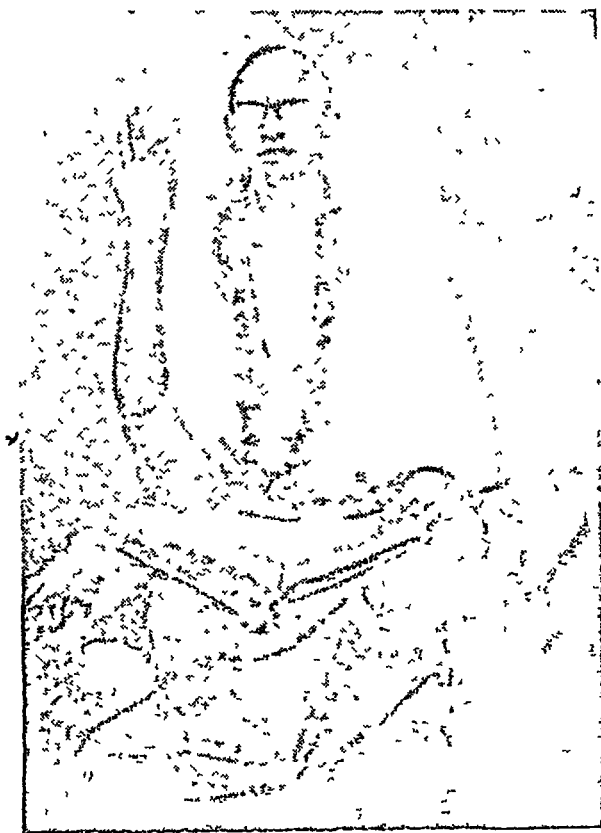
महाराज श्री हरिनारायणजी शास्त्री

❀ ग्रन्थ परिचय ❀

—यशोराज शास्त्री

'राम स्नेही सम्प्रदाय के आद्याचार्य एव रेण पीठ के संस्था-
पक श्री दरियावजी महाराज उच्चकोटि के निस्पृह सन्त थे।
उनके जन्म के समय देश में बहुदेवोपासना, कर्मकांण्ड की
कठोरता, आर्थिक विषमता, ऊच-नीच के भेदभाव आदि अनेक
अवगुण चरम सीमा पर पहुँचे हुए थे तथा यहा के राजाओ के
पारस्परिक कलह, ईर्ष्या और द्वेष के कारण देश का राजनैतिक
वातावरण पूर्ण रूप से अस्थिर और अशान्त बना हुआ था।
एक दूसरे को नीचा दिखाने की बढती हुई कुत्सित दुष्प्रवृत्ति के
परिणाम स्वरूप यहा के राजा अपनी स्वर्गादपि गरीयसी जन्म-
भूमि के गौरव को भी भूल गये। अपनी इसी घृणित दुष्प्रवृत्ति
के कारण ही उन्होने वाह्य आक्रान्ताओ से वैवाहिक सम्बन्ध
स्थापित करके राष्ट्र का भाग्य उन्हे सौप कर उनके अधीन
रहना तो स्वीकार कर लिया लेकिन यही के किसी शक्तिशाली
राजा के नेतृत्व मे सगठित होकर वाह्य आक्रान्ताओं को राष्ट्र
से बाहर निकालने तथा उसे ही अपना सम्राट मानने को उद्यत
न हो सके। इस प्रकार जब बाहरी आक्रमणकारियो ने यहां
के राजाओ की फूट का लाभ उठाकर अपना शासन पूर्णरूप से
स्थापित कर लिया तो उन्होने निःशक होकर यहा के राजाओं
के सामने ही उनकी प्रजा का बलात् धर्म परिवर्तन करना
प्रारम्भ कर दिया। स्पष्ट है कि यहां के राजाओं के राज-
नैतिक वर्चस्व समाप्त होने के साथ ही समाज मे शताब्दियो से

संस्कारित धार्मिक वर्चस्व के सुदृढ गढ भी ढहने लगे और रक्षको के अभाव मे जनता अपने आपको असहाय एवं निराश्रित अनुभव करने लगी।

सक्रमण काल की इसी स्थिति [में निराश, उत्पीडित, शोषित, किंकर्त्तव्यविमूढ एवं दिशा विहीन भारतीय जनता का श्री दरियावजी महाराज ने पथ प्रदर्शन किया, क्यो कि लोगों को असहाय और दुखी देख कर सच्चे साधु का हृदय द्रवित हो जाता है। द्रवणशीलता के कारण ही सच्चा साधु अपनी व्यक्तिगत साधना की अपेक्षा लोक कल्याण को अधिक महत्त्व देता है। अपने इसी उच्चकोटि के साधु स्वभाव के कारण ही श्री दरियावजी महाराज ने आतकित व सत्रस्त भारतीय जनता को जीवन मे सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिये तथा मानव जीवन को सार्थक वनाने के उद्देश्य से रामभक्ति (भगवद्भक्ति) की महिमा वताई। श्री दरियावजी महाराज ने अपने पूर्ववर्ती क्वीर, दादू आदि सन्तों की भाति निराकार निर्गुण रामभक्ति का ही प्रचार किया। उनके निर्गुण व्रह्म तथा निर्गुण राम में कोई भेद नही है। दोनो एक ही नाम से पुकारे जाते हैं और दोनो ही अविनाशी हैं।

सोई पन्थ कवीर का, दादू का महाराज।
सव सन्तन का वालमा, दरिया का सिरताज।।

श्री दरियावजी के राम जन्म-मरण से रहित अजर, अमर समस्त सृष्टि के रचयिता एवं सर्वोपरि है। न उसका आदि है और न उसका अन्त ही है। उसके रहस्य को समझना अति दुष्कर है।

जनम मरण सूं रहित है, खण्डे नहीं अखण्ड ।
जन दरिया भज राम जी, जिन्हा रची ब्रह्मण्ड ।।
आदि अन्त मद्ध नहीं जाको, कोई पार न पावे ताको ।
जन दरिया के साहब सोई, तापर और न दूजा कोई ।।

श्री दरियावजी महाराज ने निर्गुण राम के नाम-जाप को ही सच्ची भक्ति माना है । राम नाम जाप से ही भक्त के हृदय मे परमज्योति का आभास होता है । उनके अनुसार सगुणोपासना तो धूम्र के समान है ।

अनुभव झूठा थोथरा, निर्गुण सच्चा नाम ।
परम ज्योति परचै भया, तो धुआ से क्या काम ।।

धुआ तो कुछ क्षणो तक ही दृश्य है, बाद मे लुप्त हो जाता है । कण-कण में व्याप्त निराकार ब्रह्म आंखो से दिखाई नही देता तथा मन और बुद्धि की भी उस तक पहुच नही है ।

आंखों से दीखै नहीं, सब्द न पावै जान ।
मन बुध तहं पहुंचे नहीं, कौन कहे सेलान ।।

नाम महात्म्य के चरमोत्कर्ष तक बहुत कम लोग ही पहुँच पाते हैं लेकिन जो पहुँच जाता है वह जीवन-मरण के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष-परमपद को प्राप्त कर लेता है ।

दरिया नाके नाम के, बिरला आवै कोय ।
जो आवे तो परम पद, आवागमन न होय ।।

राम-नाम स्मरण से भक्त के सब कर्म और नाना प्रकार के भ्रम नष्ट हो जाते है । यह राम नाम सूर्य के सदृश है जिसके

प्रभाव से अज्ञान अन्धकार नष्ट हो जाता है तथा शरीर के रोम-रोम मे दिव्य प्रकाश की अनुभूति होने लगती है—

दरिया सूरज ऊगिया चहूँ दिस भया उजास ।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास ।।
दरिया सुमिरै राम को सहज तिमिर का नास ।
घट भीतर होय चान्दणा, परम जोति प्रकास ।।
दरिया सुमिरै राम को, कर्म भर्म सब चूर ।
निस तारा सहजै मिटे, जो ऊगे निर्मल सूर ।।

श्री दरियावजी महाराज के अनुसार केवल एक पर ब्रह्म परमात्मा (राम) की शरण मे जाने से भक्त की जीवन मे कभी पराजय–हार नही होती अत: भक्त को केवल एक राम की आशा विश्वास पर ही अपना जीवन यापन करना चाहिये, अन्य देवी देवताओ की शरण मे जाना व्यर्थ है :—

दरिया सुमिरै राम को, दूजी आस निवार ।
एक आस लागा रहै, तो कदे न आवे हार ।।

यह मानव शरीर पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के परिणाम स्वरूप ही मिलता है तथा इस शरीर के माध्यम से पूर्व जन्म के अवशिष्ट पापो को राम नाम जाप से नष्ट करने का स्वर्णिम अवसर भगवान ने दिया है । यदि इस अवसर (मनुष्य-जन्म) का लाभ उठाकर राम नाम का उच्चारण नही कर सके तो फिर मृत्यु के समय पापो का बोझ ही साथ ले जाना पड़ेगा ।

दरिया नर तन पाय कर, किया न राम उचार ।
बोझ उतारन आइया, सो ले चले सिर भार ।।

संसार मे केवल राम नाम ही सत्य है अन्य सब झूठ व नश्वर है अतः क्षणभंगुर संसार एवं पारिवारिक ममता को त्याग कर भगवान का नाम स्मरण करने से ही जीवन सफल हो सकता है लेकिन संसार व पारिवारिक जीवन मे लिप्त रहने वाले के लिये भगवान का नाम स्मरण करना बडा कठिन है। मानव की जीवन-लिप्सा उसे अनेक पापों की ओर अग्रसर करती रहती है, अन्त मे ये पाप कर्म ही मानव को राम नाम स्मरण से विमुख कर देते है, केवल संसार व परिवार को त्यागने (पूठ देने) पर ही भगवान् की भक्ति सम्भव है :—

दरिया सांचा राम है, और सकल ही झूठ।
सनमुख रहिये राम से, दे सब ही को पूठ॥
दरसण आडा सहस पाप, परसण आडा लाख।
सुमिरण आडा कोड़ है, जन दरिया की साख॥

यद्यपि श्री दरियावजी महाराज अपने समय के ध्यान योग के सर्व श्रेष्ठ साधक-योगी थे और उन्होने ध्यान-योग को ही भक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप माना है तदपि उन्होने समाज मे प्रचलित सगुण-साकार भक्ति को भी अपनी वाणी मे महत्व देकर जनभावना का बडा आदर किया है :—

दरिया देखे दोय परव, त्रिकुटि संधि मंझार।
निराकार एकै दिसा, एकै दिसा आकार॥
किसको निन्दूं किसको वन्दूं, दोनों पल्ला भारी।
निर्गुण तो है पिता हमारा, सरगुण है महतारी॥

श्री दरियावजी महाराज ने जनभावना का आदर करके ही सगुण ब्रह्म को माता तथा निर्गुण ब्रह्म को पिता के रूप में स्वीकार करके समन्वयवादी उदार दृष्टिकोण अपनाया है। इस उदार दृष्टिकोण को प्राचीन ऋषि, मुनि व सन्त अनादि-

काल से निरन्तर निभाते आये है, इसीलिये उनकी प्रार्थना में भगवान् के लिये "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" आदि भावों के दर्शन होते हैं।

जीव, ब्रह्म, सृष्टि एवं माया के सम्बन्ध मे श्री दरियावजी महाराज के विचार उपनिषदो एवं गीता मे वर्णित विचारो के समान ही हैं। श्री दरियावजी कण-कण में ब्रह्म के अस्तित्व को स्वीकार करते है तथा सर्वं खल्विद ब्रह्म' के पोपक है। उनके विचारानुसार समस्त सृष्टि का रचयिता सर्वशक्ति-सम्पन्न, सर्वान्तिर्यामी, कण-कण मे व्याप्त निर्गुण ब्रह्म ही है। वे एक ब्रह्म का ही अस्तित्व मानते है 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, वही तीन लोक चौदह भुवनो को प्रकाशित करने वाला है—"तीन लोक चौदह भुवन, करै सहज प्रकाशा" तथा तीन लोक चौदह भुवनो मे पूर्णरूप से व्याप्त है। जो मनुष्य भगवान के अस्तित्व को स्वीकार करके उसकी शरण में जाता है, भगवान भी प्रतिक्षण उसके पास रहकर उसकी रक्षा के लिये हाजिर रहते है और जो भगवान का नही मानता उस नास्तिक से भगवान् भी दूर रहते हैं :—

तीन लोक चौदह भुवन, केवल भरपूरा।
हाजिरां से हाजिर सदा, दूरां से दूरां॥

जीव ब्रह्म से तब तक दूर भागता है जब तक उसे अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नही होता। श्री दरियावजी महाराज जीव को ब्रह्म का अश मानते हैं अतः इसमे भी सभी ईश्वरीय गुण हैं लेकिन अपने कर्म फल के परिणाम स्वरूप माया के आवरण से आच्छादित होकर अपनी जाति या अपने ही स्व-

रूप से बिछुड कर पञ्चतत्त्व से निर्मित शरीर का आश्रय लेकर इधर उधर भटक रहा है, केवल ध्यान योग के माध्यम से ही पुनः अपने ईश्वरीय स्वरूप मे विलीन हो सकता है —

जीव जात से बिछुड़ा, धर पंच तत का भेष।
दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख ।।

इस प्रकार श्री दरियावजी महाराज ने जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं माना है। बाह्य रूप से जो भिन्नता दृष्टिगोचर होती है वह मायाकृत है। श्री दरियावजी महाराज ने जीव-मात्र मे ब्रह्म की स्थिति का आभास किया है और इस तथ्य का अनुभव केवल "आत्म-चिन्तन" अथवा "ध्यान योग" से ही किया जा सकता है "अनहद मेरा साइया, सब घट मे रहा समाय" से श्री दरियावजी महाराज का यही आशय है कि जीवात्मा के रूप मे परमात्मा सब प्राणियों मे समाया हुआ है।

श्री दरियावजी महाराज अपने समय के उच्चकोटि के साधक थे। उन्होने अपनी उच्चकोटि की साधना से परमात्मा का आत्म साक्षात्कार किया था। आत्म साक्षात्कार के इस दिव्य स्थल तक पहुचने के लिये उन्हे बडी कठोर तपस्या करनी पडी थी। इस दिव्य स्थल तक पहुँचने की क्षमता किसी दिव्य उच्चकोटि के सन्त मे ही होती है। सतत ध्यान योग के माध्यम से जीवात्मा को ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचने पर जिस वर्णनातीत दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है, उसका सुन्दर वर्णन स्वानुभूत ज्ञान के आधार पर श्री दरियावजी महाराज ने "नाद परचे का अग" व "ब्रह्म परचे का अंग" आदि प्रसंगों में किया

है। श्री दरियावजी महाराज ने उस दिव्य स्थल को "अगम देश" की संज्ञा प्रदान की है, उस अगम देश में जीव और ब्रह्म मे—स्वामी और सेवक मे कोई भेदभाव नही रहता है लेकिन यह सब केवल शून्य समाधि में ही अनुभव किया जा सकता है .—

अगम दलीचा अगम घर, जहं कोई रूप न रेख ।
जन दरिया दुविधा नहीं, स्वामी सेवक एक ।।
दरिया सुन्न समाध को, महिमा घनो अनन्त ।
पहुंचा सोई जानसी, कोई कोई बिरला सन्त ।।

श्री दरियावजी महाराज ने भगवद् प्राप्ति के लिये भक्ति के सभी वाह्य कठोर साधनो व आडम्बरो का परित्याग कर केवल "नाम" उच्चारण को वडा महत्त्व दिया है। उनके अनुसार इस नाम जाप का पथ-प्रदर्शक केवल सतगुरु ही है जिसकी कृपा से भक्त अपने आराध्य देव से साक्षात्कार करने का अधिकारी वन जाता है। श्री दरियावजी महाराज ने नाम जाप के लिये ब्रह्म के प्रचलित अनेक नामो मे से "राम" नाम को ही स्वीकार किया है क्योंकि शिक्षित, अशिक्षित सभी वर्ग के भक्तजन इसका उच्चारण वड़ी सरलता से कर सकते है। वडे वडे शास्त्रो का ज्ञान तव तक कोई महत्त्व नही रखता जव तक कि उस ज्ञान के अनुसार आचरण नही किया जाता। आचरण के अभाव मे यह शास्त्र ज्ञान केवल शरीर पर लिपटी हुई धूलि के समान ही है। यह धूलि केवल सतगुरु द्वारा वताये हुए राम नाम के जाप से ही उडाई जा सकती है :—

दरिया सिर तक देख कर, सतगुरु कीनी रीझ ।
नाम संजीवन मोहि दिया, तीन लोक को वीज ।।

रंजो सास्तर ज्ञान को, अंग रहो लिपटाय।
सतगुरु एक हि शब्द से, दीन्हो तुरन्त उड़ाय ।।

नाम साधना अथवा शब्द साधना मे ध्यान की प्रधानता रहती है। इस साधना में भक्त रात दिन नाम जाप करते करते श्वास-प्रश्वास के साथ नाम जाप करने लगता है। इस अवस्था को श्री दरियावजी महाराज ने "अजपाजाप" के नाम से पुकारा है। इस स्थिति पर पहुँचते ही भक्त के भक्ति के अन्य सभी बाह्य उपादान (माला आदि) निरर्थक हो जाते हैं। निरन्तर ध्यानावस्थित अवस्था मे राम नाम के जाप के प्रभाव से भक्त को जिह्वा के अग्रभाग पर मिसरी जैसा स्वाद अनुभव होने लगता है :—

दरिया सुमिरै राम को, आठ पहर आराध।
रसना में रस ऊपजे, मिसरी जैसा स्वाद ।।

इस अनिर्वचनीय आनन्द का प्रभाव जब रसना से कण्ठ में पहुँचता है तो साधक को निरन्तर ध्यानावस्थित अवस्था मे बैठे रहने के कारण उसके शरीर मे प्रेम की लहरे उठने लगती है लेकिन नियमित आहार एवं जलपान के अभाव में उसका शरीर पीला पड़ जाता है परन्तु मन मे सुख और शान्ति रहती है।

दरिया विरही साधु का, तन पीला मन सूख।
रैन न आवै नींदड़ी, दिवस ना लागे भूख ।।

इसके पश्चात् राम शब्द हृदय में प्रवेश करता है। राम शब्द के यहां पहुँचते ही भक्त के भ्रम, कर्म व सशय सब नष्ट

हो जाते हैं। अनन्त प्रकाश दिखाई देने लगता है तथा हृदय आनन्द की हिलोरें लेने लगता है :—

जन दरिया हिरदा बिचे, हुआ ज्ञान प्रकाश।
हौद भरा जहं प्रेम का, तहं लेत हिलौरा दास।।

तदनन्तर राम शब्द नाभि में प्रवेश करता है। यहा साधक को बडी आनन्ददायिनी अनुभूति होती है। नाभि कमल के भीतर भ्रमर (राम शब्द) गुंजार करते है, उनका न कोई रूप है और न कोई वर्ण। यही पर मन रूपी भ्रमर को दिव्यानन्द की प्राप्ति होती है :—

नाभि कंवल के भीतरे, भवर करत गुंजार।
रूप न रेख न वरन है ऐसा अगम विचार।।

नाभि के पश्चात् राम शब्द इडा, पिंगला, सुषुम्ना से विचरण करता हुआ मेरुदण्ड के नीचे उतर कर नाद की खिडकी खोल कर ब्रह्म मे लीन हो जाता है। यहा पहुँचते ही साधक अनन्त चन्द्रमा एव करोडो सूर्यो के प्रकाश का दर्शन करता है। अनेक प्रकार के वाद्य वजते है, प्रतिपल वसन्त का दृश्य रहता है तथा अमृत की वर्षा होती है। ध्यानयोग की इसी चरमोत्कर्ष स्थिति मे जीवतत्व, परमात्म तत्व मे लीन होकर सच्चे सुख की अनुभूति करता है :—

नाभि कंवल से ऊतरा, मेरू दण्ड तल आय।
खिड़की खोली नाद की, मिला ब्रह्म से जाय।।
अनन्त हि चन्दा ऊगिया, सूर्यकोटि परकास।
बिन बादल बरसा घनी, छह ऋतु बारह मास।।

सांसारिक माया मोह में फंसा मानव अपने स्वरूप को पहचानने मे असमर्थ हो रहा है। यह माया मानव के ज्ञान-विवेक को नष्ट करके उसमे आसुरी प्रवृत्तियों का सचार कर देती है। इस माया का प्रभाव समस्त ससार पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। इसके प्रभाव से मानव जागृत अवस्था मे भी सुपुप्त एव मोह के आवरण से आच्छादित दिखाई देता है, तथा अपने ही शरीर में विद्यमान ब्रह्म को पहचानने मे असमर्थ हो रहा है।

दुनिया भरम भूल बौराई।
आतम राम सकल घट भीतर, जाकी सुद्ध न पाई ॥

उसी मानव का जागना सार्थक है जो माया के बन्धन से मुक्त होकर अपने ही शरीर मे स्थित ब्रह्म का अनुभव कर सके अन्यथा जागता हुआ ससार भी श्री दरियावजी महाराज के अनुसार सोया हुआ ही है :—

दरिया सोता सकल जग, जागत नाहीं कोय।
जागे में फिर जागना, जागा कहिए सोय ॥

श्री दरियावजी महाराज ने माया को ब्रह्मोपासना में सबसे अधिक बाधक माना है इसीलिये इसे नागिन, नटनी आदि अनेक प्रतीकात्मक रूपो मे प्रस्तुत किया है तथा इसकी अत्यधिक भर्त्सना की है। उन्होने माया के साकार रूप में परिवार, धन आदि को माना है। माया मोह की अज्ञान तमिस्रा से केवल राम नाम के प्रभाव से ही छुटकारा पाया जा सकता है। वास्तव मे यह माया सबको लूट रही है :—

सन्तों माया सबको लूटै ।
है जग में ऐसा जन, कोई राम नाम कहि छूटै ।

इस जीवन मे माया मोह को त्यागने की क्षमता केवल साधु सगति के प्रभाव से राम नाम की महिमा जानने पर ही आ सकती है । सत्सग के प्रभाव से ही विषय-वासनाओ का नाश तथा हृदय पर भक्ति का प्रभाव अकित होता है :—

"दरिया संगत साधु की, कल विष नासै धोय"

दरिया संगत साध की, सहजै पलटै अंग ।
जैसे संग मजीठ के, कपड़ा होय सुरग ।।

जगत और माया मोह मे लिप्त मानव जहा भी जाता है वही उसे सर्वत्र अपना काल दृष्टिगोचर होता है । केवल भग-वान् की शरण मे जाने पर ही मानव अमरता प्राप्त कर सकता है । वास्तव मे संसार को त्याग कर अपने शरीर मे स्थित भगवान की शरण मे जाने मे ही मानव का हित है —

राम विना तो ठौर नही रे, जह जावे तहं काल ।
जन दरिया मन उलट जगत सू , अपना राम सम्भाल ।।

वास्तव में मनुष्य स्वयं को ईश्वरार्पित करने पर ही जन्म-मरण से मुक्त हो सकता है :—

'जन दरिया अरप दे आपा, जन्म मरण तब टूटे"

पौराणिक मान्यताओ के अनुसार अमृत पीने वाला ही अमर हो सकता है, लेकिन यह अमृत क्या है ? श्री दरियावजी

महाराज ने "राम नाम" को ही अमृत माना है तथा राम नाम रूपी अमृत का पान करने वाले साधु सन्त व भक्त जन ही अमरता को प्राप्त कर सकते हैं :—

"अमृत नीका कहै सब कोई, पीये बिना अमर नहीं होई"
"दरिया अमृत नाम अनन्ता, जा को पी-पी अमर भये सन्ता"

इसीलिये श्री दरियावजी महाराज केवल एक राम नाम के जाप को ही भक्ति का सर्व श्रेष्ठ साधन मानते हैं व राम-नाम जाप से ही भक्तों के सारे कार्य सिद्ध हो सकते है :—

"दरिया सुमिरै एक हि राम, एक राम सारै सब काम"

श्री दरियावजी महाराज ध्यानयोग के उच्चकोटि के सन्त थे । वे अपनी योग शक्ति के बल पर अपने विपद्ग्रस्त भक्तो के असम्भव कार्यो को पूर्ण कर देते थे । हमारे धार्मिक ग्रन्थो मे ऋषि-मुनियो, सन्तो, महापुरुषो के अतिरिक्त भगवान् श्रीकृष्ण एव भगवान् श्री रामचन्द्रजी के अनेक चमत्कारपूर्ण कार्यो का वर्णन किया गया है । श्रीराम व श्रीकृष्ण को उनके चामत्कारिक कार्यो के कारण ही लोग भगवान् के रूप मे पूजते है । उच्चकोटि के ध्यानयोगी सन्त होने के कारण श्री दरियावजी महाराज ने भी अनेक चमत्कारों का प्रदशन किया । उनके ऐसे चमत्कारपूर्ण कार्यों का वर्णन उनके भक्तो ने अपनी अपनी रचनाओं मे किया है, उनमे से कुछ प्रसगो का समावेश इस ग्रन्थ मे किया गया है । ये सभी प्रसग अभी तक अमुद्रित एवं अप्रकाशित थे । रेण धाम के वर्तमान पीठाचार्य श्री हरि-नारायणजी महाराज ने श्री दरियावजी महाराज की वाणी तथा उनसे सम्बद्ध अप्रकाशित साहित्य को सर्व प्रथम प्रकाशित

करवा के भारतीय जनता को श्री दरियावजी महाराज की विचारधारा का अध्ययन करने का स्वर्णिम अवसर दिया है तथा हिन्दी साहित्य के सन्त साहित्य मे चार चान्द लगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, इसके लिये हिन्दी साहित्य आपका सदा आभारी रहेगा।

श्री दरियावजी महाराज के चामत्कारिक कार्यों मे श्री पूरणदासजी के मरणासन्न पुत्र को जीवन दान देना;

जन दरिया परताप पुत्र पूरण के आछा।
चारू भाई भाल आय चरण लपटाया॥
"कृपा करो सरणागत राखो, अब तो संग तजूं नहीं थांको"
पूरणदास परचे भये, सिर पै दरियादास।
कलह भरमना मिट गई, हिरदे नांव प्रकास॥

पारधी (शिकारी) के मृत मृग को पुनर्जीवित करना;

मन में केवे पारधी, जो मिरगो जीवत होय।
सतगुरु फिर यों करूं, कबहुं न पाप कमाय॥
समर्थ दरिया राम प्रतापे, आवे शरण तोय दुख कांपे।
पापी केरा पाप मिटाया, चेना पारधी परम सुख पाया॥

दिल्ली मे यमुना जल में डूबते सेठ मधुचन्द की रक्षा करना;

करणां करी पुकार, दास दरियाव उबारो।
मो अबला (असहाय) की लाज, राखज्यो विड़द तुमारो॥

पानीपत की दूसरी लड़ाई मे दिल्ली-बादशाह के दीवान मदली खान पठान की घायल अवस्था मे सहायता करना;

हो हो जन दरियाव, दया कर आप पधारो ।
मेटो तन की पीड़, विपत सब दूर निवारो ।।

जयपुर राजा के आमन्त्रण पर शिष्यो के साथ जयपुर जाते समय श्री दरियावजी महाराज द्वारा भादु गाव के कुंए के खारे पानी को अमृत तुल्य मीठा करना;

माराज जल मांगे तब हो, कह सतगुरु सुं खारा जल ही ।
कह माराज मीठा है भाई, तुम दिल में मत घबराई ।।
"इम्रत जल ह्वे गियो भाई"

भक्त केसोराम जाट की मनोकामना पूर्ण करना;

जन म्हाराज सब हो जाणे, दया करो बोले आप ही वाणे ।
केसोराम कुसी रहो मन में, जरा सक लावो नहीं मन मे ।।
"पुत्र होयगा तेरे दोई, माया घणो घर तेरे होई"
"वर दीयो दरिया सा साम्रो, अब केसा के रहो न खामी"

जोधपुर के राजा बखतसिहजी द्वारा शिष्यत्व स्वीकार करना,

बगतसिह नरेश देश मुरधर को राजा,
जन दरिया के चरण शरण सब सरिया काज ।

राजा विजयसिहजी द्वारा शिष्यत्व स्वीकार करके महाराज श्री के अनुरोध पर प्रजा की लाग-बाग बन्द करना;

तब राजा वीजे पाल, भेट पूजा विसतारी,
लाग-बाग सब माफ, सही कर दीनी सारी ।

ग्राकासर (बीकानेर) के उदेगिरि का शिष्य बनना व संकट के समय श्री दरियावजी महाराज द्वारा उदेगिरि की लुटेरों से रक्षा करना तथा महाराज श्री के दर्शन के लिये ग्रातुर भक्त किस्तुरां बाई को उसी के स्थान पर दर्शन देना,

(ग्र) ग्राय ग्राकासर कह्यो उदेगिर
जन दरियाव उवारया;
(ब) दर्शण बिना दुखी जिव मेरो,
उठ उठ पथ जोवे ।
(स) ग्रातर सुणी पधारया ग्रापी,
विड़द प्रगटो कीनो,
ग्रपणी दास जाण कर दर्शन,
किस्तुरां को दीनो ।

बाल्यकाल में नागराज द्वारा ग्रपने फण का छत्र बनाकर प्रचण्ड धूप से श्री दरियावजी महाराज की रक्षा करना;

(ग्र) एक दिन पलणे पौढाये,
नागेन्द्र दर्शन कु ग्राये ।
व्याकुल वदन विलोक के,
छत्र कियो तेहि ग्रान ।।
(ब) जन्म समय इचरज एक होई,
दरस कर नाग मनो मोई ।
उदय रवि तपन बहुत जोई,
व्याकुल लख छत्र कियो सोई ।।

काशी के पंडित स्वरूपानन्द का जोधपुर आगमन के समय जैतारण मार्ग मे बालको के साथ खेलते हुए बालक दरियाव के अपूर्व तेज को देखकर मुग्ध होना तथा बालक की हस्त-रेखा देख कर भविष्य वाणी करना आदि अनेक प्रसग है।

एसो अजब अनूप, देवता दरसण करही,
राव रंक सुलतान, सीस चरणां में धरही।

श्री दरियावजी म० के उल्लिखित चमत्कारपूर्ण प्रसंगों के अतिरिक्त श्री रामरतनजी कृत वाणी "दरियाव महाप्रभु का प्रादुर्भाव प्रसग" सन्त जयरामदासजी कृत "श्री दरियावजी महाराज की लावणी" तथा सन्त आत्मारामजी कृत "श्री दरियावजी महाप्रभु की लावणी" ऐसी रचनाएं है जिनमें महाराज श्री के लोक कल्याणकारी अनेक चामत्कारिक कार्यों का वर्णन किया गया है। महाराज श्री दरियावजी के इन चमत्कार पूर्ण कार्यों के कारण ही भक्तजन उन्हें ईश्वर मानते हैं। श्री दरियावजी महाराज के एक प्रधान शिष्य श्री नानकदासजो ने उनकी महिमा को कृतज्ञता के रूप मे कितने सुन्दर शब्दो में व्यक्त किया है :—

दाता गुरु दरियाव सही, गुरुदेव हमारा।
राम राम सुमिराय, पतित को पार उतारा॥
राम नाम सुमिरण दिया, दिया भक्ति हरिभाव।
आठ पहर बिसरो मती, यूं कहे गुरु दरियाव॥

स्पष्ट है कि श्री दरियावजी महाराज अपने समय के सर्वश्रेष्ठ उच्चकोटि के ध्यानयोगी सन्त थे तथा शरण मे आये हुए

भक्त की आकांक्षाओं को पूर्ण करते थे। भक्तो के असम्भव कार्यों को पूर्ण करने के उपरान्त भी उनके चरित्र मे आत्म-श्लाघा एव अहभाव नाम मात्र को भी नही था। वे इसे अपना प्रभाव न मानकर ईश्वर कृपा का प्रभाव मानते थे लेकिन भक्तजन इसे साधु सन्तो का परचा ही समझते हैं :—

दरिया साधु कृपा करे, तो तारे संसार।
तारण हारा राम है, जा में फेर न सार॥
संकट पड़े जब साध पै, सब सन्तन के सोग।
दरिया सहाय करे हरि, परचा माने लोग॥

भगवान् के नाम रूपी जहाज से ही ससार-सागर को पार करके मनुष्य जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो सकता है, इसी लिये श्री दरियावजी महाराज ने सभी ग्रन्थो (वेद शास्त्र एव अन्य धार्मिक ग्रन्थ) का यही निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि अहर्निश राम नाम जाप करने मे ही जीवन की सार्थकता है :—

सकल ग्रन्थ का अर्थ है, सकल बात की बात।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन-रात॥

आभार

इस दुघट कलिकाल में कामक्रोधादि से असंख्य विषया-वृत्त प्राणियों को सन्तों ने "निर्वैर: सर्वभूतेपु" के दृष्टिकोण को अपना कर भगीरथ परिश्रम से मानव समाज का संरक्षण किया एवं क्रमश: करते जा रहे हैं।

प्रात: स्मरणीय स्वामी श्री प्रेमदासजी के सर्वप्रथम वीतराग निर्गुण निराकार के आराध्य एवं वन्दनीय राम-स्नेही मत के आद्य प्रवर्तक आचाय चरण स्वामीजी श्री अनन्त श्री दरियावजो महाराज रामधाम रेण में हुए।

आपके प्रथम शिरोमणि वडे शिष्य पूर्णदासजी परम-गुरुभक्त हुए। आपका प्रादुर्भाव वि. सं. १७.५ भाद्रपद कृष्ण-अष्टमी को हुआ तथा स. १७७२ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को दीक्षा ली। वि. स १८१० चैत्र शुक्ल ११ को मोक्ष पद को प्राप्त हुए। मु. झोकर जिला उज्जेन मालवा-मध्यप्रदेश मे आपका थाम्बे का विशाल राम द्वारा है। आपको प्रथम अनन्त श्री दरियावजी महाराज रामस्नेही धर्माचार्य का उपदेश मिला।

> कृपा कर सतगुरु कहे पूरण सुन मम बात।
> निश्चल मन धारण करो, सुन रामस्नेही तात ।।

श्री दरियावजी महाराज के ७२ शिष्य थे।। सब शिष्यों को ही सद्गुरु द्वारा सुरत शब्द द्वारा कैवल्य ज्ञान-ध्यान का

उपदेश मिला। वे सब शिष्य कृतकृत्य हो गये। स्वामी जी श्री दरियावजी महाराज वि. स. १८१५ मार्गशीर्ष पूर्णिमा को निर्वाण पद कैवल्य ज्ञान द्वारा मोक्ष-ब्रह्मलीन हो गये। रामधाम रेण मे उनकी संगमरमर की समाधि बनी हुई है। मैंने रामस्नेही सन्तवाणी माडर्न प्रिण्टर्स लि इन्दोर (मध्य प्रदेश) मे चैत्र शु १५ सम्वत् २०१७ मे छपवाई।

बहुत समय से मैं सन्त वाणी का पाठ करता हूं। मेरे मन मे सकल्प हुआ कि रामस्नेही धर्माचार्यो का जीवन चरित्र तथा उनके अमृतमय वचन-वाणी-को प्रकाशित करूं, आ के शिष्यो की वाणी और पदो को प्रकाशित करूं। मै अपने अन्य प्रेमी पाठको के पाठ सुविधार्थ प्रकाशित करूं।

मेरी इच्छा की पूर्त्ति के लिये श्री श्री १००८ श्री वर्तमान रामस्नेही धर्माचार्य श्री स्वामी हरिनारायणजी महाराज द्वारा जीवन चरित्र और सन्तवाणी शुद्धता के साथ प्रकाशित हुई, एतदर्थ मैं रेण पीठाधीश्वर को वारम्बार धन्यवाद देता हूं और मैं आपका अति आभारी हूं।

भवदीय प्रकाशक

साधु आनन्दराम रामस्नेही

मु. झोकर जिला-उज्जेन मध्य प्रदेश,

धनाड़ी-जि. अमरावती

अवतमाल (महाराष्ट्र)

सन्त श्री आनन्दरामजी महाराज

झोकर (मध्य प्रदेश)

❀ राम ❀

इति वृत्त प्रसिद्ध राजस्थान प्रान्तान्तर्वति नागोर मण्डलान्तर्गत रेण पीठाधीपानाम् साक्षात् कृत पर-ब्रह्माभिधक्लेश विराम रामाणां श्रीमतां १००८ श्री हरिनारायण स्वामि महाभागानामाचार्य प्रवराणाम्
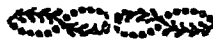
स्तुति–पुष्पाञ्जलिः

रामस्नेहिनाम्ना प्रथितः संन्यासि सम्प्रदायवरः ।
श्रौतस्मार्त विधान ज्ञानाचारोपदेश सम्प्रसितः ।।१।।

रामस्नेही नाम से प्रसिद्ध सन्यासियों का एक श्रेष्ठ सम्प्रदाय है जो वेद और स्मृतियो मे बताये गये कर्त्तव्यो का ज्ञान तथा आचार के उपदेश के लिये जनता मे प्रसिद्ध है ।।१।।

तत्रैद्ध कीर्तिरेणाभिधान पीठाधिपो मुनिर्जयति ।
हरिनारायण नामाभिनवाचार्यों विवेक सम्पन्नः ।।२।।

इस सम्प्रदाय के कीर्ति सम्पन्न रेण नामक पीठ के अधिपति विवेकशील नवीन आचाय मुनि श्री हरिनारायणजी महाराज विद्यमान है ।।२।।

विद्वत्सार्थ मनोरथागतसमस्ताऽर्थार्पणे भोजराट्,
दीनानाथ विपन्नजन्मि निवहत्राणाय नित्योदितः ।
विद्याभ्यास निसक्तमानस वटुव्रातोपकारेरत·
साधूनाम् परिपालको विजयते श्रीरेणपीठाधिपः ।।३।।

जो रेण पीठाधिपति विद्वानो के मनोरथ पूर्ण करने मे राजा भोज के समान है । दीन व अनाथ तथा विपद्ग्रस्त प्राणियो की रक्षा के लिये सर्वदा सन्नद्ध रहते है । विद्याभ्यास मे सलग्न ब्रह्मचारियो के उपकारक हे तथा साधु महात्माओ के प्रतिपालक है ।३।।

स्वाध्यायप्रतिपादिताखिलविधेर्नित्य प्रचारोद्यतः,
वैराग्याध्वनि सञ्चरन्नपिकृपापात्रे सरागोऽन्वहम् ।
रामेभक्तिभरान्वितोऽपि जनताहानेर्विरामोद्भुतः,
शश्वत् सयमभूमिकासुविहरन् पीठेश्वरोराजते ।।४।।

जो पीठाधिपति वेद बोधित समस्त कर्त्तव्यो के प्रचारार्थ सर्वदा तत्पर रहते है, जो वैराग्य के मार्ग पर चलते हुए सभी कृपा पात्रो पर सतत् अनुराग करते हैं, श्रीराम मे पूर्ण भक्ति करते हुए भी जनता की हानि के नाशक है तथा निरन्तर ध्यान धारण समाधि की अवस्था मे विहार करते रहते है ।।४।।

नित्यंनिर्गुणरामचिन्तन सवेगोद्दीप्त योगाऽग्निना,
निर्दग्धाखिल कर्मपूतहृदयैर्वैराग्य वद्भिर्वृतः ।
विद्य पास्त्युपदेश लोकविदित ज्ञानप्रकर्षोज्वलो,
धर्मोद्धारकृत श्रमो विजयते श्रीरेणपीठेश्वरः ।।५।।

जो पीठाधिपति ऐसे विरक्त महत्माओ से घिरे रहते है, जिनके सर्वदानिर्गुण राम के चिन्तन मे शीघ्र प्रज्वलित योगाग्नि द्वारा समस्त सञ्चित कर्म दग्ध हो गये है अतः जिनका अन्तःकरण अत्यन्त विशुद्ध है विद्या की उपासना के उपदेश जिनका उत्कट ज्ञान लोक विदित है तथा धर्मोद्धार के लिये नित्यसचेष्ट रहते हैं ।।५।।

योऽसावल्पवयाः शमप्रभृतिभिर्योगैश्चमत्कारिभिः,
वृद्धानप्यवधूतचित्त विषयान्कालाद्बहोर्योगिनः ।
निर्बीजाख्यसमाधिसक्तहृदयोऽतिक्रम्यसंतिष्ठते,
सर्वस्याप्यनुकार्यभव्य चरितः श्रीरेणपीठाधिपः ।।६।।

जो थोडी अवस्था के होते हुए भी आश्चर्यजनक शमदम आदि योगो के द्वारा उन वृद्ध योगियो का भी अतिक्रमण कर लिया है जिन्होने चिरकाल से मन को वश मे कर लिया है जिनका चित्त सर्वदा निर्बीज समाधि मे लगा रहता है तथा जिनके शोभन आचरण का सभी लोग अनुकरण करते है ।।६।।

पारम्पर्यपरागतार्य चरितस्वीकारबद्धादराः,
धर्माराधनतत्परैकहृदयाःस्युर्भारतीया जनाः ।
सत्योपास्तिरुपैतुवृद्धिमनृता चारोलयगच्छतु,
भुयः सौख्यभर प्रसन्न व सुधाभूयाद्भवद्यत्नतः ।।७।।

आप ऐसे योगीश्वर से हम लोगो की यही कामना है कि भारत की जनता परम्परा से आते हुए वैदिक आचार मे श्रद्धा-पूर्ण होकर तथा धर्माराधन की ओर तत्पर रहे । सभी सत्य मार्ग का अवलम्बन करे तथा मिथ्याचार समाप्त हो पुनः पृथिवी मगलमय कृत्यो से प्रफुल्लित दिखाई दे ।।७।।

देशस्योन्नतयेपरोपकृतयेनिःश्रेयस प्राप्तये,
पूर्वैस्तेगुरुभिर्विवोधखनिभिर्या चालिता पद्धतिः ।
वेदान्तोदित निष्कलंक वचनव्रातोपदेशै. सदा,
तस्याः शुद्धिमतन्द्रितेनमनसा कुर्वन् भवान्राजते ।।८।।

ज्ञान के समुद्र आपके पूर्वाचार्यो ने देश की उन्नति परोपकार तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये जो मार्ग प्रशस्त किया है, उस मार्ग को तत्परता के साथ वेदान्त के निष्कलंक वचनो के उपदेश द्वारा सदा आप परिष्कृत करते रहे यही निवेदन है ।।८।।

ज्ञानविज्ञानयोरेक प्रतिष्ठानोऽतिनिर्मलः ।
जीयादनल्पसमय आचार्यप्रवरोभुवि । ९।।

यही परमात्मा से प्रार्थना है कि ज्ञान तथा विज्ञान के एक मात्र निवास भूमि ये आचार्य प्रवर चिरकाल तक भूतल को अलकृत करते रहे ।।९।।

।। इति शुभम् ।।

समर्पकः
महादेवोपाध्याय
वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

युग निर्माण की परिस्थितियाँ व रामस्नेही धर्म की आवश्यकता

विश्ववंद्य, भक्तवीर प्रसूता
भारत भूमि को शत शत प्रणाम

आध्यात्मवाद व भौतिकवाद दोनों मे ही भारत विश्व- गुरु रहा है। भारत पर मुसलमानो के आक्रमण से पूर्व यह अत्यन्त समृद्ध देश था। हमारे यहाँ की शिल्प कला इतनी अधिक विकसित थी कि दूर दराज रोम आदि देशो तक के व्यापारी इन्हे खरीदने के लिए यहाँ आते थे। अकेला रोम देश ही इस खरीद के बदलें लगभग ढाई लाख तोला सोना, जिसका मूल्य उस समय के पौने दो करोड़ रुपए के बराबर होता था, भारत को भेजा करता था।

भारत जेसे अग्रणी देश में उत्पादित इन वस्तुओ को भोग विलास व ऐश- आराम ने पानी की तरह वहाकर नष्ट कर दिया जाता था। प्रजा का खून- पसीने की कमाई से उपार्जित ये दुर्लभ वस्तुएँ सामतो की फिजूल- खर्ची मे प्रयुक्त होती थी। राजमहलों के नव- निर्माणो सिंहासनो, चवरो, राजपलगों आदि के सजावट के कार्यों मे इन्हे नष्ट किया जाता था। हीरो व मोतियों से जडे पक्षिओ के पिंजडों मे शुकसारिकाएँ निवास करती थी। लोहे आदि धातुओ के वडे वडे पिजड़ो के निर्माण से मानवीय शक्ति व धातू सम्पदा का व्यय होने लगा था।

कृषक और मजदूर शोपण की पीडादायक ज्वाला मे जल रहे थे। उनके सुख- दुख का साथी कोई न रह गया था।

उनका मान सम्मान देने वाला भी कहीं दिखाई न देता था। प्रायः इस वर्ग के लोगो को रूखी-सूखी रोटी खाकर व पानी पीकर ही सतोष करना पडता था। उनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता था। ऊँची जाति वालो के वर्णाभिमान के कारण वर्ण व्यवस्था इतनी क्रूर हो गई थी कि राह चलते समय शूद्रों को थूकने के लिए अपने साथ पुरवा या सकोरा रखना पड़ता था।

भेदभाव, शोषण व क्रूरताओं से परिपूर्ण ऐसी ही स्थिति मे भारत में मुसलमानो का आगमन हुआ। एक हाथ मे तलवार तथा दूसरे हाथ में कुरान लेकर यवन शीघ्र ही सारे भारत मे फैल गए। इसका परिणाम यह हुआ कि अपने प्राणों की रक्षा के लिए हिन्दुओ के अनेक जाति सम्प्रदाय व धर्म सम्प्रदाय मुसलमान वन गए। उन्होंने भय वश इस्लाम को स्वीकार कर लिया। देश की सस्कृति पर सकटो के वादल मडराने लगे। लोगो की समझ मे यह नहीं आता था कि इस परिस्थिति का सामना कैसे करें।

इस समय भारत को आत्मा अपने उद्धार के लिए छटपटा रही थी। यह आवश्यकता थी कि कोई आकर जाति-पाँति के झूठे भेद-भाव उठाए, ऊँच नीच की स्वनिर्मित खाइयाँ पाटें और देश को ऊँचा उठाए। भारत के लोगो के नैतिक स्तर को गिरने से बचाएँ, उन्हे उनके धार्मिक अधिकार वापस दिलाए तथा विविध धार्मिक सम्प्रदायो की समन्वित एक व्यापक मानव-धर्म की स्थापना व प्रतिष्ठा की जाय।

समय की ऐसी ही उत्कट पुकार ने स्वामी रामानन्द जैसे धार्मिक नेता को जन्म दिया। इस महापुरुष के द्वारा वडे वेग से भक्ति भावना का प्रचार प्रसार हुआ। स्वामीजी के इस

भक्ति प्रवाह ने हिन्दुओं और मुसलमानों को समान रूप से आकृष्ट किया तथा पथ मे सबको समान स्थान दिया। श्री रामानन्द महाराज के शिष्यो मे अनन्तानन्द, पीपा, कबीर, रैदास आदि सभी जातियों मे जन्म लेने वाले साधक थे।

बाबा कृष्णदास पयहारी, स्वामी अनंतानदजी के सर्वश्रेष्ठ शिष्य थे। पयहारी जी ने गलता जी मे गद्दी की स्थापना की। ये सगुण-भक्ति-धारा के सन्त थे। आपके प्रमुख शिष्य श्री अग्रदासजी और इनके शिष्य नारायणदास तथा इनके शिष्य प्रेमभूराजी हुए।

प्रेमभूराजी के शिष्य रामदासजी तथा इनके शिष्य छोटा नारायणदासजी हुए। इनके शिष्य सन्तदासजी महाराज हुए जो आदि आचार्य श्री दरियाव महाराज रेण के व श्री रामचरण महाराज शाहपुरा के दादागुरु थे।

स्वामी अग्रदासजी महाराज के पश्चात् पांचवी पीढी में सन्तदासजी महाराज हुए। आचार्य श्री सन्तदासजी महाराज का प्रादुर्भाव विक्रम सवत १६९९ तथा दूसरे प्रमाण के अनुसार स० १६८१ फागुन वदी ९ रविवार के दिन ग्राम कॉवड्या खराडी (मेडता-मारवाड) खडिया चारण जाति मे हुआ। आपकी माता नर्मदा वाई तथा पिता रामदानजी थे।

श्री सन्तदासजी ने जूनागढ में गुरु दीक्षा लेकर मेवाड-प्रान्त शहर भीलवाडा के पास दाँतड़ा ग्राम मे भजन किया।

स्वामीजी वि० स० १८०६ फाल्गुन वदी ७ शनिवार को दिन के समय ब्रह्मलीन हो गए। इसलिए आपका समाधि स्थल ग्राम दाँतड़ा है।

महाराज श्री एक चमत्कारी महापुरुप थे। एक वार किसी नवाव को अपनी गुदडी से चमत्कार दिखलाने के कारण आप 'गूदड-वादशाह' कहलाने लगे थे। इसीलिए आपके अनुयायी गूदड़-पथी कहलाते है। महाराज के प्रतापी व यशस्वी दो शिष्य है जिनके नाम महाराज कृपारामजी व प्रेमदासजी है।

श्री प्रेमदासजी महाराज का जन्म वि० स० १७१९ मे अगहन सुदी ९ मंगलवार के दिन (वीकानेर प्रान्त) ग्राम खीयासर में हुआ था आपके पिता श्री का नाम श्री जगन्नाथ-सिह तथा माता का नाम सीता कवर था। महाराज साहव जन्म से क्षत्रिय थे किन्तु वाल्यकाल से ही वैराग्य की ओर उन्मुख हो गए थे। वि० स० १७४६ मे चैत्र सुदी अष्टमी के दिन गुरु दीक्षा ग्रहण कर ससार से विरक्त हो गए थे। आप आसन सिद्ध महापुरुप हुए है।

दोहा—प्रेम पुरुष महराज को, अगम समाधि अगाध
घटमासे एके आसन, वरणो सव ही साध

महाराज श्री ने अनन्य भाव से भजन कर काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओ पर विजय प्राप्त कर ली थी। अत. कुछ अहकार उत्पन्न हो गया। एक वार आपने अपने गुरु महाराज सतदासजी को प्रणाम करते हुए अहकार का प्रदर्शन किया

दोहा—प्रेम सिपाही राम का, ततवांधी तलवार
कनक कामनी जीत के, मुजरो है महाराज

इस पर गुरुदेव ने निरभिमानी वनने का आशीर्वाद दिया और कहा कि "जाओ तुमको गृहस्थ धारण करना पडेगा।"

गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर तथा वस्तुस्थिति को समझ कर गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते हुए श्री प्रेमदास जी

महाराज ने जाटावास मे निवास किया। अपनी साधना भी जाटावास मे की (यह स्थान मेडता परगना मे है) आप वि० स० १८०९ की फाल्गुन वदी सप्तमी को परमधाम पधार गए। आपको समाधि जाटावास व खियासर दोनो स्थानो पर है।

इधर मन गढत वाते वनाने वालो ने वडे गुरु भाई वालक दास को प्रेमदासजी का गुरु वनाने का दुष्प्रयत्न भी किया था पर सत्य तो सत्य ही रहा। इस सन्दर्भ मे यह एक आवश्यकता है कि हमारे सग्रहालयो मे भरे पड़े प्राचोन ग्रथो मे सग्रहोत हस्तलिखित वाणियो का अध्ययन व अवलोकन किया जाये इनमे सब प्रकार के प्रमाण उपलब्ध है। यहाँ पर कुछ प्रमाण उपलब्ध कराए जा रहे है जो बिना अधिक प्रयास के सशयो को दूर कर सकते है। श्री प्रेमदासजो की अनुभव वाणी तथा अन्य परम्परागत शिष्यो को आरती स्तुति भक्ति माल आदि के प्रमाण यहाँ दिए जाते है—

कोई जे पीवे प्रेम रस, जपे अजपा जाप।
पीवे जे सेवक प्रेमदास, जन सतदास परताप ।।

स्तुति श्री गुरु स्वामी सत प्रेम को नित प्रणाम ।।
तथाच सतदास स्वामी, नमो नमो प्रेम महाराज ।।

आरती मे सतदास जन प्रेम पठाया।
गुरु दरियाव शरण सुख पाया ।।

फिर भक्तमाल सतदास परताप से प्रेम शब्द निशि दिन भज्या''—पुनश्च—"स्वामी हू श्री सतदास के, शिष्य जु प्रेम हु दासजी ग्रो चित चाई

मदारामजी कृत कुण्डलियां का अंश

संतदास महाराज को बढ्यो पुनः परताप।
प्रेम शिष्य परचे भया जप्पा अजपा जाप ।।

"किमधिकम्-पिष्टपेपणेन'

अत. विद्वान महापुरुषो से यह आशा की जाती है कि वे असत्य अपवादो की ओर ध्यान न देकर वास्तविकता को समझने का कष्ट करेगे।

श्री प्रेमदास जी महाराज का वाणी साहित्य स्वल्प मात्रा मे उपलब्ध है पर वह गागर में सागर की भाति ज्ञान व वैराग्य के सदेशों व उपदेशो से परिपूर्ण है। महाराजजी के अनेक भजनानन्दी शिष्य हुए। (१) श्री दरियाव महाराज (२) श्री गिरधरदासजी (३) श्री गोविन्ददासजी महाराज (४) श्रीवगतरामजी (५) श्रीखेमदासजी (६) श्रीकृपारामजी (७) श्री द्वारिकादासजी।

(गुरु प्रणालिका)

उनमें वीतरागी, केवली भगवत व शब्द मार्गी सर्व प्रथम शिष्य जगद्वन्द्य, जगद्गुरु श्रीमदाद्य रामस्नेही संप्रदायाचार्य राम धाम रेण दरियाव नगर पीठाधीश्वर श्री दरियाव महाराज हुए)

राम स्नेही सम्प्रदाय के संदर्भ मे अनेक विद्वान लेखकों ने अपने अपने सम्प्रदाय से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थों का सृजन किया है इन ग्रन्थों मे प्राय: रेण, सिंहस्थल खेड़ापा, शाहपुरा आचार्य पीठों के आदि आचार्यो की चर्चा हैं। किन्तु जो लेखक जिस आचार्य पीठ से दीक्षित है उसने अपना पक्ष लेकर अपनी ही

आचार्य पीठ को वडा सिद्ध करने का प्रयास किया है। यत्र तत्र इस प्रकार के लेखको द्वारा लिखे गए साहित्य को पढ़ कर समाज मे सशय का उत्पन्न होना भी स्वाभाविक है किन्तु वस्तु-स्थिति क्या है ? विभिन्न सम्प्रदायो के आचार्य कौन है ? इस हेतु "श्री राम स्नेही मत दिग्दर्शन" नामक पुस्तक के लेखक ने सम्प्रदाय की ममता को त्याग कर युक्ति युक्त वाणियाँ लिखी है। इसके लेखक के लेखानुसार रामस्नेही धर्माचार्यों की गुरुदीक्षा प्रणालिका से वस्तुस्थिति का पता लग सकता है।

❀ पूज्य श्री दरियाव जी महाराज को गुरु दीक्षा काल सं० १७६९ कार्तिक शुक्ल ११। (आचार्य पीठ रेण)

❀ पूज्य श्री हरिरामदासजी महाराज का दीक्षा काल स० १८०० आषाढ कृष्णा १३। (आचार्य पीठ सिंहस्थल)

❀ पूज्य श्री रामचरणजी महाराज की गुरु दीक्षा स० १८०८ भाद्र पद शुक्ल ७ को हुई। (आचार्य पीठ शाहपुरा)

❀ पूज्य श्री रामदासजी महाराज की गुरु दीक्षा स० १८०९ बैशाख शुक्ल ११। (आचार्य पीठ खेडापा)

यद्यपि आचार्य चरण श्री जयमलदासजी महाराज ने सं० १७६० मे गुरु दीक्षा ली थी पर "श्री आचार्य चरितामृत" नामक पुस्तक के पृष्ठ १०८ के निर्देशानुसार दुलचासर के महत रामावत वैरागियो के महन्त कहलाते है जहाँ पूज्य श्री जयमलदासजी महाराज की गादो है।

रामस्नेही सम्प्रदाय के उद्गम का कारण

तेरहवी शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक मुसलमान शासन मे हिन्दू वर्ग निरन्तर दुखी रहा व

विनष्ट होता रहा। यवनो के दुष्कृत्यों व आक्रमणों से बचाव का एकमात्र उपाय रह गया था—धर्म परिवर्तन।

औरगजेब के शासनकाल मे यवनो के अत्याचार चरम सीमा पर पहुच गए थे। यह एक कठोर व क्रूर मुसलमान शासक था तथा अपने भाईयों की हत्या करके व अपने पिता शाहजहाँ को जेल मे बन्द करके ही शासक बना था। उसका एक मात्र लक्ष्य था हिन्दुओ को मुसलमान बनाना व हिन्दू ललनाओं के जबरदस्ती अपने हरम की ओर खीचकर उनका सतीत्व नष्ट करना।

ऐसी स्थिति मे अवध के राजपूत राजा व मथुरा के जाट राजाओं ने इसका डट कर मुकाबला किया। इसके सूबेदार को जो कि एक दिन मदिरा के नशे मे उन्मत्त था तथा मुर्शिद-कुलीन खान के नाम से कुख्यात था उसे १६३८ मे एक दिन जाट राजाओ ने मोत के घाट उतार दिया।

औरगजेब के शासन काल मे धार्मिक पक्षपात की नीति इस सघर्ष को उग्र से उग्रतर बनाने मे सहायक सिद्ध हुई। औरगजेब ने अब्दुलनबी खॉ के द्वारा मथुरा के सभी मन्दिरों को ध्वस्त करवाया और बहुमूल्य प्रतिमाओ को जहानआरा मस्जिद की सीढियों के नीचे डलवा दिया ❀

सिखों के गुरु तेगबहादुर का वध सन् १६७५ मे कर दिया गया था किन्तु उन्होंने मुसलमान बनना स्वीकार नही किया था। गुरु तेगबहादुर की इस निर्मम हत्या से हिन्दुओ की क्रोधाग्नि और भी अधिक प्रज्वलित हो गई।

❀ मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास पृष्ठ २०१

औरंगजेब ने वि. सं १७१५ से १७६४ तक यानी लगभग अर्द्ध शताब्दी तक राज्य किया। इस बीच राजस्थान व मथुरा के जाट राजाओं ने अवध के राजपूत राजाओ ने औरंगजेब के विरुद्ध जमकर सघर्ष किया पर असगठित शक्ति होने के कारण वे अधिक समय तक सफल नही हो सके।

अविराम युद्ध चलते रहने के कारण दक्षिण भारत बुरी तरह बर्बाद हो गया था। प्रतिवर्ष लगभग १ लाख लोग युद्धों मे मारे जाते थे। इन लडाइयो मे मरने वाले पशु जैसे वैल, ऊँट, हाथी आदि की सख्या तो ३ लाख से अधिक पहुँच जाती थी। इस प्रकार औरगजेव अर्द्ध शती का रक्त रजित व अराजकता-पूर्ण इतिहास अपने उत्तराधिकारियो को सौप कर अपनी असफलता पर पश्चाताप करता हुआ इस लोक से विदा हो गया।

इस समय राजस्थान की दशा और भी अधिक चिंतनीय थी। यहाँ के राजपूत अब भी पारस्परिक द्वेष की ज्वाला में जल रहे थे। शाहजहाँ के खूनो पजे समय समय पर इन्हे लोहू लुहान करते रहे थे, धन-जन की अपार क्षति होती रही, मन्दिरो के स्थान पर मस्जिदो का निर्माण होता रहा और मुसलमान बादशाहो के दरवारो मे रहकर चाटुकारिता करने वाले राजपूत अपना व अन्य राजपूतो का नैतिक वल तोड़ते रहे इनमे केवल विलासिता ही शेप रह गई थी। राजपूतो के वशज अपने समकालीन प्रतिपक्षी मुगल वादशाहों के समान ही सुरा और सुन्दरो के चरणो मे अपना सर्वस्व अर्पण करने मे पीछे नहीं रहे।* देश की यह एक अति दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था थी।

---

* मध्यकालीन भारत—पृष्ठ ४६६

सामाजिक परिस्थिति :—

उस समय की सामाजिक परिस्थिति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमे तद्-युगीन समाज को तीन भागो में विभक्त करके अध्ययन करना होगा। वह इस प्रकार हो सकता है।

- सामन्ती सामाजिक व्यवस्था
- मध्यम वर्गीय सामाजिक व्यवस्था
- कृषक या निम्न वर्गीय सामाजिक व्यवस्था

सामन्ती सामाजिक व्यवस्था—

मुगल परिवारो व राज्याश्रित अमीरो के परिवारों का जीवन वैभव व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होता था। वे अपनी शान-शौकत व विलासिता पर अपार धन व्यय करते थे। शहशाह शाहजहाँ के लिए हर वर्ष एक हजार वहुमूल्य वस्त्र वनवाए जाते थे जो वर्ष के अन्त मे अमीरो को भेंट कर दिए जाते थे। शाही वेगमो के पास इतनी अधिक धन राशि होती थी कि उसका अनुमान करना भी कठिन है।

शाहजहाँ के पास ५ करोड निजी रत्न थे। वह इन रत्नों से विभूपित होकर राजसिंहासन पर वैठा करता था। सिंहासन तक जाने के लिए रत्न जडित तीन सीढ़ियाँ रहती थी। इनके चारो ओर ग्यारह चौखटे होती थी इनके वीच मे केन्द्रीय रत्न के रूप एक वहुमूल्य रत्न जडा गया था। उसके सरदारो व अमीरों का जीवन भी वहुत वैभवपूर्ण था। उन्हे वडी वडी तन्खवाहे मिलती थी। ये लोग निरन्तर व्यभिचार, मदिरापान

व जुआखोरी में डूबे रहते थे ।* इस विलासी सामन्ती संस्कृति का कुप्रभाव जन-मानस को भ्रष्ट करता जा रहा था ।

मध्यवर्गीय सामाजिक व्यवस्था :—

इस दूसरी श्रेणी मे वे लोग आते थे जो अनेक प्रकार के व्यवसाय करते थे—कलाओ को जन्म देते थे, तथा हस्तशिल्प के द्वारा जीविकोपार्जन करते थे। इनमे व्यापारियो की दशा पर्याप्त अच्छी थी । निपुण कारीगर व हस्तशिल्पी भी अच्छी धनराशि कमा लेते थे । अत. उनका जीवन ठीक चलता रहता था ।

कृषक व निम्न वर्गीय सामाजिक व्यवस्था—

वह वर्ग वास्तव मे शोपित जन समूह ही था । इसकी सख्या सर्वाधिक थी । इनकी गाढ़ी कमाई के पैसों से दरबार की सजावट टिकी रहती थी । इनकी चित्रकला, सुगन्धित द्रव्यो आदि से शाही विदूषको, चापलूसों व मसखरो आदि का खर्च चलता था । इस निम्न वर्ग से अत्यधिक काम लिया जाता था । उनके श्रम व शक्ति का भरपूर शोपण होता था । इतना सब सहने के पश्चात् भी सरकारी अधिकारियो की धौस पट्टी भी इन्हे विवश होकर सहनी पड़ती थी । शासक वर्ग इन से शोषित किए गए धन का उपयोग सुरा-सुन्दरी 'व व्यभिचार आदि मे करता था तथा इनको बहू बेटियो को खरीद कर मुसलमान बना लिया करता था । इस वर्ग की फरियाद सुनने वाला कोई न था ।

---

* मध्यकालीन भारत—पृष्ठ ५७१

धार्मिक स्थिति :—

इस काल मे राज्याश्रित धर्म पूरी तरह भ्रष्टाचारण का पर्यायवाची वन गया था। प्रथम कोटि के धार्मिक लोग जिनमें शाही फकीर भी होते थे वे दुराचरण व कुकृत्यों मे लिप्त रहते उनके चरित्र पराकाष्ठा की निचाई को स्पर्श करने लगे थे। ज्ञान व भक्ति के वृक्ष को जडों मे कीडे लग गए थे। किन्तु शासन का सम्वल पाकर तलवार के वल पर ये धर्म न केवल टिके थे अपितु अन्य धर्मावलम्वियो पर जुल्म ढाने मे व्यस्त रहते थे। इस प्रकार से किए जाने वाले धर्मपरिवर्तनो व अत्याचारो के कारण एक प्रकार का अनदेखा उग्र विरोध अन्दर ही अन्दर पनप रहा था।

समाज मे धार्मिक धरातल पर दूसरी कोटि के वे लोग आते थे जो घोर अन्धविश्वासो पर टिके थे। जन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना आदि के द्वारा ये अन्धविश्वासो की जडो को गहरा कर रहे थे। स्वय भी ये पथ-भ्रष्ट थे तथा समाज को भी ये लोग पथ भ्रष्ट करते रहते थे।

धार्मिक दृष्टि से तीसरा वर्ग उन लोगो का था जो समानतावादी थे। ये मनुष्यमात्र को एक ही पिता की सन्तान मानते थे। इस वर्ग के लिए हिन्दू, मुसलमान, ऊँच-नीच, छोटा या वडा का कोई भेद न था—ये लोग कवीर, दादू, नानक आदि के वताए मार्ग पर चलते हुए पथ-भ्रष्ट समाज को सत्-पथ पर लाने का प्रयास करते रहते थे।

मुसलमानो मे भी एक उदार धार्मिक विचारधारा प्रवाहित थी। इसको आज भी हम सूफीमत के नाम से पुकारते है। यह सूफीमत हिन्दू-दर्शन से प्रभावित था तथा निर्गुण भक्ति

धारा का अंग बन कर प्रेम जल मे स्नान करा रहा था। सूफियो द्वारा की गई समाज सेवा अभिनन्दनीय ही कही जाएगी किन्तु यह विचार-धारा अपेक्षित सेवा नही कर पाई क्योकि इसके आस पास भी सकुचित चितन का घेरा था।

मुगल बादशाहों की धार्मिक नीतियाँ

मुगल साम्राज्य के सस्थापक बाबर की नीति हिन्दू धर्म के प्रति अनुदार थी। उसने चदेरी के मदिरों को ध्वस्त करवाया था। इसी बाबर की आज्ञा से मीरबाकी ने हिन्दू आस्था की प्रथम स्थली अयोध्या मे राम जन्म-भूमि पर स्थापित विशाल मन्दिर को तुडवा कर १५२८-२९ मे एक बडी मस्जिद बनवा दी थी जो आज भी सघर्ष का कारण बनी हुई है तथा उस पर रात-दिन पुलिस का पहरा रहता है। बाबर के शासन काल मे अनेक हिन्दू व जैन मन्दिर गिराए गए।

बाबर के एक मात्र पुत्र हुमायूँ ने भी अपने पिता का अनुसरण किया। इसको परास्त कर जब अफगन सरदार शेरशाह सूरी दिल्ली के तख्त पर बैठा तो उसने जोधपुर के प्रधान मन्दिर को तुडवा कर मजिस्द बनवा दी थी।❀

हुमायूँ के पुत्र अकबर ने कुटिल राजनीति चला कर हिन्दू, राजाओ की पुत्रियो से विवाह किए। यद्यपि अकबर की धार्मिक नीति अब तक के बादशाहो की अपेक्षा उदार थी और उसने हिन्दुओ के त्यौहारो को मनाना तथा गायो का वध बन्द करवा दिया था तथापि परोक्ष रूप मे हिन्दू-धर्मान्तरण को प्रक्रिया चलती रहती थी।

❀ मुगलकालीन भारत—पृष्ठ ५८३

अकबर के पश्चात् उसकी उदारनीति का अन्त हो गया था। उसके पुत्र जहाँगीर व जहाँगीर के पुत्र शाहजहाँ अकबर की उदारनीतियो पर नही चल सके। जहाँगीर की अपेक्षा शाहजहाँ अधिक अनुदार था तथा उसने हिन्दू-धर्म पर अनेक आघात पहुँचाए थे।

शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब ने हिन्दुओं के साथ जो अत्याचार किए उनकी गाथाएँ हृदय विदारक है। इसने तो हिन्दुओ के मन्दिरो को तुडवाने, उन्हे मुसलमान बनाने उनके धर्मग्रन्थो को जलवाकर नष्ट कर देने और हिन्दू धर्म ग्रन्थो के पठन पाठन को प्रतिबन्धित करने के लिए एक अलग महकमा ही खोल दिया था। संवत् १७२६ मे उसने हजारो मन्दिरो की मूर्तियो को तुडवाया तथा हिन्दुओ पर चार गुना अधिक कर लगाया। इस कर को जजिया कर कहते थे।

इस जजियाकर को रोकने के लिए हिन्दुओ ने औरंगजेब से अनेक प्रार्थनाएँ की किन्तु इसने एक भी प्रार्थना नही सुनी। एक बार जब कुछ हिन्दू अपना जजिया कर हटवाने की प्रार्थना को स्वीकार करवाने हेतु दिल्ली की जामा मस्जिद के सामने इकट्ठे हुए तो क्रूर औरंगजेब ने इन निरपराध हिन्दुओ को हाथियो के द्वारा कुचलवा दिया।

हिन्दुओ को इस प्रकार निर्ममता पूर्वक मरवाए जाने की घटना से क्षुब्ध होकर मेवाड के राणा राजसिंह ने संतुलित मन से औरंगजेब को एक विवेक पूर्ण पत्र लिखा। इस पत्र मे ईश्वर और अल्लाह; मन्दिर तथा मस्जिद को एक बताते हुए जजिया कर हटाने का निवेदन किया।

राजा राजसिंह का पत्र पढ कर बजाए प्रसन्न होने के क्रूर औरंगजेब और अधिक कुपित हो गया और सं० १७३७ मे एक

विशाल सेना भेज कर चित्तौड़, मांडलगढ, उदयपुर व अन्य वहुत से स्थानो को ध्वस्त करवा दिया। इन स्थानो के मन्दिरों को धराशायी कर मूर्तियो को तुडवा दिया गया। इस प्रकार राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से अठारहवीं शताब्दी भारतीय इतिहास के घोर पतन की अवस्था थी।

इस स्थिति से त्राण खोज पाने के लिए भारत के कुछ विचारवान सन्तो ने एकान्त जगल मे शरण ली। दूसरे कुछ सन्तों ने डट कर मुकाबला भी किया। उन्होने चारो ओर सैनिक सगठन वनाने शुरु कर दिए थे। वैरागियो के लिए सैनिक शिक्षा आरम्भ की गई थी। दूसरी ओर नित्य खडित होते मन्दिरो व मूर्तियो को देखकर सगुण अवतारो के प्रति जो उदासीनता की भावना प्रवेश करती जा रही थी उस निराशा से वचाने के लिए जन मानस को निर्गुण उपासना की ओर जाने की प्रेरणा प्रदान की।

रामस्नेही सम्प्रदाय का प्रवर्तन पूर्वोक्त इन्ही विषम परि-स्थितियो मे हुआ था। इस विचारधारा ने भारतीय जन-मानस को न केवल शान्ति व सांत्वना प्रदान की अपितु सकटों के सागर से पार उतारने हेतु एक जलयान का ही काम किया। यह सम्प्रदाय आज भी यही कार्य कर रहा है। श्री रामानन्द, कबीर, नानक, तुलसी समर्थ गुरु रामदास, सन्त तुकाराम, दादू आदि अनेक महापुरुषो ने, भारत के विभिन्न भागो मे समय समय पर अवतीर्ण होकर अपने अद्‌भुत प्रभाव से इस धार्मिक जगत मे एक अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर जनता को एक परम कल्याणकारी मार्ग दिखाया था तथापि भारत का यह मरुस्थली भू भाग दीर्घावधि से किसी यशस्वी व तेजस्वी

धार्मिक नेतृत्व के अभाव मे भक्ति व ज्ञान के प्रचार प्रसार की दृष्टि से वंचित बना हुआ था।

सोलहवी व सत्रहवी शताब्दी मे भारत के विभिन्न भागों मे अनेक सन्त महात्मा व महापुरुष अवतरित हुए। इसी काल मे वि० स० १७३३ मे आचार्य श्री दरियाव महाराज का प्रादुर्भाव हुआ। दरियाव महाराज का अवतरण इस मरुस्थलीय जनता के लिए वरदान बन गया। इस उपेक्षित भू भाग के लिए यह ईश्वर की कृपा व शेष भारत के लिए परम सौभाग्य का द्योतक सिद्ध हुआ।

दरिया से प्राप्त पन्द्रहवाँ रत्न

उस समय के राजपूताना तथा आज के राजस्थान प्रान्त के जैतारण ग्राम मे अनेक कुलीन हिन्दू खत्री वैश्य निवास करते थे। इन्हे भी मुसलमान बनाने के षड़यन्त्र चलते थे, अनेक विधि अत्याचार होते थे, किन्तु ऐसे ही तूफानी आक्रमणों से सत्रस्त काल मे एक ईश्वर भक्त हिन्दू खत्री मनसाराम व गीगा बाई के यहाँ दरिया से प्राप्त पन्द्रहवे रत्न ने जन्म लिया।

घटना क्रम के अनुसार धर्मनिष्ठ श्री मनसाराम व श्रीमती गीगाबाई मारवाड छोडकर पश्चिम मे द्वारिका की ओर प्रस्थान करने के लिए विवश हो गए थे क्योकि सारे देश मे हिन्दू-धर्म द्रोह व हिन्दुओ पर अत्याचारो का बोल बाला था। मनसारामजी के अनेक परिजन इस उथल पुथल मे तितर-बितर हो गए थे अथवा स्वधर्म हेतु बलिवेदी पर चढ चुके थे। कही भी सुरक्षित स्थान न पाकर मनसाराम व गीगाबाई द्वारिका चले गए थे।

द्वारिका पहुँच कर मनसाराम व गीगा बाई अनन्यभाव से भगवद्भजन मे लीन हो गए। उन्होने धर्म भाव के लिए रोम रोम से एक पुत्र-रत्न प्राप्त करने की कामना की। उनकी आकाँक्षा थी कि भगवान उन्हे ऐसी सन्तान दे जो इस डूबते हुए हिन्दू धर्म व उसकी सस्कृति का रक्षक बन सके।

कुछ महीनों तक इस खत्री दम्पति ने ध्यान साधना आदि की। किन्तु जब उन्हें लगा कि भगवान के दरबार मे उनकी प्रार्थना नहीं सुनी जा रही है तब पूरी तरह निराश होकर जल-समाधि लेने के लिए तत्पर हो गए। पर भगवान तो शायद उनके मानस की ऐसी ही स्थिति की प्रतीक्षा कर रहे थे ' जल समाधि लेने से पूर्व उन्हें आकाश वाणी (देववाणी) सुनाई दी—उन्होने शान्तिः शान्ति. शान्ति की ध्वनि सुनी।

चकित दम्पत्ति चारों ओर निहारने लगे। उन्हे समुन्द्र की लहरों पर कमला पुष्प के ऊपर आकाश-विद्युत सी आभायुक्त एक बालमूर्ति दृष्टि गोचर हुई। पति-पत्नी विस्मित व बिह्वल होकर उस बालस्वरूप की ओर दौड़ पडे तथा उसे उठाकर हृदय से लगा लिया।

बाल्य-प्रेम में विभोर गीगा बाई तो अपनी सुध बुध ही खो बैठी। उनके ममत्वभरे स्तनो से दुग्ध धारा प्रवाहित हो उठी। देश की तत्कालीन दशा को पति पत्नी थोड़ी देर के लिए भूल ही गए।

किन्तु थोडी देर बाद ही जैसे ही वे अपनी भौतिक जागतीय चेतना मे लौटे उनके सामने देश मे व्याप्त तत्कालीन अत्याचार-पूर्ण परिस्थितियो ने घेर लिया वे सोचने लगे कि ईश्वर की कृपा से हमे बालक तो प्राप्त हो गया है किन्तु इसे

कहाँ और कैसे सुरक्षित रक्खा जाय ? इसको पालने पोपने के लिए मारवाड़ जाना तो जरूरी है किन्तु वहाँ तो अत्याचार जारी हैं।

वे पुनः अपनी विवशताओं के घेरे मे लौट आए। उन्हें प्रतीत होने लगा कि ऐसी परिस्थितियो मे जल समाधि लेना ही कल्याणकारी है। कुछ क्षणो के लिए वालक के प्रति उमड आया वात्य-स्नेह भाव विरोहित हो गया। वे तत्काल जल समाधि के लिए समुद्र की गहराइयों मे प्रवेश करने लगे किन्तु तभी पुन' उन्हे देव वाणी सुनाई दी।

"तुम स्वदेश को लौट जाओ। यह ईश्वरीय प्रसाद तुम्हारे लिए मगलदायी होगा। ससार मे इस वालक के द्वारा तुम्हारी कीर्ति फैलेगी। इस वालक के द्वारा विश्वकल्याणकारी कार्य होगे।"

इस दिव्य वरदान को साथ लेकर मनसारामजी व गीगा वाई स्वदेश (जैतारण) लौट आए।

स्वयं प्रभ-रत्न (दरियाव) का प्रकाश-विकास

विक्रम सम्वत् १७३३ भाद्रपद कृष्णा जन्माष्टमी के दिन भगवद् कृपा से मनसाराम व गीगा वाई खत्री❀ को दरियाव (समुद्र) से यह अमूल्य निधि प्राप्त हुई। दरियाव से प्राप्त

❀ खत्री कुल मे प्रकटे—तारेजीव अनन्त फूलचंद को विनती, सतगुरु दरिया संत

होने के कारण आचार्य श्री को दरियाव नाम से पुकारा जाने लगा ।

पौराणिक गाथाओं से पता चलता है कि महापुरुषो का जन्म प्राय. रहस्य मय व दिव्य ढग से होता है। उदाहरण स्वरूप महर्षि अगस्त घट से उत्पन्न हुए—जगद्जननी भगवती सीता पृथ्वी से व स्वय भगवान राम यज्ञ चरु की खीर से जन्मे थे। यहा वैद्य धनवन्तरि, लक्ष्मीजी व रम्भा आदि चौदह रत्न समुद्र से उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार महाप्रभु दरियावजी महाराज समुद्र से उत्पन्न हुए थे। असाधारण परिस्थितियो में ही असाधारण महामानव जन्म लेते है इसलिए इस विषय मे शंका स्थान नही पाती। एक बात यह भी सत्य है कि भक्त और भगवान सदा अजन्मा ही होते है—भले ही इनका अवतरण किन्ही परिस्थितियो मे कैसे ही हो।

दरियाव महाराज के बाल्यकाल को एक घटना है। एक दिन उनकी माता गीगाबाई बालक दरियाव को पालने पर सुलाकर जल भरने के लिए तालाव पर गई हुई थी। उनके जाने के कुछ देर बाद बालक के मुँह पर कुछ धूप आ गई। थोडी देर मे बालक के शरीर पर भी धूप आ गई। राजस्थान की धूप कितनी तीखी व असह्य होती है और यह धूप कही बालक को नीद से न जगा दे। अतः बालक की काया व मुँह को धूप की चिलचिलाहट से बचाने के लिए ईश्वरीय प्रेरणा-वश एक नाग देवता कही से उतर आए* और अपना फन फैलाकर बालक के ऊपर छाया करने लगे। जब गीगा बाई

---

*एक दिन पालणे पौढाए, नागेन्द्र दर्शन कूँ आए—

जल भरकर वापस आई तो वालक के ऊपर छाया किए नाग को देखकर हतप्रभ हो गई। वाद में उन्होने यह घटना पडित को सुनाई तथा इस वालक का भविप्य जानने की इच्छा प्रकट की।

पडित देख पुराण को, कह्यो सकल सगभाय
राजा, परजा, वादशा नीवे पैगम्बर आय
धरेगा चरणो मे माथा :—लावणी—

(श्री जयरामदास कृत)

ज्योतिपी पडित ने अपने ज्योतिप-ज्ञान के आधार पर वालक को अद्भुद् महापुरुप वताया और भविष्य वाणी करते हुए कहा कि "यह वालक दुखी-सतप्त व मार्ग भ्रष्ट जनता को सन्मार्ग दिखाएगा। उसके कष्ट निवारण करेगा।" ज्योतिपी की भविष्य वाणी सत्य सिद्ध हुई। कुछ दिनो मे कुछ वडे होकर आचार्य श्री जैतारण की जनता को अपनी वाल्य सुलभ चमत्कार पूर्ण लीलाओ से आनन्दविभोर करने लगे। उन दिनों श्री मनसारामजी रुई का धन्धा करते थे।

विधाता के विधान को कौन वदल सकता है ? स. १७४० मे ही जव दरियाव महाराज की आयु मात्र ७ वप की ही थी तभी मनसारामजी परमधाम को पधार गए। माता गीगा वाई ने पुत्र का आश्रय लेकर सभी सासारिक कृत्य पूरे किए।

वि० स० १७४१ मे गीगावाई अपने पीहर रेण मे अपने पिता श्री किशनजी के यहाँ पधारी। रेण मेडता सिटी से १५ कि० मी० दूर उत्तर की ओर है। इसके पश्चात गीगा वाई रेण मे ही अपने पिता श्री किशनजी के पास रहने लगी।

किशन जी को मुसलमानो ने वल पूर्वक मुसलमान वना कर उनका नाम 'कमीश' रखा हुआ था। किशनजी के कुछ

अन्य परिजन भी बलपूर्वक मुसलमान बना लिए गए थे। ये सभी लोग गीगा बाई को पुत्र-रत्न प्राप्त होने का वृतांत जानकर बहुत प्रसन्न हुए।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि सत्रहवी शताब्दी हिन्दुओ के लिए अनेक सकट देने वाली थी अत. यवनो के आक्रमणो व आतक से रेण भी अछूता नही रहा। गीगा बाई के पिता श्री किशन जी परिवार को भी यवनो को परिधि मे आना पडा था। वे अपने घर मे रूई सुंवारने का काम करते रहे।

आचार्य श्री दरियाव महाराज की अलौकिक शक्तियां रेण वासियो को दृष्टि गोचर होने लगी थी। कबीर व नानक की भाँति इनके अलौकिक चमत्कारो से जनता प्रभावित होने लगी थी।

एक समय महाराज श्री अपने समवयस्क बालको के साथ खेल रहे थे। उसी समय काशी के दो पण्डित रेण से होकर गुजरे। इन पण्डितो के नाम श्री स्वरूपानन्दजी व श्री शिवप्रसाद थे। ये लोग जोधपुर नरेश से मिलने के लिए जा रहे थे। इनकी दृष्टि अन्य बालको के मध्य खेलते हुए बालक दरियाव पर पडी। वे बालक के तेज से प्रभावित हुए। जैसे भगवान शिव राम के बाल रूप को देख कर चकित हो गए थे वही स्थिति इन पण्डितों की हुई। भगवान शिव के इस आकर्पण को सत तुलसी के शब्दो मे .—

सहज विराग रूप मन मोरा
थकित होत जिमि चद चकोरा

व्यक्त किया है।

]

ण्डित जन माता गीगा बाई के पास गए तथा उनका
कर अपना जन्म सफल माना। पण्डितो ने माता गीगाबाई
अभूतपूर्व बालक को अपने साथ ले जाकर शिक्षित करने
ाज्ञा चाही जो उन्हे सहज ही प्राप्त हो गई। इस प्रकार
के पण्डितों ने दरियाव महराज को लोक-शिक्षा प्रदान
पना जीवन धन्य माना।*

गुरु गृह पढन गए रघुराई

अलप काला विद्या सब पाई के सिद्धान्त को चरितार्थ
हुए, महाराज श्री दरियाव ने थोड़े ही समय मे, काशी
कर व्याकरण, वेद, गीता, उपनिषद एवं सभी दर्शन
का अध्ययन किया व सकुशल रेण लौट आए।

क दिन आचार्य श्री नित्य नियम के अनुसार श्रीमद्-
त व उपनिषदो का पाठ कर रहे थे "रहुगणे. तत्तपसा."
कि तभी उनकी दृष्टि गुरु महिमा विषय पर अटक कर
। उन्हे उसी समय सद्गुरु बनाने की प्रेरणा प्राप्त हुई।
कि नियम है—अन्तर्यामी भगवान सत्य-सकल्प को
पूरा करते है—वह पूरा हुआ।

हाराज श्री की स्थिति गुरु के वियोग मे विरहणी जैसी
ी थी। वे घटो बैठकर सत्गुरु का चिंतन करते थे। वे

---

*जोधाणे मग जाँवता, रायण किएमुकाम
वालक देख विचित्र मग, पूछे इनके नाम
—जीवनी

भागवत, सस्कृत गीता-वेद धुन निस वासर करता
हिन्दी, पारसी, न्यारी विद्या पढ हिरदा मे धारी

सोचते रहते थे कि कब भगवत् प्राप्त पुरुष श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष मिलेगे ?

जब भक्त की शुद्ध-आकांक्षा चरम सीमा पर पहुँच जाती है तब तो भगवान से भी नही रहा जाता । महाराज श्री की उत्कट गुरु प्राप्त करने की इच्छा के आगे भगवान को साकार रूप धारण करके आना पड़ा और उन्हे मार्ग दर्शन देना पडा ।

अत: भगवान का सकल्प सुनकर प्रेमदासजी महाराज वि० स० १७६६ मे भिक्षाटन करते हुए महाराज श्री के निवास स्थान पर पधारे ।ॐ उन्होने दरियाव महाराज के द्वार पर आकर बडे घोष के साथ 'राम' कहा । राम की रहस्यमयी ध्वनि दरियाव महाराज के श्रवणों से होती हुई अन्दर तक प्रविष्ट हो गई । शीघ्र ही दरियाव महाप्रभु घर से निकल कर प्रेमदासजी महाराज के चरणो गिर गए और आत्म निवेदन किया । सन्तो का तो यह स्वभाव ही होता है कि वे जिज्ञासु व प्रणव जनो को अपनाते है । वि० स० १७६६ कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन प्रेमदासजी महाराज ने दरियाव महाराज को 'राम' नाम का तारक मन्त्र प्रदान कर शिष्यत्व प्रदान किया ।*

ॐगगन गिरा वाणी भई, बोल्या श्री भगवान
प्रेम पुरुष मिलसी अब तोकूँ, कह्यो हमारोमान

* काती सुदी एकादशी, आज्ञा सीस चढाय
होय निरदावे सिवरण, कीज्यो दीनो भेद वताय

—लावणी

दरिया सतगुरु भेटिया, जा दिन जन्म सनाथ
श्रवण शब्द सुनाय के, मस्तक दीना हाथ

श्री प्रेमदास महाराज ने शक्ति पात किया और सुयोग्य-पात्र-शिष्य को आशीर्वाद देते हुए बोले ।

सतगुरु दीन दयाल के, चरण नवायो सीस
प्रेमदास प्रसन्न भए, सुण रामस्नेही ईश

सत्-गुरु प्रसाद से आचार्य श्री दरियाव महाप्रभु के श्रीमुख से सहज ही अनुभव जन्य वेद वाक्य निकलने लगे । स्वत ही प्रेम रूपी दरिया मे हिलोरे उठने लगी ।

भेरव तुम्हारा चालसी, सुन रामस्नेही वात
रामस्नेही धर्म के, होगे तुम सिरताज
अनत जीवो को तारसी, यह मेरा आशीर्वाद
राम स्नेही धर्म से, सुधरे सवका काज
राम स्नेही मुझको किया, प्रेम पुरुष महाराज
दरिया रग रग मे धुन राम की अखे मुन्न मे राज

प्रथमत· आचार्य श्री ने रेण ग्राम स्थित राम सभा को तप स्थली वनाकर ध्यान किया पुन लाखोलाव सागर के तट पर रामद्वान नाम के जो देवल हे वहा विराज कर ध्यान किया । तीसरा स्थल जहाँ श्री महाराज ने भजन किया वह लाखा सागर का वरगु (दीक्षा) है जो लाखोलाव सागर के उत्तर मे है । इसी स्थान पर आज तक एक तपो स्मारक (चवूतरा) वना हुआ है । रामस्नेही भक्त वहाँ जाकर उस तपोधूलि को व्रजरेणुकावत् मस्तक पर लगा कर प्रसाद लेते हैं । आचार्य महाप्रभु की प्रेरणा से आज सन्त उस चवूतरे के स्थान पर छतरी वनवाने का विचार कर रहे है ।

कहा जाता है कि इस महारम्य जंगल मे श्री लक्ष्मीजी, ब्रह्मा, शिव सनकादि व नारद मुनि जैसे देवता देवलोक से आकर महाप्रभु से मिलते थे। गुरु गोरखनाथ, भर्तृहरि, गोपीचन्द आदि विभूति पुरुष आपकी भक्ति से प्रभावित होकर आपका यश गाते थे।❀ और भी ऐसे अनेक उदाहरण है किन्तु लेख के अत्यधिक विस्तृत न होने देने की दृष्टि अपनाते हुए—सकोच वश इसे यही रोकना पड रहा है। महाराज श्री की जन्म स्थल का प्रसग आगे दिया जाएगा।

सत्गुरु के उपदेशानुसार श्रीदरिया महाप्रभु अखड ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर सुरत शब्द योग से रामभजन करने लगे। इस प्रकार महाप्रभु कठ, हृदय, नाभि, मूलाधार, वक, मेरु, त्रिकुटी दशवा द्वार, शून्य व महाशून्य से परे जीवाभास को हटाकर केवल ज्ञान को प्राप्त हुए।*

तत्वनिष्ठ तथा धर्म रक्षक स्वभाव

आचार्य श्री का जन्म तो तत्वनिष्ठा को धारण करने तथा धर्म की रक्षा के लिए ही हुआ था अतः वही महान कार्य आचार्य श्री के द्वारा सम्पन्न होने लगे।

❀ मास मरुधर खडपुरी, जेतारण भारी
जन दरिया अवतार धार आया ब्रह्मचारी।

* श्रवण सुण रसना सु ध्याए, कठ होय हिरदा में आए
नाम मे रोम रोम जागी, शब्द धुन रोम रोम मे लागी
पेश पयाला उलट मेरु घर, चढया त्रिकुटी जाय
शुन्न शिखर बेहद पद माही, केवल ब्रह्म समाय
जहाँ कोई दिवस नही राता —(लावणी)

आचार्य श्री रामस्नेही धर्म के मूल धर्माचार्य (संस्थापक) हुए। आपके प्रादुर्भाव काल मे मुसलमानो का धर्म-परिवर्तन आंदोलन वहुत वेग से चल रहा था—आचार्य वर ने इस वेग को अपनी आध्यात्म शक्ति से रोका। वे घर घर मे जाकर राम नाम का प्रचार करने लगे; स्वधर्म रक्षक के रूप मे स्वधर्म पर टिके रहने का उपदेश देने लगे तथा डूवते हुए धर्म को वचाने के लिए सम्पूर्ण शक्ति से जुट गए। इससे यवन-धर्मावलम्वी अशान्त होने लगे तथा आचार्य श्री के मार्ग मे विघ्न उपस्थित करने लगे। किन्तु विभूति पुरुषो के पथ मे काटे विछाने वाले अधिक देर नही टिक पाते। आचार्य श्री के पथ मे भी यह विघ्न वाधाएँ उखडने लग गई।

श्री दरियाव महाराज हिन्दू-धर्मावलम्वियो से कहते कि मनुष्य कृत मन्दिर व उनमे स्थापित मूर्तियो को तो यवन तोड सकते है किन्तु घट घट वासी निर्गुण ब्रह्म-सत् शब्द का नाश किसी काल मे किसी के द्वारा नही किया जा सकता। वह तो शाश्वत है–सर्वव्यापी है। यद्यपि महाराज श्री निर्गुण ब्रह्म का प्रचार प्रसार करते थे किन्तु हिन्दुओ की सगुण भावना को ठेस न पहुचाते हुए उसके सरक्षण मे भी लगे रहते थे। वे हिन्दू मुसलमानो के समन्वित मानवधर्म का भी पाठ पढाया करते थे ताकि मानवीय सवेदनाए सुख शान्तिवर्द्धक वनी रह सके।

दरियाव महाराज राष्ट्र हित व जन-कल्याण के लिए सदैव

उद्यत रहते थे। उन्होंने मारवाड़ के राजा* वखतसिंह, विजय-सिह राठौड (जोधपुर) जैसे अनेक लोगों ने आपसे धर्म का उपदेश पाकर उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया था। आचार्य श्री के सदुपदेशो से सभी वर्णो व वर्गो के लोग प्रभावित हुए व स्व-पर कल्याण मे रत हुए। आपने अपने मामा-पुत्रो श्री फतहराज कुशालीराम व हसाराम को मुसलमानो के पजे से छुड़ा कर राम-भक्ति मे लगाया था।

दिल्ली के बादशाह ने अपने दीवान मदली खान पठान को आचार्य श्री की हत्या करने के लिए भेजा था किन्तु महाप्रभु पर उसको जैसे ही दृष्टि पडी वह उनके चरणो मे गिर गया और उनका शिष्यत्व* स्वीकार कर लिया। गुरुदेव की हत्या करने के स्थान पर उसने अपनी हिसा वृत्ति को ही मार

---

* वखतसिह नरेश देश मुरधर को राजा
जन दरिया के चरण शरण जब सरिया काजा
—जन्म लीला, पद्मदास कृत

गुरु दरिया दूर वसत है, धीरज नहि लनलेस
—बखतसिह कृत पद

विजयपाल भुआल, भगतनोधा इदकारी
जन दरिया सू प्रीत रीत आरत उर धारी
—लावणी पद्मदास कृत

* पानीपत स्थान मे मदलीखान लड्यो सावत सूरो.......
रोम रोम नख चख पीड़घट भीतर भारी
हो जन दरियाव कृपा कर आप पधारो

डाला । अजमेर-मेड़ता※ के काजियो व मौलवियो द्वारा भेजे गए अत्यारी व कुचक्रो यवनो ने भी दरियाव महाराज के विरूद्ध षडयन्त्र रचे । उन्होने विष-युक्त मिष्ठान्न जब महाराज श्री के सामने लाकर रखे तभी आकाशवाणी द्वारा देवताओ ने उस मिष्ठान्न मे मिले हुए विष को घोषित कर दिया । ऐसे अनेक कुचक्र व अत्याचार महाराज श्री पर किए गए किन्तु सभी षडयन्त्र नाकाम रहे ।

इन अत्याचारो व कुचक्रो से महाप्रभु कभी विचलित नही हुए अपितु उन्होने राम विश्वास पर रह कर निष्ठा की नीव को और भी दृढ बना लिया । 'सियाराम मय सब जग जानी' की भावना ने उनके विरोधियो को भी उनका अनुयायी बना दिया । उनके जीवन के आस पास व्याप्त आध्यात्मिक चमत्कार कुचक्रियो को परास्त करते रहे ।*

दरियाव महाराज जाति पाँति के भेद भावो को मिटाकर※ समन्वय का उपदेश देते रहे । भव रोग से पीडित प्राणियो के लिए श्री प्रभु ने श्रेय मार्ग को ही रामबाण औषधि बतलाया । इसके प्रभाव से हिन्दू-जैन-यवन सभी आपके चरणो में आश्रय

※ मेडतो काजी एक आयो दरस तिन स्वामी को पायो
कपट को भोजन बनवायो, देव वाणी कर वरजायो
—लावणी आत्माराम कृत

* फिरी दुवाई शहर मे, चोर गए सब भाज
शत्रु फिर मित्रज भयां, हुआ राम का राज

※ हिन्दू तुरक निराली, गुरु काडी ज्ञान निराली
—श्रीसुखरामदासजी कृत (मेड़ता सिटी)

लेने लगे थे। सव एक स्वर मे गाने लगे थे 'आत्म राम सकल घट भीतर'।

शिष्य शाखा और सदुपदेश

आचार्य श्री दरियाव महाराज के यो तो हजारो शिष्य थे किन्तु इनमे ज्ञानी ध्यानी शिष्य ७२ ही थे। ६ शिष्याएँ भी प्रधान थी। आचार्य श्री प्राय: सभी शिष्य महान् व्यक्तित्व वाले, पराक्रमी, चमत्कारी तथा उन जैसी ही श्रद्धा व भक्ति से सम्पन्न थे। श्रीमधुचद, फतेहराज, उदेराम, किस्तूरा वाई आदि शिष्यो मे जैसो भावना थी उसी प्रकार का शव्द प्रकाश व ज्ञान प्रकाश उन्हे होता था। महाराज श्री अपने शिष्यो पर सदैव कडी दृष्टि रखते थे। तथा कडाई से नियमो का पालन कराया करते थे। वे सदैव उन्हे आदर्शो सत्य आचरण पर चलने के लिए प्रेरित करते रहते थे। उनके द्वारा वताए गए कुछ नियम इस प्रकार है—

अहिंसा, ब्रह्मचर्य, शुद्ध-आचरण, अक्रोध, दुष्ट सग त्याग, सर्व दुर्व्यसन त्याग, निर्गुण राम, आत्मानुसंधान, सुरत शव्द योग, गमनागमन, लोको से परे※ केवल ब्रह्म आदि। वे इनका

※ दरिया लक्षण साधका क्या, गृही क्या भेख
निष्कपटी निरपक्ष रहे, वाहर भीतर एक
नारी आवे प्रीत कर सत्गुरु परसे आन
दरिया हित उपदेश दे—माय वहन धी जान
जात हमारी ब्रह्म है माता पिता है राम
गृह हमारा सुन्न मे, अनहद मे विसराम
भाव मिले पर भाव से, परभाए परभाव
दरिया मिलकर मिल रहे तो आवागमन नसाय

उपदेश करते थे। इस प्रकार आचार्य श्री के इन उपदेशों से हजारो नर नारियो का कल्याण हुआ।

श्री दरियाव महाराज के अनेक शिष्यो मे से गुरु कृपा पात्र ८ शिष्य प्रधान माने जाते है। वे है श्री पूरणदासजी,* श्री किशनदासजी, श्रीसुखरामदासजी, श्रीनानगदासजी, श्रीहरखारामजी श्रीटेमदासजी, श्रीवृद्धभानजी, श्री उदयरामजी।

आचार्य श्री की वाणियो की सख्या लगभग १ लाख थी ऐसा पुराने सन्तो व गृहस्थ रामस्नेहियो से सुना गया है किन्तु आज जो महाराज श्री की वाणियो की संख्या अल्प सख्या मे उपलब्ध है उसके दो कारण है—आपके एक शिष्य ने

अनुभव झूठा थोथरा, निर्गुण सच्चा नाम
परम जोत परचे भई तो धूँआ से क्या काम

आचार्य श्री की एक वाणी उन्हे दिखाकर—ऐसा कह कर वाणी को लाखा सागर के अथाह सागर मे प्रवेश करा दिया। यह वही लाखा सागर है जो तपोभूमि रेण नगर के उत्तर भाग मे विद्यमान है। रामस्नेहियो के लिए यह सागर गगासागर से भी वढकर परम पवित्र, त्रितापहारी तीर्थ माना जाता है।

दूसरा कारण यह है कि आचार्य श्री का मामा पुत्र फतेहराम आचार्य श्री से द्वेप रखता था। एक वार वह महाराज श्री की अनुभव वाणी के पत्र को चुरा कर ले गया और उन्हे अनादर भाव से आम रास्ते में फेंक दिया। वाणा लिखे हुए

---

* पहल प्रथम दरिया सूँ मिलिया पूर्णदास
रसणा हिरदे नाम होए, उलट चढया आकाश
—जीवन लीला, पद्मदास कृत

वे पत्र महाराज श्री को उस समय पैरो से रौंदे जाते हुए प्राप्त हुए जब वे अपनी शिष्य मण्डली सहित राम सरोवर को स्नान करने जा रहे थे। इन पत्रो मे से एक मे लिखा था—

आत्मराम सकल घट भीतर' इन शब्दो को पढकर महाराज जी को बहुत दुख हुआ अत. ऐसा समझकर कि कलयुग मे वाणियों का सम्मान नहीं होगा उन्होने वाणी-पत्रो को जल मे बिसर्जित कर दिया। कहा जाता है कि महाराज श्री से द्वेप रखने के कारण फतेहराम प्रेत योनि को प्राप्त हुआ। बाद में उसने प्रेत योनि से मुक्ति के लिए महाराज श्री के सामने जाकर प्रार्थना की। महाराज श्री की दया दृष्टि पाकर वह दिव्य स्वरूप धारण कर परम धाम को प्राप्त हुआ।❀ महाराज श्री इसी प्रकार अपने जीवन काल मे भक्ति धारा के द्वारा भारत भूमि को पवित्र करते रहे।

महाराज श्री द्वारा दिव्य वाणी मे भरे हुए दिव्य लोकोपकारी सदेशो को लाखा सागर मे प्रवाहित किए जाने से सम्पूर्ण शिष्य समुदाय को अपार कष्ट हुआ। कर्म, भक्ति व ज्ञान योग से परिपूर्ण, जीवन दर्शन की अभूतपूर्व निधि के इस प्रकार समाप्त हो जाने से जो क्षति हुई वह कभी पूरी नही हो सकती। महाराज श्री के शिष्यो ने विलाप करते हुए कहा था कि—

हाय! जन कल्याण का साधन व हमारा मार्ग दर्शक हम

❀ फतहराम एक जानदास दरिया का भाई
अवगत अवज्ञा स्वरूप जूण जमरा की पाई
मेटो जम की जूण करो चरणो की सेवा……

भाग्यहीनो से छीन कर त्याग कर दिया गया किन्तु आचार्य श्री ने सबको धैर्य बधाया व केवल राम नाम साधन व भजन पर जोर दिया ।*

ससार मे सयोग वियोग का चक्र तो अनादिकाल से चला आ रहा है । प्रकृति के नियम सबके लिए एक से हे । शरीर सबका नाशवान है परन्तु महापुरुपो की पुनीत वाणी जन कल्याणार्थ अजर अमर होती है । वाणी ही महापुरुपो की अमर श्री विग्रह है । जैसे श्रीमद्भागवत और गीता स्वय कृष्ण सशरीर ही है ।

महान् विभूतियो का अवतरण जिस उद्देश्य से धराधाम पर होता है उसकी पूर्ति होने पर वे ऐहिलौकिक लीला सवरण कर लेते है । ऐसे ही महापुरुपो की श्रेणी मे श्री दरियाव महाराज अग्रगण्य है । आचार्य श्री की सभी शिष्य मण्डली उनकी सेवा मे उपस्थित थी । उनके अन्तिम सारगर्भित प्रवचन उनके महाप्रयाण की सूचना दे रहे थे ।*

महाराज श्री को चौथे पद मे वास करते देख ऐसा कौन सा शिष्य होगा जो उदास न हुआ हो—जिसे अतर्वेदना न हुई हो सभी शिष्य कर वद्ध खडे होकर दरिया महाप्रभु के अन्तिम सन्देश को उनके सुयोग्य शिष्य श्री नानकदास के शब्दो मे सुन रहे थे ।

---

* सकल ग्रन्थ का अर्थ हे सकल वात की वात
दरिया सुमरन राम का, कर लीजै दिन रात

* पच तत्व गुण तीन से, आतम भया उदास
सरगुण निर्गुण से मिल्या चौथा पद मे "वास"

राम नाम सुमिरण दिया, दिया भक्ति हरि भाव
आठ पहर विसरो मती, यो कहै गुरु दरियाव

शिष्य श्री गुरुदेव की हार्दिक भावना को पहचान गए थे।

वि० स० १८१५ मार्गशीर्ष की पूर्णिमा की सवा पहर रात बीतने पर महाराज श्री ध्यान मुद्रा मे स्थित हो गए। एक वार तो शिष्य समुदाय के करुण क्रदन से आकाश भर गया किन्तु दूसरे ही क्षण आचार्य श्री के उपदेश से सात्वना पाकर नाम जप करने लगे। आचार्य श्री ने इस परम-पावन वसुन्धरा पर ८२ वर्ष तीन मास व इक्कीस दिन, राम नाम भक्ति का महा-कल्प वृक्ष लगाकर बाइसवे दिन सवा पहर रजनी बीतने पर ध्यान मुद्रा मे स्थित होकर इस भौतिक शरीर का त्याग कर दिया और कैवल्य धाम प्राप्त किया महाराज श्री के जीवन की घटनाएँ एक से एक बढकर व लोकोपकारी है। भक्तो और महात्माओ का अवतार तो जन कल्याण के लिए ही होता है। जिन महापुरुपो ने मानव धर्म की सूखी जड़ो को हरा किया उनमे आचार्य श्री का विशेष स्थान है। मारवाड़ देश मे धर्म सकट के समय विचलित हिन्दु समाज को धीरज वन्धा कर तथा लाखो हिन्दुओ को विधर्मियो के पंजो से छुडाकर स्वधर्म मे स्थिर करने का महान कार्य महाप्रभु दरियाव महाराज के द्वारा सम्पन्न हुआ। वे जीवन पर्यन्त भगवद् भक्ति का प्रचार करते रहे और रामस्नेही धर्म के मूलाचार्य बन कर डूबते हुए स्वधर्म रूपी जहाज के केवट बन गए।

आचार्य श्री के जीवन चरित्र को लिखने के लिए उनके शिष्यो को जितनी वाणियाँ कठस्थ रही उन्ही के आधार पर सामग्री सकलित कर उन्होने जन कल्याण के लिए लिपि बद्ध कर लिया। इनकी सख्या साखी शब्दो में अनुष्टुप श्लोक

परिमाण से लगभग ७०० है। जिस प्रकार वेद उपनिषद, पुराण-दर्शन आदि शास्त्रो का सार श्रीमद्-भगवत गीता मे है उसी प्रकार शास्त्रीय एवं अनुभव वाणी सार सग्रह आचार्य श्री के शब्द श्री (अनुभव गीता) के नाम से सन्त साहित्य जगत मे प्रसिद्ध है।

आचार्य श्री का समाधि स्थान पूर्वोक्त लाखा सागर के तट पर संगमरमर पत्थर का बना हुआ है जो दूर से चाँदी जैसा चमचमाता हुआ अपने दिव्य तपो तेज से जन-मानस पर जमी हुई कालिमा को नष्ट कर उसमे एक आध्यात्मिक चिरतन-चिंतन सत्ता को आलोकित करता है। उसका प्रकाश आज भी त्रय-ताप पीडित प्राणियो को शाश्वत शान्ति प्रदान करता है। यही राम धाम-रामस्नेहियों का मूल गुरु द्वारा आचार्य पीठ कहलाता है।❀

❀ विनती दरियाव स्वामी मारी सुन लीजिए
शरण आवे जीव जाने मोक्ष दान दीजिए
रायण पुरी माही हवेली जुकाई है।
रग का चित्रावण हुआ सोभा वरणी न जाई है
सोहन कलश ऊपर झिल मिल सोवे है
संतन को मन मानो देखत ही मोवे है।
कचन झडावत मोती झरोकरन झाकी है।
हीरा-पन्ना मोती लाल वार वार ताकी है।
आंगडियो सुरंग रग लाल झाई देत है
मखमल की चादर मानो देखत ही मोवे है।

—आगे पृष्ठ ३५ पर पढ़ें

आचार्य महाप्रभु के पश्चात जो भी आचार्य हुए वे सभी बडे वीतरागी, भजनानन्दी; निष्ठावान, विद्वान व कार्य ,कुशल, महापुरुष हुए। आचार्य श्री के प्रमुख शिष्यो के अति आग्रह से

—शेष पृष्ठ ३४ का

चोबीस औतार जहाँ रंग का बनाया है।
गुरुदेव का दर्शन मानो देह धार आया है।
चौबीसी थीथगर जहा मुनि धार बैठा है।
ज्ञानवान सत मानो ध्यान माही सेठा है।
राम सागर नीर जहाँ दूध से भरत है
हसा रूपी सता तहा केला ही करत है।
लाखो लाव सीर सागर त्रिवेणी समान है।
वाही मे अडसठ तीर्थ अठारह पुराण है।
महाराज का देवल सो तो बैकुण्ठा को वास है
लारे तो तिवारा मानो इन्द्र का रेवास है।
महाराज का दर्शन किया दालेदर दूर है।
धाम सोभा वाचे, जाने सोभा भरपूर है।
चैत महीना शुक्ल पक्ष, चौदस आवे है
सालो साल रायण माही, मेलो भर जावे है
बीस तो पडित मिल, चर्चा माकूँ किनी है।
मोहे कहे रीत कुल, छाड़ तुम दीनी है।
चालत पथ कुपथ कौन, दरियाव नाम है।
कैसा हुआ भक्त कौन, उनकी धाम है।
जव मैं पाट विशेष सुनाई है।
किशनगढ़ शहर माही जमनादास गाई है।

परम्परागत मर्यादाओ की रक्षा तथा धर्म प्रचार-प्रसार के लिए दूसरे आचार्य श्री हरखाराम जी महाराज आचार्य पीठ राम-धाम रेण (फूल डोल मेला उत्सव) का सचालन करने लगे।

महाराज श्री हरखाराम जी का जीवन ऐसा अनुकरणीय था कि वैसी कथनी और करनी अत्यत्र देख पाना कठिन है। जैसा कि परम्परागत रामस्नेही सत कहते✻ आए है—इन महाराज श्री की राम नाम मे अत्यन्त निष्ठा व गुरुधर्म मे अटूट श्रद्धा थी इसके प्रभाव से श्री हरखाराम महाराज को विजयसिहजी ने रामनामी की पदवी दी थी।

आचार्य श्री हरखारामजो का जन्म विक्रम सवत १८०३ भाद्रपद कृष्ण द्वादशी के दिन सायकाल नागौर नगर मे हुआ था। आपके पिता श्री का नाम विजेराम तथा माता श्री का नाम वहला देवी था। आप वैश्य (श्रावक) जैन जाति के थे। विजेरामजी वि० स० १७७५ मे श्री दरियाव महाराज से उप-देश लेकर रामस्नेही वन गए थे। आपके पॉच पुत्र थे। इनमे सवसे छोटे श्री हरखारामजी महाराज* थे जो आचार्य श्री के आशीर्वाद से परम भागवत तपोमूर्ति हुए। श्री हरखाराम जी अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर जप किया था। आपके तप के प्रभाव से आपका सुयश सर्वत्र फैल गया था।

✻ वाणी सावतराम की, रेहणी हरखा सन्त।
गरीवी रामादास की, रामचरण विरकत ॥

* दरिया जव गोद ले, मस्तक वरिया हाथ
यह सुत तेरे हो तपधारी, तजे न्यात अरु जात

'पर हित हानि, लाभ जिन्ह केरें' की उक्ति के ग्रनुसार नागौर के कुछ जैन श्रावक महाराज श्री से द्वेष करने लगे। वे हरखाराम महाराज के फैलते सुयश को सहन नही कर पा रहे थे तथा उनसे राम नाम छोडकर णमोकार मत्र के जपने का दुराग्रह करने लगे थे—पर हरखाराम जी महाराज ग्रपने पथ पर दृढ रहे।

जव हरखाराम जी महाराज पर इन जैन श्रावको का कोई प्रभाव नही पडा तो इन्होने कुचक्र रचने आरम्भ कर दिए। इन्होने जोधपुर के राजगुरु गोसाई जी को कान भर दिए कि नागोर मे पाखण्डियों का समाज फैल गया है। गोसाई जी ने राजा विजयसिह को वहका दिया तथा माग कर दी कि इन पाखण्डियो पर नियन्त्रण होना चाहिए।

राजा विजयसिंह ने महाराज हरखाराम को उनकी शिष्य मण्डली सहित जोधपुर बुलाया तथा ग्रनेक प्रकार के प्रश्नोत्तर हुए। राजा विजयसिह व महाराज श्री के वीच हुए प्रश्नोत्तर महाराज हरखाराम द्वारा रचित 'समाधा' नामक वाणी मे सग्रहीत है।

महाराज श्री द्वारा समझाने बुझाने का राजा विजयसिंह पर कोई प्रभाव नही पडा था जैन श्रावको की गुटवन्दी मे फस कर राजगुरु गोसाई जी से सलाह करने के उपरान्त उन्होने महाराज श्री हरखाराम जी को देश त्यागने तथा धन, माल व खजाना ग्रादि साथ न ले जाने का ग्रादेश दे दिया इस ग्रवसर पर निर्भयता पूर्वक श्री हरखाराम जी महाराज ने कहा था कि :—

पश्चिम सूर्य उदय हो राजा
ताहु न छोडूं राम

न्यात् मुलक, धन धाम से
नहिं हमको कछु काम

यह कह कर जिस स्थिति मे खड़े थे उसी स्थिति मे जोधपुर से मुख मोड कर मेवाड़ को पवित्र करने के लिए चल पड़े। यह प्रयाण महाराज श्री ने १८४५ मे अपनी शिष्य मण्डली के सहित किया। सन्त अनुकलता को भोग तथा प्रतिकूलता को तपस्या मान कर सदैव प्रसन्न रहते है। सन्त जन अपने उद्देश्य पथ पर दृढ तथा विचारो के सच्चे होते है। उनके लिए तो "सभी भूमि गोपाल की" होती है फिर वह मारवाड हो या मेवाड़❀।

मेवाड़ मे रह कर महाराज श्री हरखाराम ने चमत्कार पूर्ण अनेक लोकहितकारी कार्य किए भक्ति का प्रचार-प्रसार किया। अनेक लोगो को महाराज श्री के सामीप्य का लाभ मिला। राम-परिवार सहित महाराज मेवाड को धरती को भक्ति भावना से भरते रहे। आपकी निष्कामता त्याग व वैराग्य से प्रसन्न होकर स्वय भगवान् ने वनजारा के रूप मे उन पर कृपा की। मेवाड़ के राणा व वहाँ की जनता ने महाराज श्री के सदुपदेशों से अध्यात्मिक लाभ उठाया।

भक्तो के मान सम्मान की रक्षा भगवान् को स्वय करनी पडती है क्योकि भगवान् उसे अपना ही मान सम्मान मानते हैं कहानी है कि "हम भक्तो के, भक्त हमारे" जोधपुर के राजा विजयसिह ने महाराज श्री को देश निकाला दे दिया था किन्तु

❀ अठारे पे चार जु तापर पांच पिछाण
गए देश मेवाड़ सन, जहँ माडल गढ जान

महाराज श्री के मारवाड छोडने के कुछ वर्षों के वाद ही पोकरण के ठाकुर सरदारसिंह के पडयन्त्र से वि० स० १८४९ मे राजा विजयसिंह को उनके ही पुत्र भीमसिंह ने❀ परास्त कर जोधपुर पर अधिकार जमा लिया।

अपने पुत्र द्वारा ही तिरस्कृत होने के कारण विजयसिंहजी को बडा पश्चाताप हुआ। राजा का दुख देख कर उनके सहयोगी चडावल ठाकुर हरीसिंह ने राजा को इस दुख से मुक्ति का उपाय सुझाया कि रामस्नेही रामभक्तो को शीघ्र वुलवाइए और उनसे क्षमा याचना कीजिए। राजा विजयसिंह जी ने श्री हरखाराम जी महाराज का पता लगा कर उन्हे पत्र लिखा तथा अपने दूतों से कहा कि तुम माडलगढ जाओ और महाराज श्री हरखाराम जी से मेरी ओर से कर वद्ध प्रार्थना करना कि वे वापस शीघ्र ही जोधपुर पधारे।

दूत राजा विजयसिंह जी का पत्र लेकर द्रुत गति से माँडल गढ पहुँच गए। वहाँ महाराज श्री हरखारामजी के चरणो में प्रणाम करके राजा विजयसिंह जी का पत्र प्रस्तुत कर दिया। महाराज श्री ने पत्र पढ कर दूतो को आश्वासन दिया कि तुम वापस जोधपुर जाओ हम आते है।* इसके पश्चात् अपने राम परिवार को सन्देश देकर राम स्नेहियो के साथ रामधाम रेण

❀ ऊमराव रूठा और ठोर ठोर फूटा फूट
भीमसिंह गादी बैठा छुटा पख-पाणरे
—(सुखसारण) कृत भक्त माल से

* राम गरीब निवाज को, देखो विरद अनूप
हरखा हरिजन लेन को दूत पठाए भूप —जीवनी

होते हुए जोधपुर पधार जाते है । वहाँ महाराज श्री ने जोधपुर नरेश को आशीष पूर्ण आश्वासन दिया तथा पूर्ववत रेण (नागौर) मे आकर 'राम नाम-धर्म" का प्रचार करने लगे ।

मूलाचार्य श्री दरियाव महाराज से❀ दिव्य सन्देश पाकर महाराज श्री हरखाराम जी ने वि० स० १८५६ मे राम धाम रेण मे राम सभा का गठन किया व आचार्य श्री का फूलडोल उत्सव धूम धाम से मनाया । आज भी हर वर्ष दो मेलो का आयोजन होता है ।※ एक मार्गशीर्ष सुदी पूर्णिमा को और दूसरा चैत्र सुदी पूर्णिमा को । इस अवसर पर भारत भर से राम-स्नेही भाई बन्धु सत्सग व दर्शन आदि करने के लिए रेण आया करते है ।

इस पावन मेले के पुण्य-पर्व पर पूर्णिमा के दिन, रामधाम (देवल) से आचार्य सन्त, सद्गृहस्थ आदि राम-स्नेहियो सहित सद्गुरु वधावणा, भजन व कीर्तन करते हुए एक भव्य शोभा-यात्रा का आयोजन करते है । इस शोभा यात्रा के भक्त जन ग्राम के मध्य मे स्थित राम-सभा का दर्शन करने जाते है । वहाँ दर्शन करने के उपरान्त प्रसाद चढाकर पूर्वोक्त प्रकार से भजन कीर्तन करते हुए लौट जाते हैं । गगन चुम्बी विशाल "राम सभा" आज भी रेण नगर मे स्थित है ।

❀ राम सभा की आज्ञा दास दरियाव जी दीनी
हरखा लिखमीचद भली विधि शोभा लीनी
"रेण स्थित राम सभा मे शिला लेख भी लगाया हुआ है कि"

※ अठारे सो छप्पन में रायण धाम बनाय
श्री दरियाव गुरुदेव को पुनि मेलो सरसाय

आचार्य श्री हरखाराम जी महाराज का वाणी साहित्य, साखी, शब्द, छन्द, सवैया व कवितादि मे लगभग ६००० की सख्या में उपलब्ध है। इस प्रकार चारो ओर धर्म पताका फहराकर वि० स० १८६१ की भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी के दिन महाराज श्री हरखारामजी ने कैवल्य पद प्राप्त किया।

'सवत अठारे इकसठे भादव पूरण काम
कृष्णपक्ष त्रयोदशी. जन पहुँचे निजधाम'

—जीवनी से

महाराज श्री हरखारामजी के २० शिष्य थे। इनमे रामकरणजी महाराज मुख्य माने जाते है। रामकरण जी महाराज का जन्म स० १९३६ मे भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को हरखाराम जी महाराज के बड़े भ्राता श्री लिखमीचदजी महाराज के घर जैन (श्रावक) जाति मे हुआ था। आपकी माता का नाम साराबाई था। रामकरणजी महाराज अत्यन्त ज्ञानी-निष्ठावान गुरु-धर्मी रामस्नेही पथ के अनुयायी थे। जव आचार्य श्री हरखारामजी महाराज की गादी सम्हालने के लिए सभी सन्तों, गृहस्थो व रामस्नेही जनो ने अति आग्रह पूर्वक विनती की तव ही आपने रामस्नेही सम्प्रदाय का कार्यभार सम्हालने की स्वीकृति प्रदान की। इस स्वीकृति के पीछे लोक रजन की भावना व सन्त-महात्माओ का सम्मान रखना ही प्रमुख था।

श्री रामकरणजी महाराज के समय मे आद्याचार्य श्री दरियाव महाराज के फूलडोल महोत्सव पर श्री दरिया महाप्रभु वाणी, श्री पाट गादी पर विराजमान होकर छड़ी, छँवर, लवाजमा का रीति रिवाज पूरा होता था। आप परम निस्पृही निरभिमानी महापुरुष थे।

रामकरण महाराज अपनी साधुता के कारण अत्यन्त लोक

प्रिय हुए। पुराने सन्त व रामस्नेहियो मे एक कहावत सुनने में आती है—

'रामकरण के रोम की, होड करो मत कोय'
साड़ा वारे पथ मे, हुआ न ऐसा होय'

इस प्रकार महाराज श्री ने ७७ वर्ष तक सत-पचो की सहायता से परम्परागत रामस्नेही गुरु धर्म का अत्यन्त कुशलता पूर्वक पालन किया तथा उसके प्रचार प्रसार मे प्रयत्नशील रहे।

समय सुयोग्य आचार्य की मांग कर रहा था। अत॰ सम्प्रदाय के थम्बायतो सन्त-गृहस्थो ने जनतान्त्रिक प्रणाली के अनुसार श्री भगवत्दास जी महाराज से प्रार्थना की कि वे गद्दी का भार सम्हाल कर कृतकृत्य करे। अत वि० स० १९३८ चैत्र सुदी नवमी के दिन शुभ मुहूर्त मे आचार्य की गद्दी पर विराज कर भगवतदास महाराज सभी भाई बहनो के कल्याण हेतु पथ प्रदर्शन करने लगे।※

आचार्य श्री भगवत्दास जी महाराज का जन्म वि० स० १९१७ चैत्रकृष्णा तृतीया के दिन ग्राम चंपाखेडी मे हुआ था। यह स्थान रेण आचार्य पीठ से ९ कि० मी० की दूरी पर पूर्व दिशा मे स्थित है। आपके पिता श्री प्रतापसिंहजी धनधान्य सम्पन्न राजपुरोहित थे। आपका जीवन पूर्वाजित सस्कारो के कारण राम भक्ति से पूर्ण था। इसके प्रभाव से आपको ७ वर्ष

※ चैत्र सुदी शुभ की नवमी, अडतीसा की साल
तपे सन्त दरियाव की गादी करुणा निधि कृपाल
—लावणी

अल्पायु में ही महापुरुषों के चरणों का आश्रय प्राप्त हो गया था। स० १९२४ मे श्री सन्त विरदारामजी महाराज से दीक्षा लेकर राम भजन, शास्त्र-स्वाध्याय आदि लगन के साथ करने लगे थे। फलस्वरूप थोडे ही समय में भजनानन्दी व भागवती पण्डित होकर सरल-मनोहारी उपदेश देने के कारण रामस्नेही सम्प्रदाय में विख्यात हो गए।

आचार्य श्री भगवत्‌दासजी महाराज बडे तेजस्वी, सयम-शील महापुरुप थे। आपके सामने आकर बडे बडे शास्त्र ज्ञानी पडित अनेक प्रकार के तर्क वितर्क करने के लिए आते थे किन्तु महाराज श्री के आत्मीयता के नाते बहुत हर्षित होकर सम्मान एव अनुभव पूर्ण शास्त्र सम्मत उत्तर उनके हृदयो पर स्थाई प्रभाव डाल देते थे—उसके परिणाम स्वरूप लोग आपके प्रति गुरुवत् श्रद्धावान बन जाते थे। जव आप भारत परिभ्रमण हेतु निकलते तो १००-१५० साधु-सन्त आपके साथ रह कर राम ध्वनि के द्वारा सत्‌युग जेसा दिव्य वातावरण निर्मित करते रहते थे।

इस प्रकार भगवतदासजी महाराज २० वर्ष ७ माह १६ दिन महान प्रयत्न पूर्वक निरन्तर देश, धर्म और सम्प्रदाय की उन्नति करते हुए सत्रहवे दिन यानी* वि०स० १९५९ कार्तिक कृष्ण एकादशी को परमधाम पधार गए।

आचार्य श्री का मेला—सत्रहवी धूम-धाम से मनाकर चली

---

* साल गुण सठ की दु खदाई
काती वदी एकादशी आई —लावणी

आई लोकतांत्रिक प्रणाली से १९५९ की कार्तिक सुदी पूर्णिमा के दिन श्री रामगोपालजी महाराज पदारूढ हुए ।

पूज्य महाराज श्री रामगोपालजी की जन्म भूमि चपाखेडी ही थी । आपके पिता श्री हम्मीरसिंहजी राजपुरोहित थे । महाराज रामगोपालजी निवृत्ति परायण व भजनानन्दी सन्त थे । आपका विश्वास चर्चाओ व मौखिक धर्म-प्रचार कार्यों में कम होकर एकान्त वास, सुरत शब्द योग व ध्यान मे ही वीतता था ।

महाराज श्री ने ३९ वर्षो तक रामस्नेही सम्प्रदाय का कुशलता पूर्वक सचालन किया । आप वि० स० १९९८ फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा के दिन परमधाम पधार गए । आपके परम-धाम पधारने की खबर पाकर एक शोक लहर सर्वत्र व्याप्त हो गई । दूर दूर के सन्त, महात्मा रामस्नेही सद्गृहस्थ रामधाम आकर सत्रहवी महोत्सव मनाने के लिए रामधाम रेण मे पधारें ।

वि० सं० १९९८ चैत्र कृष्णा तृतीया के दिन श्री क्षमाराम जी महाराज आचार्य पद की गद्दी पर आसीन हुए । यद्यपि आप इस भार को वहन करने के लिए अनिच्छुक थे फिर भी राम-स्नेहियो के अति अनुनय विनय का आदर करने के निमित्त आपने आचार्य पद स्वीकार कर लिया ।

महाराज श्री क्षमाराम का जन्म वि० स० १९४० भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन ग्राम सोजत सिटी (जिला—पाली) मे हुआ था । आप क्षत्रिय कुल मे जन्मे थे । आपके पिता श्री मेघसिंह व माता श्रीमती हीरा कंवर जी थी । आपकी छोटी अवस्था मे ही उनके माता पिता परमधाम पधार गए थे । अत. सत्रह वर्ष की अवस्था मे ही आप विरक्त हो गए थे ।

रामधाम रेण के सप्तम आचार्य

ब्रह्मलीन श्री श्री १००८ श्री शास्त्रीजी बलरामदासजी महाराज

आपने जीव मात्र को सुखी करने के लिए कल्याण के अनेक कार्य किए व वि० सं० २०२६ पौष कृष्ण तृतीया शनिवार के दिन परमधाम पधार गए।

आचार्य श्रीक्षमारामजी के परमधाम पधारने के बाद सर्वत्र शोक का सन्नाटा छा गया।

रेण आचार्यपीठ के सभी सन्त व गृहस्थ भाईयों ने रेण-पीठ के उत्तराधिकारी श्री बलरामदास जी को आचार्यपद सम्भालने की प्रार्थना की। यद्यपि आपकी इच्छा नही थी पर परम्परा के नियम का पालने के लिए पांच मिनिट आचार्य पीठ को स्वीकार करके गादी पर विराजमान हुए थे। तदनन्तर तुरन्त ही गादी का त्याग कर पूज्य गुरुदेव ने वि० स० २०२६ पोष शुक्ला चतुर्थी के दिन आचार्य पीठ को मुझे सुपुर्द कर दिया।

पूज्य श्री शास्त्री जी महाराज का जन्म वि० स० १९९४ मिगसर सुदि एकादशी को ग्राम असावरी जिला नागौर पवित्र दाधीच ब्राह्मण कुल मे हुआ। आपके माता का नाम जमुना-बाई एव पिता का नाम श्री जयदेव जी है।

रेण सम्प्रदाय के सन्त श्री गुलावदास जी महाराज की दिव्य प्रेरणा से सात वर्ष की अवस्था मे आचार्य श्री क्षमाराम जी महाराज मे वि० स० २००१ मे गुरु दीक्षा प्राप्त की। आप बाल्यकाल से ही विद्या अध्ययन मे रूचि रखते थे, विद्या अध्य-यन मे दक्षता देख के आचार्य श्री क्षमारामजी महाराज ने झोझर थम्बा के साध आनन्दरामजी के सकेत से आपको विद्या-ध्ययन के लिये अकोला भेज दिया। अकोला मे राधाकृष्ण तोपनीवाल पाठशाला में सस्कृत लघु-सिद्धान्त कौमुदी आदि

ग्रन्थों का अध्ययन तीन वर्ष तक करके श्री सीताराम पारीक संस्कृत विद्यालय, इन्दौर (म० प्र०) मे संस्कृत के आदर्श ग्रन्थो का अध्ययन करने के पश्चात् विश्वनाथ की महान् नगरी वाराणसी मे स्थित विश्व विख्यात सस्कृत विश्व विद्यालय के अन्तर्गत ढू ढीराज गली मे सस्कृत सन्यासी डिग्री कॉलेज मे आपने दर्शन, न्याय, मीमासा, ज्योतिप आदि ग्रन्थो का अध्ययन करके व्याकरणाचार्य उपाधी प्राप्त की। तदनन्तर आप आचार्य पीठ रामधाम रेण पधार गये। आचार्य श्री क्षमाराम जी महाराज के वर्तमान समय मे आप रेण आचार्य पीठ के उत्तराधिकारी वनकर भारत की पथ-भ्रष्ट जनता को आपने उपदेश-आदेश, मधुर एवं आकर्पक वाणी द्वारा जाग्रत किया। आप मे स्वभावत त्याग एव उदारता की भावना थी, तथा आप भगवत् भक्ति मे लीन रहते थे। कभी-कभी वैराग्य के आवेश मे आकर रामधाम को छोड कर पुष्कर एव जोधपुर के पहाड़ो मे साधना हेतु पधार जाते थे। परन्तु आचार्य श्री क्षमाराम जी महाराज के वृद्ध अवस्था की स्मृति व सम्प्रदाय का उत्तरदायित्व का विचार जक जोर देता था। अत पुन: रामधाम रेण मे पधार जाते थे। आपके जीवन मे इस प्रकार की घटनाएं अनेक वार हुई। पश्चात् आपने रामधाम रेण मे विराज कर सन्त साहित्य का पिछडा हुआ क्षेत्र आगे लिया।

आपके त्याग, तपस्या, सरलता आदि दैवी सम्पदा के कारण स्वाभाविक ही भूली भटकी जनता आ‌पके शब्दो का अनुकरण कर आध्यात्मिक लाभ उठाती रही। इस प्रकार आपने भारत के कोने कोने मे परिभ्रमण कर हजारो जीवो को सत्संग द्वारा भगवत् प्राप्ति का मार्ग प्रदर्शित किया। ऐसे महान् पुरुपो को देश को वडी आवश्यकता है, किन्तु विधि के

विधान को कौन परिवर्तन कर सकता है। वि०स० २०३६ पौष कृष्णा प्रथम अष्टमी मगलवार को वियोग के दु:ख का दिन आया और शरणागत सभी जीवो को अनाथ कर—

"जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु"

का उपदेश करते हुए पूज्य गुरुदेव इहलौकिक लीला समाप्त कर सत्य लोक कैवल्यधाम पधार गये · आपका चरित्र व्यवहारिक वाणी को अगोचर है अत: मेरे तुच्छ वाणी द्वारा आपके चरित्र का वर्णन करना असम्भव है।

श्रीगुरुचरणानुरागी

हरिनारायण शास्त्री

— ※ —

❀ राम-राम ❀

जगद्गुरु अनन्त श्री विभूषित

श्री रामस्नेही सम्प्रदाय

मूल धर्माचार्य

श्री दरियावजी महाराज

की

अरणभै-वाणी

❀ सतगुरु का अंग ❀

नमो राम पर ब्रह्मजी, सतगुरु संत आधार ।
जन दरिया बन्दन करै, पल पल बारम्बार ।।१।।

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब संत ।
जन दरिया बदन करै, नमो नमो भगवन्त ।।२।।

दरिया सतगुरु भेंटिया, जा दिन जन्म सनाथ ।
श्रवनाँ सब्द सुनाय के, मस्तक दीना हाथ ।।३।।

सतगुरु दाता मुक्ति का, दरिया प्रेम दयाल ।
किरपा कर चरनों लिया, मेटा सकल जंजाल ।।४।।

अन्तर थो बहु जन्म को, सतगुरु भाँग्यो आय ।
दरिया पति से रूठनो, अब कर प्रीति बनाय ॥५॥
जन दरिया हरि भक्ति की, गुरां बताई बाट ।
भूला ऊजड़ जाय था, नरक पड़न के घाट ॥६॥
दरिया सतगुरु सब्द सौं, मिट गई खैंचा तान ।
भरम अंधेरा मिट गया, परसा पद निरबान ॥७॥
दरिया सतगुरु सब्द की, लागी चोट सुठौड़ ।
चंचल सो निस्चल भया, मिट गई मन की दौड़ ॥८॥
डूबत रहा भव सिंधु में, लोभ मोह की धार ।
दरिया गुरु तैरू मिला, कर दिया पैले पार ॥९॥
दरिया गुरु गरुवा मिला, कर्म किया सब रद ।
झूठा भर्म छुड़ाय कर, पकड़ाया सत सब्द ॥१०॥
दरिया मिरतक देख कर, सतगुरु कीनी रींझ ।
नाम संजीवन मोहिं दिया, तीन लोक को बीज ॥११॥
तीन लोक को बीज है, ररो ममो दोई अंक ।
दरिया तन मन अर्प के, पीछे होय निसंक ॥१२॥
जन दरिया गुरुदेवजी, सब विधि दई बताय ।
जो चाहो निज धाम को, तो सांस उसाँसो ध्याय ॥१३॥
जन दरिया सतगुरु मिला, कोई पुरबले पुन्न ।
जड़ पलट चेतन किया, आन मिलाया सुन्न ॥१४॥

दरिया सतगुरु सब्द सौं, गत मत पलटै अंग ।
करम काल मन का मिटा, हरि भज भये सुरंग ।।१५।।
नहिं था राम रहीम का, मैं मतहीन अजान ।
दरिया सुध बुध ज्ञान दे, सतगुरु किया सुजान ।।१६।।
सोतां था बहु जन्म का, सतगुरु दिया जगाय ।
जन दरिया गुरु सब्द सौ, सब दुख गये बिलाय ।।१७।।
सतगुरु शब्दाँ मिट गया, दरिया संसय सोग ।
औसद दे हरि नाम का,तन मन किया निरोग ।।१८।।
दरिया सतगुरु कृपा करि, शब्द लगाया एक ।
लागतही चेतन भया, नेत्तर खुला अनेक ।।१९।।
दरिया गुरु पूरा मिला, नाम दिखाया नूर ।
निसा भई सुख ऊपजा, किया निसाना दूर ।।२०।।
रंजी सास्तर ज्ञान की, अंग रही लिपटाय ।
सतगुरु एकहि शब्द से, दीन्ही तुरत उड़ाय ।।२१।।
शब्द गहा सुख उपजा, गया अंदेसा मोहि ।
सतगुरु ने किरपा करी, खिड़की दीनी खोहि ।।२२।।
जैसे सतगुरु तुम करी, मुझ से कछू न होय ।
बिस भांड़े विस काढ़ कर, दिया अमीरस मोय ।।२३।।
गुरु आये घन गरज कर, अन्तर कृपा उपाय ।
तपता से सीतल किया, सोता लिया जगाय ।।२४।।

गुरु आये घन गरज कर, शब्द किया परकास ।
बीज पड़ा था भूमि में, भई फूल फल आस ॥२५॥

गुरु आये घन गरज कर, करम कड़ी सब खेर ।
भरम बीज सब भूनिया, ऊग न सक्के फेर ॥२६॥

साध सुधारैं सिष्य को, दे दे अपना अंग ।
दरिया संगत कीट की, पलटि सो भया भिरग ॥२७॥

यह दरिया की बीनती, तुम सेनी महाराज ।
तुम भृंगी मैं कीट हूँ, मेरी तुम को लाज ॥२८॥

बिक्ख छुड़ावै चाह कर, अमृत देवै हाथ ।
जन दरिया नित कीजिये, उन संतन को साथ ॥२९॥

उन संतन के साथ से, जिवड़ा पावै जक्ख ।
दरिया ऐसे साध के, चित चरनों में रक्ख ॥३०॥

बाड़ी मे है नागरी, पान देसांतर जाय ।
जो वहां सूखै बेलड़ी, तौ पान यहां बिनसाय ॥३१॥

पान बेल से बीछुड़ै, परदेसां रस देत ।
जन दरिया हरिया रहै, उस हरी बेल के हेत ॥३२॥

कुंजी परदेसों फिरै, अंड धरै घर माहि ।
निसदिन राखै हेत में, ता सों विनसै नाहिं ॥३३॥

अनड़ अंड को डाल दे, अंतर राखै हेत ।
पाक फूट परीपक होवै, खैंच आप दिस लेत ॥३४॥

अनड़ बसै आकास में, नीची सुरत निवास ।
ऐसे साधू जगत में, सुरत सिखर पिउ पास ॥३५॥

कोयल आले मूढ़ के, धरै आपना अंड ।
निसदिन राखै हेत में, तिन से पड़े न खंड ॥३६॥

मूढ़ काग समझै नहीं, मोह माया सेवै ।
चून चुगावै कोयली, अपना कर लेवै ॥३७॥

चौमासे ऋतु जान कर, पृथ्वी को जल देत ।
कबहू आवे ऋतु बिना, उस चात्रिक के हेत ॥३८॥

घनहर वरषै आय कर, देख पपीहा चाव ।
जिमी दरिया सतगुरु चवै, देख मांहिला भाव ॥३९॥

महा प्रताप सिर पर तपै, किरपा रस पोऊं ।
दरिया बच्चा कच्छ गुरु, जोयेही जीऊं ॥४०॥

जन दरिया गुरुदेवजी, ऐसे किया निहाल ।
जैसे सूखी बेलड़ी, भरस किया हरियाल ॥४१॥

सतगुरु सा दाता नहीं, नहिं नाम सरीखा देव ।
सिष सुमिरन सांचा करै, हो जाय अलख अभेव ॥४२॥

जन दरिया सतगुरु करी, राम नाम की रीझ ।
अमृत बूठा सब्द का, उगा पूरब बोज ॥४३॥

सतगुरु बरषै सब्द जल, पर उपकार विचारि ।
दरिया सूखी अवनी पर, रहै निवाना वारि ॥४४॥

सतगुरु के इक रोम पर, वारु बेर अनंत ।
इमृत ले मुख में दियो, राम नाम निजतंत ॥४५॥

सतगुरु बृच्छ समान हैं, फल से प्रीति न कोय ।
फल तरु से लागो रहै, रस पी परिपक होय ॥४६॥

सतगुरु पारस की कनी, दीरग दीसे नांहि ।
जन दरिया षट् दरब धन, सब आया उन मांहि ॥४७॥

मीन तड़पती जल बिना, सागर मांहि समाय ।
जन दरिया ऐसी करी, गुरु किरपा मोंहि आय ॥४८॥

भवजल वहता जाय था, संसय मोह की बाढ़ ।
दरिया मोंहि गुरु कृपा कर, पकड़ बांह लिया काढ़ ॥४९॥

❋ सुमिरन का अंग ❋

राम भजै गुरु सब्द ले, तो पलटै मन देह ।
दरिया छाना क्यों रहै, भू पर बूठा मेंह ॥१॥

दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध ।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावे स्वाद ॥२॥

दरिया सुमिरै राम को, करम भरम सब खोय ।
पूरा गुरु सिर पर तपं, विघन न व्यापै कोय ॥३॥

दरिया सुमिरै राम को, कर्म भर्म सब चुर ।
निस तारा सहजै मिटै, जो उगै निर्मल सूर ॥४॥

राम बिना फीका लगै, सब किरिया सास्तर ग्यान।
दरिया दीपक कहा करै, उदय भया निज भान ॥५॥
दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर।
जिन अंधे देखा नहीं, उनसै साहिब दूर ॥६॥
दरिया सूरज ऊगिया, चहूँ दिस भया उजास।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास ॥७॥
आन धरम दीपक जिसा, भरमत होय बिनास।
दरिया दीपक क्या करै, आगे रवि परकास ॥८॥
दरिया सुमिरै राम को, दूजी आस निवार।
एक आस लागा रहै, तो कदे न आवै हार ॥९॥
दरिया नरतन पाय कर, कीया चाहै काज।
राव रंक दोनों तरैं, जो बैठे नाम जहाज ॥१०॥
नाम जहाज बैठे नहीं, आन करै सिर भार।
दरिया निस्चय बहैंगे, चौरासी की धार ॥११॥
जन्म अकारथ नाम बिन, भावै जान अजान।
जन्म मरन जम काल की, मिटै न खैचातान ॥१२॥
मुसलमान हिंदू कहा, षट् दरसन रंक राव।
जन दरिया निज नाम बिन, सब पर जम का डाव ।१३
सुर्ग मिर्त पाताल कहा, कहा तीन लोक विस्तार।
जन दरिया निज नाम बिन, सभी काल को चार ।१४।

दरिया नर तन पाय कर, किया न राम उचार ।
बोझ उतारन आइया, सो ले चले सिर भार ।।१५।।
जो कोई साधू गृहो में, माहि राम भरपूर ।
दरिया कह उस दास को, मैं चरनन को धूर ।।१६।।
बाहर बाना भेष का, माहि राम का राज ।
कह दरिया वे साधवा, हैं मेरे सिर का ताज ।।१७।।
राम सुमिर रामहिं मिला, सो मेरे सिर का मौर ।
दरिया भेष बिचारिये, खैर मैर की ठौर ।।१८ ।
दरिया सुमिरै राम को, कोट कर्म की हान ।
जम और काल का भय मिटै, ना काहू की कान ।१९।
दरिया सुमिरै राम को, आतम को आधार ।
काया काची काँच सी, कंचन होत न बार ।।२०।।
दरिया राम सँभालते, काया कंचन सार ।
आन धर्म और भर्म सब, डाला सिर से भार ।।२१।।
दरिया सुमिरै राम को, सहज तिमिर का नास ।
घट भीतर होय चाँदना, परम जोति परकास ।।२२
सतगुरु संग न सचरिया, राम नाम उर नाहि ।
ते घट मरघट सारिखा, भूत बसे ता माहिं ।।२३।।
राम नाम ध्याया नहीं, हुआ बहुत अकाज ।
दरिया काया नगर में, पंच भूत का राज ।।२४।।

पंच भूत के राज में, सब जग लागा धुन्ध ।
जन दरिया सतगुरु बिना, भिल रहा अंधो अन्ध ॥२५॥

सब जग अंधा राम बिन, सूझे न काज अकाज ।
राव रंक अंधा सबै, अंधों ही का राज ॥२६॥

दरिया सब जग आँधरा, सूझै सो बेकाम ।
सूझा तब ही जानिये, जा को दरसै आतम राम ॥२७॥

मन बच काया समेट कर, सुमिरै आतम राम ।
दरिया नेड़ा नीपजै, जाय बसै निज धाम ॥२८॥

सकल ग्रंथ का अर्थ है, सकल बात की बात ।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात ॥२९॥

ध्रु लोक ध्रु राम कहै, कहै पताला सेष ।
दरिया परगट नाम बिन, कहु कौन आयो देख ॥३०॥

लोह पलट कंचन भया, कर पारस को संग ।
दरिया परसै नाम को, सहजहिं पलटै अंग ॥३१॥

अपने अपने इष्ट में, राच रहा सब कोय ।
दरिया रत्ता राम सूं, साध सिरोमनी सोय ॥३२॥

दरिया धन वे साधवा, रहै राम लौ लाय ।
राम नाम बिन जीव को, काल निरन्तर खाय ॥३३॥

दरिया काया कारवी, मौसर है दिन चार ।
जब लग साँस सरीर में, तब लग राम संभार ॥३४॥

राम नाम रसना रटै, भीतर सुमिरै मन ।
दरिया ये गत साध की, पाया नाम रतन ॥३५॥
दरिया दूजे धर्म से, ससय मिटै न सूल ।
राम नाम रटता रहै,सब धर्मों का मूल ॥३६॥
लख चौरासी भुगत कर, मानुष देह् पाई ।
राम नाम ध्याया नहीं, तो चौरासी आई ॥३७॥
दरिया नाके नाम के, बिरला आवै कोय ।
जो आवै तो परम पद, आवागवन न होय ॥३८॥
दरिया राम अगाध हैं, आतम का आधार ।
सुमिरत ही सुख ऊपजै, सहजहि मिटै विकार ॥३९॥
दरिया राम संभलता, देख किता गुन होय ।
आवागवन का दुख मिटै, ब्रह्म परायन सोय ॥४०॥
मरना है रहना नहीं, जा में फेर न सार ।
जन दरिया भय मानकर, आपना राम संभार ॥४१॥
कहा कोई वन वन फिरै, कहा लियाँ कोई फौज ।
जन दरिया निज नाम बिन, दिन दस मन की मौज।४२।
दरिया आतम मल भरा, कैसे निर्मल होय ।
साबुन लावै प्रेम का, राम नाम जल धोय ॥४३॥
दरिया इस संसार में, सुखी एक है संत ।
पिये सुधारस प्रेम से, राम नाम निज तंत ॥४४॥

राम नाम निस दिन रटै, दूजा नहीं दाय ।
दरिया ऐसे साध की, मैं बलिहारी जाय ॥४५॥

दरिया सुमिरन राम का, देखत भूली खेल ।
धन धन वे साधवा, जिना लिया मन मेल ॥४६॥

दरिया सुमिरन राम का, कीमत लखै न कोय ।
टूक इक घट में संचरै,, पाव वस्तु मरण होय ॥४७॥

दरिया सुमिरै राम को, साकट नाँहि सुहात ।
बीज चमके गगन में, गधिया बावै लात ॥४८॥

फिरी दुहाई सहर में, चोर गए सब भाज ।
सत्रू फिर मित्रज भया, हुआ राम का राज ॥४९॥

जो कुछ थी सोही बनी, मिट गई खैंचा तान ।
चोर पलट कर साह भै, फिरो राम की आन ॥५०॥

※ बिरह का अंग ※

दरिया हरि किरपा करी, बिरह दिया पठाय ।
यह बिरहा मेरे साध को, सोता लिया जगाय ॥१॥

बिरह वियापी देह में, किया निरन्तर बास ।
तालाबेली जीव में, सिसके साँस उसाँस ॥२॥

कहा हाल तेरे दास का, निस दिन दुख में जाँहि ।
पिव सेती परचो नहीं, बिरह सतावै माँहि ॥३॥

दरिया बिरही साध का, तन पीला मन सूख ।
रैन न आवै नींदड़ी, दिवस न लागै भूख ॥४॥

बिरहन पिउ के कारने, ढूढँन बन खण्ड जाय ।
निस बीती पिउ ना मिला, दरद रहा लिपटाय ॥५॥

बिरहन का घर बिरह में, ता घट लोहू न माँस ।
अपने साहिब कारने, सिसके साँसोसाँस ॥६॥

※ सूरातन का अंग ※

इष्टी स्वाँगी बहु मिले, हिरसी मिले अनन्त ।
दरिया ऐसा न मिला, राम रता कोई सन्त ॥१॥

पण्डित ज्ञानी बहु मिले, वेद ज्ञान परवीन ।
दरिया ऐसा न मिला, राम नाम लवलीन ॥२॥

वक्ता श्रोता बहु मिले, करते खैंचा तान ।
दरिया ऐसा ना मिला, जो सन्मुख झेले बान ॥३॥

दरिया बान गुरुदेव का, बेध भरम विकार ।
बाहर घाव दीखै नहीं, भीतर भया सिमार ॥४॥

दरिया बान गुरुदेव का, कोई झेले सूर सधीर ।
लागत ही व्यापै सही, रोम रोम में पीर ॥५॥

सोई घाव तन पर लगै, उट्ठ सम्भालै साज ।
चोट सहारे सब्द की, सो सूरा सिरताज ॥६॥

चोट सहै उर सेल की, मुख ज्यों का त्यों नूर ।
चोट सहारे सब्द की, दरिया साँचा सूर ॥७॥

दरिया सूरा गुरुमुखी, सहै सब्द का घाव ।
लागत ही सुध बीसरे, भूलै आन सुभाव ॥८॥

दरिया साँचा सुरमा, सहै सब्द को चोट ।
लागत ही भाजे भरम, निकस जाय सब खोट ॥९॥

दरिया सस्तर बाँध कर, बहुत कहावै सूर ।
सूरा तब ही जानिये, अनी मिले मुख नूर ॥१०॥

सबहि कटक सूरा नहीं, कटक माँहि कोई सूर ।
दरिया पड़ै पतग ज्यों, जब बाजै रनतूर ॥११॥

पड़ै पतगा अगनी में, देह को नाँहि सम्भाल ।
दरिया सिष सतगुरु मिले, तो हो जाय निहाल ॥१२॥

भया उजाला गैब का, दौड़े देख पतंग ।
दरिया आपा मेटकर, मिले अगनी के रंग ॥१३॥

दरिया प्रेमी आतमा, आवै सतगुरु सग ।
सतगुरु सेती सब्द ले, मिले सब्द के रंग ॥१४॥

दरिया प्रेमी आतमा, राम नाम धन पाया ।
निरधन था धनवन्त हुवा, भूला घर आया ॥१५॥

सूरा खेत बुहारिया, सतगुरु के विस्वास ।
सिर ले सौंपा राम को, नहीं जीवन की आस ॥१६॥

दरिया खेत बुहारिया, चढ़ा दई की गोद ।
कायर काँपे खड़बड़ै, सूरा के मन मोद ॥१७॥
सूरा वीर साँची दसा, भीतर साँचा सूत ।
पूठ फिरै नहीं मुख मुड़े, राम तना रजपूत ॥१८॥
साध सूर का एक अङ्ग, मना न भावै झूठ ।
साध न छाँड़ै राम को, रन में फिरै न पूठ ॥१९॥
सूर वीर की सभा में, कायर बैठे आय ।
सूरातन आवै नहीं, कोटि भाँति समुझाय ॥२०॥
सूर वीर की सभा में, जो कोई बैठे सूर ।
सुनत बात सुख ऊपजै, चढ़ै सवाया नूर ॥२१॥
आगे वढ़ै फिरै नहीं, यह सूरा की रीत ।
तन मन अरपै राम को, सदा रहै अघ जीत ॥२२॥
सूर न जानै कायरी, सूरातन से हेत ।
पुरजा पुरजा हो पड़ै, तहू न छाड़ै खेत ॥२३॥
सूर सदा है सनमुखी, मन में नाँहि संक ।
आपा अरपै राम को, तो बाल न होवै बंक ॥२४॥
सूर वीर साँची दसा, कवहू न मानै हार ।
अनी मिले आगे धसै, सनमुख झेले सार ॥२५॥
सूरा के सिर साम है, साधों के सिर राम ।
दूजो दिस ताकै नहीं, पड़ै जो करड़ा काम ॥२६॥

सूर चढ़ै संग्राम को, मन में संक न कोय ।
आपा अरपै राम को, होनी होय सो होय ।।२७।।

सूरा खेत बुहारिया, भरम मनी कर चूर ।
आय बिराजे रामजी, दुर्जन भाजा दूर ।।२८।।

पीछे पाँव धरै नहीं, सूरा बड़ा सुभाव ।
हूँ करिया आगे धसै, कायर खेले डाव ।।२९।।

साध सुरग चाहै नहीं, नरकाँ दिस नहीं जाय ।
पारब्रह्म के पार लग, पटा गैब का खाय ।।३०।।

पटा पवड़िया ना लहै, पटा लहै कोई सूर ।
साखियाँ साहब ना मिलै, भजन किए भरपूर ।।३१।।

दरिया सुमिरन राम का, सूराँ हँदा साज ।
आगे पीछे होय नहीं, वाहि धनी को लाज ।।३२।।

दरिया सो सूरा नहीं, जिन देह करी चकचूर ।
मन को जीत खड़ा रहै, मैं बलिहारी सूर ।।३३।।

सिन्धु बजा सूरा भिड़ा, बिरद बखानै भाट ।
हिला मेरु धूजी धरा, खुली सुरग की बाट ।।३४।।

बाट खुली जब जानिये, अन्तर भया उजास ।
जो कुछ थी सो ही बनी, पूरी मन की आस ।।३५।।

दरिया साँचा सूरमा, अरिदल घालै चूर ।
राज थरपिया राम का, नगर बसा भरपूर ।।३६।।

सूर वीर सनमुख सदा, एक राम का दास ।
जीवन मरण थित मेटकर, किया ब्रह्म में बास ।।३७।।

काया गढ़ ऊपर चढ़ा, परसा पद निर्बान ।
ब्रह्म-राज निरभय भया, अनहद घुरा निसान ।।३८।।

※ नाद परचे का अंग ※

दरिया सुमिरै राम को, आठ पहर आराध ।
रसना में रस ऊपजे, मिसरी जैसा स्वाद ।।१।।

रसना सेती ऊतरा, हिरदे किया बास ।
दरिया बरसा प्रेम की, षट् ऋतु-बारह-मास ।।२।।

दरिया हिरदे राम से, जो कबहु लागे मन ।
लहरें उठैं प्रेम की, ज्यों सावन बरसा घन ।।३।।

जन दरिया हिरदा बिचे, हुआ ज्ञान परकास ।
हौद भरा जहँ प्रेम का, तहँ लेत हिलोरा दास ।।४।।

हिरदे सेती ऊतरै, सुखम प्रेम की लहर ।
नाभि कँवल में सँचरै, सहज भरीजै डेहर ।।५।।

नाभि कँवल के भीतरै, भँवर करत गुञ्जार ।
रूप न रेख न वरन है, ऐसा अगम अपार ।।६।।

नाभि परचा उपजै, मिट जाय सभी विवाद ।
किरनै छूटैं प्रेम की, देखैं अगम अगाध ।।७।।

नाभि कँवल से ऊतरा, मेरु डण्ड तल आय ।
खिड़की खोली नाद की, मिला ब्रह्म से जाय ॥८॥
दरिया चढ़िया गगन को, मेरु उलध्या डण्ड ।
सुख उपजा साँई मिला, भेंटा ब्रह्म अखण्ड ॥९॥
बंकनाल को सुध गहै, मेरु डण्ड की 'बाट ।
दरिया चढ़िया गगन को, लांध्या ओघट घाट ॥१०॥
दरिया मेरु उलग कर, पहुँचा त्रिकुटी सध ।
दुख भाजा सुख ऊपजा, मिटा भर्म का धुंध ॥११॥
अनन्त हि चन्दा ऊगिया, सूर्य कोटि परकास ।
बिन बादल बरषा घनी, छह ऋतु बारह मास ॥१२॥
बकनाल की सुध गहै, कोई पहुचै बिरला सन्त ।
अमी झरै जोति झिल मिलै, नौबत घुरै अनन्त ॥१३॥
दरिया मन परसन भया, बैठा त्रिकुटी छाजै ।
अमी झरै बिगसै कँवल, अनहद धुन गाजै ॥१४॥
दरिया त्रिकुटी सन्ध में, मन ध्यान धरै कर धीर ।
अवस चलत है सुषमना, चलत प्रेम की सीर ॥१५॥
चलै सुरसरी अगम की, हिरदे मन्झ समाय ।
जन दरिया वा सुषमना, रोम रोम हो जाय ॥१६॥
दरिया नाद प्रकासिया, सो छबि कही न जाय ।
धन्य धन्य वे साधवा, वहाँ रहे लौ लाय ॥१७॥

दरिया नाद प्रकासिया, पूरी मन की आस ।
घन बरसै गाजै गगन, तेज पुञ्ज परकास ॥१८॥
दरिया नाद प्रकासिया, किया निरन्तर बास ।
पारब्रह्म परसा सही, जहँ दरसन पावै दास ॥१९॥
जन दरिया जाय गगच में, परसा देव अनाद ।
असुध बीसरी सुध भई, मिटिया वाद विवाद ॥२०॥
घुरे नगारा गगन में, बाजे अनहद तूर ।
जन दरिया जहँ थिति रचो, निस दिन बरसै नूर ॥२१॥
जन दरिया जाय गगन में, किया सुधा रस पान ।
गंग बहै जहँ अगम की, जाय किया अस्नान ॥२२॥
अमी झरत बिगसत कँवल, उपजत अनुभव ज्ञान ।
जन दरिया उस देस का, भिन भिन करन बखान ॥२३॥
सुरत गगन में बैठकर, पति का ध्यान सँजोय ।
नाड़ि नाड़ि रुँ रुँ बिचे, ररंकार धुन होय ॥२४॥
विन पावक पावक जलै, बिन सूरज परकास ।
चाँद विना जहँ चाँदना, जन दरिया का वास ॥२५॥
नौवत वाजै गगन में, विन वादल घन गाज ।
महल बिरजै परम गुरु, दरिया के महाराज ॥२६॥
कञ्चन का गिरी देखकर, लोभी भया उदास ।
जन दरिया थाके बनिज, पूरी मन की आस ॥२७॥

ब्रह्म अगनी ऊपर जलै, चलत प्रेम की बाय ।
दरिया सीतल आतमा, कर्म कन्द जल जाय ॥२८॥

कहा कहै किरपा करी, कहै रहै कोई रूठ ।
जन दरिया बानक बना, राम ठपोरी पूठ ॥२९॥

दरिया त्रिकुटी महल में, भई उदासी मोय ।
जहँ सुख है तहँ दुख सही, रवि जहँ रजनी होय ॥३०॥

दरिया मन रञ्जन कहे, सुखी होत सब कोय ।
मीठे औगुन ऊपजै, कडुवा से गुन होय ॥३१॥

मीठे राचे लोग सब, मीठे उपजै रोग ।
निरगुन कडुवा नीम सा, दरिया दुर्लभ जोग ॥३२॥

त्रिकुटी के मन्झ बहत है, सुख की सलिता जोर ।
जन दरिया सुख दुख परे, वह कोई देस जो और ॥३३॥

त्रिकुटी मांहि सुख घना, नांहि दुख का लेस ।
जन दरिया सुख दुख नहीं, वह कोई अनुभव देस ॥३४॥

* ब्रह्म परचे का अंग *

दरिया त्रिकुटी सन्धि में, महा जुद्ध रन्न पूर ।
कायर जन पूटा फिरै, सुन पहुचे कोई सूर ॥१॥

दरिया मेरु उलघिया, त्रिकुटी बैठा जाय ।
जो वहाँ से पूठा फिरै, तो विषयों का रस खाय ॥२॥

दरिया मन निज मन भया, त्रिकुटी मन्झ समाय ।
जो वहाँ से पाछा फिरै, तो मन का मन हो जाय ॥३॥
दरिया देखे दोय पख, त्रिकुटी सन्धि मन्झार ।
निराकार एकै दिसा, एकै दिसा आकार ॥४॥
निराकार आकार विच, दरिया त्रिकुटी सन्ध ।
परे अस्थान जो सुरत का, उरे सो मन का बन्ध ॥५॥
मन बुध चित अहकार को, है त्रिकुटी लग दौड़ ।
जन दरिया इनके परे, ब्रह्म सुरत की ठौड़ ॥६॥
मन बुध चित अहकार यह, रहै अपनी हद माँहि ।
आगे पूरन ब्रह्म है, सो इनको गम नांहि ॥७॥
मन बुध चित अहंकार के, सुरत सिरोमन जान ।
ब्रह्म सरोवर सुरत के, दरिया सन्त प्रमान ॥८॥
मन बुध चित अहकार यह, रहै सुरत के मांहि ।
सुरत मिली जाय ब्रह्म में, जहँ कोई दूजा नांहि ॥९॥
ममा मेरु से बावड़ै, त्रिकुटी लग ओंकर ।
जन दरिया इनके परे, ररंकार निरधार ॥१०॥
दरिया त्रिकुटी हद्द लग, कोई पहुंचै सन्त सयान ।
आगे अनहद ब्रह्म है, निराधार निरबान ॥११॥
दरिया त्रिकुटी के परे, अनहद ब्रह्म अलेख ।
जहाँ सुरत गैली भई, अनुभव पद को देख ॥१२॥

रतन अमोलक परख कर, रहा जौहरी थाक ।
दरिया तहँ कीमत नहीं, उनमुन भया अबाक ॥१३॥

इड़ा पिंगल सुषमना, त्रिकुटी सन्धि मन्झार ।
दरिया पूरन ब्रह्म के, यह भी उल्ली वार ॥१४॥

सुरत उलट आठों पहर करत ब्रह्म आराध ।
दरिया तब ही देखिये, लागी सुन्न समाध ॥१५॥

सुरत ब्रह्म का ध्यान धर, जाय ब्रह्म में पर्स ।
जन दरिया जहँ एकसा, दिवस एक सौ बर्स ॥१६॥

ररंकार धुन हौद में, गरक भया कोई दास ।
जन दरिया व्यापै नहीं, नींद भूख और प्यास ॥१७॥

जन दरिया आकास लग, ओंकर का राज ।
महासुन्न तिसके परे, ररकार महाराज ॥१८॥

दरिया सुरति सिरोमनी, मिली ब्रह्मसरोवर जाय ।
जहँ तीनों पहुंचै नहीं, मनसा वाचा काय ॥१९॥

काया अगोचर मन्न अगोचर, सब्द अगोचर सोय ।
जन दरिया लवलीन होय, पहुँचेगा जन कोय ॥२०॥

धरती गगन पवन नहीं पानी, पावक चन्द न सूर ।
रात दिवस की गम नहीं, जहँ ब्रह्म रहा भरपूर ॥२१

ररंकार सतगुरु ब्रह्म, दरिया चेला सुर्त ।
जैसा मिला तैसा भया, ज्यों संचे माँहि भर्त ॥२२॥

दरिया सूरति सर्पनी, चढ़ी ब्रह्म के मांय।
जाय मिली परब्रह्म से, निरभय रही समांय ॥२३॥

दरिया देखत ब्रह्म को, सुरत भई भयभीत।
तेज पुञ्ज रवि अगनी बिन, जहँ कोई उष्न न सीत ॥

पाप पुन्न सुख दुख नहीं, जहँ कोई कर्म न काल।
जन दरिया जह पड़त है, हीरों की टकसाल ॥२५॥

सुरत निरत परचा भया, अरस परस मिल एक।
जन दरिया बानक बना, मिट गया जन्म अनेक।२६।

तज विकार आकार तज, निराकार को ध्याय।
निराकार में पैठकर, निराधार लौ लाय ॥२७॥

सुरत मिली जाय ब्रह्म से, अपनो इष्ट संभाल।
जन दरिया अनुभव सब्द, जहँ दीखै काल विसाल।२८।

सुरत मिली जाय ब्रह्म से, मन बुध को दे पूठ।
जन दरिया जहँ देखिये, कथनी बकनी झूठ ॥२९॥

दरिया जहँ लग गगन है, जहँ लग सुरत निवास।
इनके आगे सुन्न है, जहँ प्रेम भाव परकास ॥३०॥

दरिया अनहद अगनी का, अनुभव धूवाँ जान।
दूरा सेती देखिये, परसे होय पिछान ॥३१॥

मान बड़ा अनुभव सब्द, दूर देशान्तर जाय।
अनहद मेरा साइयाँ, घट में रहा समाय ॥३२॥

प्रथम ध्यान अनुभव करै, जासे उपजै ज्ञान ।
दरिया बहुता करत है, कथनी में गुजरान ॥३३॥

अनुभव झूठा थोथरा, निरगुन सच्चा नाम ।
परम जोत परचै भई, तो धूवाँ से क्या काम ॥३४॥

आँखों से दीखै नहीं, सब्द न पावै जान ।
मन बुध तहँ पहुंचै नहीं, कौन कहै मेलान ॥३५॥

भाव मिलै परभाव से, धर कर ध्यान अखण्ड ।
दरिया देखै ब्रह्म को, न्यारा दीखै पिण्ड ॥३६॥

भाव करम सुख दुख नहीं, नहीं कोई पुन्न न पाप ।
दरिया देखै सुन्न चढ़, जहँ आपहि उर रहा आप ।३७।

अगम दलीचा अगम घर, जहँ कोई रूप न रेख ।
जन दरिया दुविधा नहीं, स्वामी सेवक एक ॥३८॥

सुन्न मण्डल में परघटा, प्रेम कथा परकास ।
बकता देव निरञ्जना, श्रोता दरियादास ॥३९॥

पन्छी उड़ै गगन में, खोज मँडै नहीं माँहि ।
दरिया जल मे मीन गति, मारग दरसै नाँहि ॥४०॥

मन बुध चित पहुंचै नहीं, सब्द सकै नहीं जाय ।
दरिया धन वे साधवा, जहाँ रहे लौ लाय ॥४१॥

दरिया सुन्न समाध की, महिमा घनी अनन्त ।
पहुँचा सोई जानसी, कोई कोई बिरला सन्त ॥४२॥

एक एक को ध्याय कर, एक एक आराध ।
एक एक से मिल रहे, जाका नाम समाध ।।४३।।

भाव मिलै परभाव से, परभाये परभाय ।
दरिया मिलकर मिल रहै, तो आवागवन न साय ।४४।

पाँच तत्त गुन तीन से, आतम भया उदास ।
सरगुन निरगुन से मिला, चौथे पद में बास ।।४५।।

माया तहाँ न सँचरै, जहाँ ब्रह्म का खेल ।
जन दरिया कैसे बनै, रवि रजनी का मेल ।।४६।।

जीव जात से बीछुड़ा, धर पञ्च तत्त का भेख ।
दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख ।।४७।।

जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम ।
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद मे बिसराम ।।४८।।

※ हँस उदास का अग ※

कवहुक भरिया समुन्द सा, कब हुक नाहिं छांट ।
जन दरिया इत उलरता, ते कहिये किरकांट ।।१।।

किरकाँट्या किस काम का, पलट करै बहुरग ।
जन दरिया हँसा भला, जद तद एकै रग ।।२।।

एक रंग उलटी दसा, भीतर भरम न भाल ।
जन दरिया निज दास का, तन मन मता मराल ।।३।।

दरिया हँसा ऊजला, बगुलहु उज्जल होय ।
दोनों एकहि सारिखा, परचे जै पारख जोय ॥४॥

दरिया बगुला ऊजला, उज्जल ही होय हँस ।
वे सरवर मोती चुगे, वाके मुख में मँस ॥५॥

वाका चेजा ऊजला, वाका खाज निषेद ।
जन दरिथा कैसे बनै, हँस बगुल के भेद ॥६॥

जन दरिया हँसा तना, देख बड़ा ब्यौहार ।
तन उज्जल मन ऊजला, उज्जल लेत अहार ॥७॥

बाहर से उज्जल दसा, भीतर मैला अंग ।
ता सेती कौवा भला, तन मन एकहि रंग ॥८॥

बाहर से उज्जल दसा, अन्तर उज्जल होय ।
दरिया सोना सोल्हवाँ, काँट न लागे कोय ॥९॥

मान सरवर मोती चुगे, दूजा नांहि खान ।
दरिया सुमिरै राम को, सो निज हँसा जान ॥१०॥

मान सरोवर बासिया, छीलर रहै उदास ।
जन दरिया भज राम को, जब लग पिञ्जर साँस ॥११॥

※ सुपने का अंग ※

दरिया सोता सकल जग, जागत नाँहि कोय ।
जागे में फिर जागना, जागा कहिये सोय ॥१॥

साध जगावे जीव को, मत कोई उट्ठै जाग ।
जागे फिर सोवे नहीं, जन दरिया बड़ भाग ॥२॥

माया मुख जागे सबै, सो सूला कर जान ।
दरिया जागे ब्रह्म दिस, सो जागा परमान ॥३॥

दरिया तो साँची कहै, झूठ न मानो कोय ।
सब जग सुपना नींद में, जान्या जागन होय ॥४॥

साँख जोग नवधा भगति, यह सुपने की रीत ।
दरिया जागे गुरुमुखी, तत्त नाम से प्रीत ॥५॥

दरिया सतगुरु कृपा कर, सब्द लगाया एक ।
लागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक ॥६॥

※ राग भैरव ※

सब जग सोता सुध नहीं पावै ।
बोलै सो सोता बरड़ावै ॥टेक॥

संसय मोह भरम की रैन ।
अन्ध धुन्ध होय सोते अैन ॥१॥

जप तप सँजम औ आचार ।
यह सब सुपने के व्यौहार ॥२॥

तीर्थ दान जग प्रतिमा सेवा ।
यह सब सुपना लेवा देवा ॥३॥

कहना सुनना हार और जीत ।
पछा पछी सुपनो विपरीत ॥४॥
चार बरन और आश्रम चार ।
सुपना अन्तर सब व्यौहार ॥५॥
खट दरसन आदि भेदभाव ।
सुपना अन्तर सब दरसाव ॥६॥
राजा राना तप बलवन्ता ।
सुपना मांहि सब बरतन्ता ॥७॥
पीर औलिया सबै सयाना ।
ख्वाब मांहि बरते विध नाना ॥८॥
काजी सैयद औ सुलताना ।
ख्वाब मांहि सब करत पयाना ॥९॥
साँख जोग औ नौधा भक्ति ।
सुपना में इनकी इक बिरती ॥१०॥
काया कसनी दया औ धर्म ।
सुपने सुरग बन्धन कर्म ॥११॥
काम क्रोध हत्या पर नास ।
सुपना मांहि नरक निवास ॥१२॥
आदि भवानी सकर देवा ।
यह सब सुपना लेवा देवा ॥१३॥

ब्रह्म बिस्नू दस औतार ।
सुपना अन्तर सब व्यौहार ॥१४॥

उद्भिज सेतज जेरज अण्डा ।
सुपन रूप वरते ब्रह्म मण्डा ॥१५॥

उपजै बरते अरु बिनसावै ।
सुपने अन्तर सब दरसावै ॥१६॥

त्याग ग्रहन सुपना व्यौहारा ।
जो जागा सो सबसे न्यारा ॥१७॥

जो कोई साध जागिया चावै ।
सो सतगुरु के सरनै आवै ॥१८॥

कृत कृत बिरला जोग सभागी ।
गुरुमुख चेत सब्द मुख जागी ॥१९॥

संसय मोह भरम निस नासा ।
आतम राम सहज परकासा ॥२०॥

राम सम्भाल सहज धर ध्यान ।
पाछे सहज प्रकासै ज्ञान ॥२१॥

जन दरियाव सोई बड़ भागी ।
जाको सुरत ब्रह्म संग लागी ॥२२॥

❋ साध का अंग ❋

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेख ।
निःकपटी निरसंक रहे, बाहर भीतर एक ॥१॥
सतगुरु को परसा नहीं, सीखा सब्द सुहेत ।
दरिया कैसे नीपजै, तेह बिहूना खेत ॥२॥
सत्त सब्द सतगुरु मुखी, मत गयन्द मुख दन्त ।
यह तो तोड़ै पौल गढ़, वह तोड़ै करम अनन्त ॥३॥
दाँत रहै हस्ती बिना, तो पौल न टूटे कोय ।
कै कर धारै कामिनी, कै खेलारां होय ॥४॥
साध कह्यो भगवन्त कह्यो, कहै ग्रन्थ और वेद ।
दरिया लहै न गुरु बिना, तत्त नाम का भेद ॥५॥
राजा बाँटै परगना, जो गढ़ को पति होय ।
सतगुरु बाँटै राम रस, पीवै बिरला कोय ॥६॥
मतबादी जानै नहीं, ततबादी की बात ।
सूरज ऊगा उल्लवा, गिनै अन्धारी रात ॥७॥
भीतर अंधारी भीत सो, बाहर ऊगा भान ।
जन दरिया कारज कहा, भींतर बहुलो हान ॥८॥
सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात ।
दरिया बाहर चाँदना, भीतर काली रात ॥९॥
बाहर कुछ समझै नहीं, जस रात अंधेरी होत ।
जन दरिया भय कुछ नहीं, भीतर जागै जोत ॥१०॥

※ चिन्तामणि का अंग ※

चिंतामणि चौकस चढ़ी, सही रंक के हाथ ।
ना काहू के सँग मिलै, ना काहू से बात ॥१॥

दरिया चिंतामणि रतन, धरयो स्वान पै जाय ।
स्वान सूंध कानै भया, टूकां ही की चाय ॥२॥

दरिया हीरा सहस दस, लख मण कंचन होय ।
चिंतामणि एकै भला, ता सम तुलै न कोय ॥३॥

※ अपारख का अंग ※

हीरा हलाहल क्रोड़ का, जा की कौडी मौल ।
जन दरिया कीमत बिना, बरतै डाँवाँडोल ॥१॥

हीरा लेकर जौहरी, गया गँवारै देस ।
देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख न लेस ॥२॥

दरिया हीरा क्रोड़ का, कीमत लखै न कयो ।
जवर मिलै कोई जौहरी, तबही पारख होय ॥३॥

आइ पारख चेतन भया, मन दे लीना मोल ।
गाँठ वाँध भीतर धसा, मिट गई डाँवाँडोल ॥४॥

कंकर वाँधा गाँठड़ी, कर हीरा का भाव ।
खोला कंकर नीसरा, झूठा यही सुभाव ॥५॥

❋ उपदेश का अंग ❋

जन दरिया उपदेस दे, जा के भीतर चाय ।
नातर गैला जागत से, बक बक मरै बलाय ॥१॥

दरिया बहु बक वाद तज, कर अनहद से नेह ।
औंधा कलसा ऊपरे, कहा बरसावै मेह ॥२॥

बिरही प्रेमी मोम- दिल, जन दरिया निः काम ।
आसिक दिल दीदार का, जासे कहिये राम ॥३॥

जन दरिया उपदेश दे, भीतर प्रेम सधीर ।
गाहक होय कोई हींग का, कहा दिखावै हीर ॥४॥

दरिया गैला जगत से, समझ औ मुख से बोल ।
नाम रतन की गाँठड़ो, गाहक बिन मत खोल ॥५॥

दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समझाय ।
चलना है दिस उत्तर को, दक्खिन दिस को जाय ॥६॥

दरिया गैला जगत को, कैसे दीजै सीख ।
सौ कौसाँ चालन करे, चाल न जाने भीख ॥७॥

दरिया गैला जगत से, कैसे कीजै हेत ।
जो सौ बेरा छानिये, तौहू रेत की रेत ॥८॥

दरिया गैला जगत को, क्या कीजै सुलझाय ।
सुलझाया सुलझै नहीं, फिर सुलझ सुलझउलझाय ।९।

दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समुझाय ।
रोग नीसरै देह में, पाहन पूजन जाय ॥१०॥
भेड़ गती संसार की, हारे गिनै न हाड ।
देखा देखि परबत चढ़ै, देखा देखि खाड ॥११॥
दरिया सौ अंधा बिचै, एक सुझा को जाय ।
वह तो बात देखी कहै, वा के नाहीं दाय ॥१२॥
दरिया सारा अंध को कहै देख देख कुछ देख ।
अंध कहै सूझै नहीं, कोई पूरबला लेख ॥१३॥
कचन कँचन ही सदा, काँच काँच सो काँच ।
दरिया झूठ सो झूठ है, साँच साँच सो साँच ॥१४॥
जन दरिया निज सांच का, साँचा ही व्यौहार ।
झूठ झूठ ही नीवड़ै जामें फेर न सार ॥१५॥
दरिया सांच न संचरै, जब घर घलै झूट ।
सांच आन परगट हुआ, तब झूठ दिखावे पूठ ॥१६॥
जन दरिया इस झूठ को, डागल ऊपर दौड़ ।
सांच दौड़ चौगान में, सो संतां सिर मौड़ ॥१७॥
कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी सांच ।
दरिया देखे जानिये, यह कञ्चन यह कांच ॥१८॥
साध पुरुष देखी कहै सुनी कहैं नहि कोय ।
कानों सुनी सो झूठ सब, देखी सांची होय ॥१९॥

दरिया आगे सांच के, झूठ किती एक बात ।
जैसे ऊगे भान के, रात अँधारी जात ॥२०॥
दरिया सांचा राम, है और सकल ही झूठ ।
सनमुख रहिये राम से दे सबही को पूठ ॥२१॥
दरिया साँचा राम है, फिर साँचा है संत ।
वह तो दाता मुक्ति का वह-मुख राम कहन्त ॥२२॥
दरिया गुरु दरियाव की, साध चहूँ दिस नहर ।
संग रहै सोई पियै नहिं फिरै तृषाया बहर ॥२३॥
साधु सरोवर राम जल, रागा द्वेस कुछ नाहिं ।
दरिया पीवे प्रीत कर, सो तिरपत हो जाहिं ॥२४॥
दरिया हरि गुन गाय के, बहुता अंग सरीर ।
बलिहारी उस अंग की, खैचा निकसै खीर ॥२५॥
साधु जल का एक अंग, बरतै सहज सुभाव ।
ऊँची दिसा न सचरै, निवन जहां ढलकाव ॥२६॥
दरिया नाके पौल के, इक पंछी आवै जाय ।
ऐसे साधू जगत में, बरतै सहज सुभाय ॥२७॥
मच्छी पंछी साध का, दरिया मारग नाहिं ।
अपनी इच्छा से चलै, हुकम धनी के माहिं ॥२८॥
साधू चन्दन बावना, एक राम की आस ।
जन दरिया एक राम बिन, सब जाग आक पलास ।२९।

नारी आवे प्रीत कर, सतगुरु परसे आण।
दरिया हित उपदेश दे माय वहन धी जाण ॥३०॥

नारी जननी जगत की, पाल पोष दे पोस।
मूरख राम विसार के, ताहि लगावे दोस ॥३१॥

माला फेरे क्या भया, मन फाटै कर भार।
दरिया मन को फेरिये, जामें बसे बिकार ॥३२॥

जो मन फेरै राम दिस, कल विष नासै धोय।
दरिया माला फेरते, लोग दिखावा होय ॥३३॥

कण्डी माला काठ की, तिलक गार का होय।
जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुंचै कोय ॥३४॥

पाँच सात साखी कही पद गाया दस दोय।
दरिया कारज ना सरै, पेट भराई होय ॥३५॥

साँख जोग पपील गति बिघन पड़ै वहु आय।
बावल लागै गिर पडै, मंजिल न पहूँचै जाय ॥३६॥

भक्ति सार विहग गति, जहँ इच्छा तहँ जाय।
श्री सतगुरु रक्छा करै, विघन न व्यापै ताय ॥३७॥

※ पारस का अंग ※

जन दरिया षट् धातु का, पारस कीया नाँव।
पारस सो कंचन भया, एक रंग इक भाव ॥१॥

दरिया छुरी कसाब की, पारस परसै आय ।
लोह पलट कंचन भया, आमिष भखा न जाय ।।२।।

लोह काला भीतर कठिन, पारस परसै सोय ।
उर नरमी अति निरमला, बाहर पीला होय ।।३।।

पारस परसा जानिये, जो पलटै अगौ -अंग ।
अंगो - अंग पलटै नहीं, तो है झूठा संग ।।४।।

पारस जाकर लाइये जाके अंग में धात ।
क्या लावे पाषान को घस घस होय संताप ।।५।।

दरिया काँटी लोह की, पारस परसै सोय ।
धात बस्तु भीतर नहीं, कैसे कंचन होय ।।६।।

❋ चेतावणी का अंग ❋

सतगुरु ज्ञान विचार के, तजिये आल जंभाल ।
दरिया विलम न कीजीये, बेगा राम संभाल ।।१।।

दरिया सास शरीर में, जब लग हरि गुण गाय ।
जीव वटाउ पाहूणों, क्या जाणू कद जाय ।।२।।

झूठी कुल की सम्पदा, झूठा तन धन धाम ।
दरिया साचा देखिया, साहिबजी का नाम ।।३।।

दरिया ओ जग झूठ है, जैसे नीरकुरंग ।
राम सुमिर जग जीत ले, कर सतगुरु का संग ।।४।।

लोक लाज कुटम्ब सूँ दरिया मोहबत तोड़ ।
साचा सतगुरु राम जी, जा सूँ हितकर जोड़ ।।५।।
घर धन्धे में पच मुवा, आठ पोहर बेकाम ।
दरिया मूरख ना कहे, मुख सूँ कदे न राम ।।६।।
करम किया हुसियार, होय, राम न कह्यो लगार ।
छोड़ गये धन धाम को, बान्ध चल्यो सिर भार ।।७।।
दरिया गरव न कीजिये, झूठा तन के काज ।
काल खड़ो शिर ऊपरे, निसदिन करे अकाज ।।८।।
तीन लोक चवदा भवन, राव रंक सुलतान ।
दरिया बचे को नहीं, सब जवरे को खान ।।९।।
जो दीखे विनसे सही, माया तरणा मण्डाण ।
जन दरिया थिर है सदा, राम शब्द निर्वाण ।।१०।।
राम शब्द निर्वाण है, सकल काल को काल ।
जन दरिया भज लीजिये, पूरण ब्रह्म नेहकाल ।।११
जनम मरण सूँ रहित है, खण्डे नहीं अखण्ड ।
जन दरियां भज राम जी, जिंन्हा रची ब्रह्मण्ड ।।१२।।
सकल आंदि सबके परे, है अविनासी धाम ।
"दरियां" उपजे ना खपे, ब्रह्म सरुपी राम ।।१३।।

※ साच का अंग ※

उत्तम काम घर में, करे, त्यागी सबको त्याग ।
दरिया सुमिरे राम को, दोनों ही बड़भाग ॥१॥

मिधम काम घर में करे, त्यागी गृह बसाय ।
जन दरिया बिन बन्दगी, दोऊँ नरकां जाय ॥२॥

दरिया गृही साधको, माया बिना न आब ।
त्यागी होय संग्रह करे, ते नर घणा खराब ॥३॥

गृही साध माया संचे, लागत नांहि दोख ।
त्यागी होंय संग्रह करे, बिगड़े सब ही थोख ॥४॥

हाथ काम मुख राम है हिरदे साची प्रीत ।
जन दरिया गृही साध की, याहि उत्तम रीत ॥५॥

दस्त सूँ दो जग करे मुख सूँ सुमिरे राम ।
ऐसा सौदा ना बणे, लाखों खरचे दाम ॥६॥

※ नाम महातम का अंग ※

सोहि कंथ कवीर का, दादू का महाराज ।
सब सन्तन का बालमा, दरिया का सिरताज ॥१॥

दरिया तीनों लोक में, ढूँढा सब ही धाम ।
तीरथ बरत विधी करत बहु, बिना राम किस काम।२।

तीन लोक चवदा भवन, दरिया देख्या जोय ।
एक राम सरीखा राम है, इसा न दूजा कोय ॥३॥
तीन लोक चवदा भवन, ढूँढा सबही धाम ।
दरिया देख्या निरत कर, एक राम सरीखा राम ॥४॥
दरिया परचे नाम के, दूजा दिया न जाय ।
या पर तन मन वार के, राखीजे उर मांय ॥५॥
कंचन भाजन विष भरा, सो मेरे किस काम ।
दरिया बासण सो भला, जांमें इमृत राम ॥६॥
जो काया कंचन भई, रतनो जड़िया चाम ।
जन दरिया किस काम की, जां मुख नांहि राम॥७॥
राम सहित मध्यम भला, गलत कोढ़ होय अंग ।
उत्तम कुल कुँ त्याग के, रहिये उनके सङ्ग ॥८॥
कस्तूरी कुँडे भरी, मेली ऊंडे ठांम ।
दरिया छानी क्यों रहे, साख भरे सब गॉम ॥९॥
कूड़ो आलो चाम को, भीतर भरचा कपूर ।
दरिया बर्तन क्या करे, वस्तु दिखावे नूर ॥१०॥
कूड़ो आलो चाम को, जाँ में उत्तम काह ।
दरिया संगत घीव की, सिर ले चाल्या साह ॥११॥
जन दरिया पुन्न पाप का, थोथे तोरां झूँझ ।
करे दिखावा ओर को, आप समावे गुँझ ॥१२॥

पाप पुन्न सुख दुख की अरट भरत है साख ।
जन दरिया रह राम सूँ, या सब ही को राख ॥१३॥
जीव बिलम्ब्या जीव से, कारज सरे न कोय ।
जन दरिया सतगुरु मिले ब्रह्म विलम्बन होय ॥१४॥
जीव विलम्बन झूठ है, मिल मिल भीछड़ जाय ।
ब्रह्म बिलम्बन साच है, रह उर मांय समाय ॥१५॥
सकल आदि सबके परे, है अबिनासी राम ।
उपजे वरते विनसजाय, सो माया रूपी काम ॥१६॥
दरिया दस दरवाज मैं, ताबिच पढ़त निमाज ।
'र' रो 'म' मो इक रटत है, और सकल बेंकाज १७॥
जन दरिया कण नीपजे, सिरो पान गया सूख ।
हरियाली मिट कन भया, भीतर भागी भूख ॥१८॥
रवि शशि चाले पूर्व दिस, पच्छिम कहें सब लोय ।
दरिया या गत साध की, लखे सो विरला कोय ॥१९॥
दरिया सुमिरे राम को, पारख कीजे जाय ।
श्रवण ढल नेतर ढले, देह रसना ढल जाय ॥२०॥
दरिया सतगुरु शब्द ले, करे राम संयोग ।
ज्ञान खुले अरु बल बढ़े, देही रहे निरोग ॥२१॥
दरिया प्रेमी आतमा, करे भजन को गाड ।
आवे उबासी चौगुनी, भाजन लागे हाड ॥२२॥

बड़ के बड़ लागे नहीं, बड़ के लागे बीज ।
दरिया नाना होय कर, राम नाम गह चोज ।।२३।।

रसना अन्तर भाईये, लोक लाज सब खोय ।
"दरिया"पानी प्रेम का, सींच सहज बड़होय ।।२४।।

"दारिया" तीनी लोक में, देखा दोय विधान ।
गुजरानी गुजरान में, गलतानी गलतान ।।२५।।

गुजरानी गलतान की, दरिया यह पहचान ।
आन रत्ता गुजरान सब, कोई राम रत्ता गलतान ।२६।

पाय बिसारे राम को, भिष्ट होत है सोय ।
रवि दीपक दोनों बिना, अन्धकार ही होय ।।२७।।

पाय विसारे राम को, बैठा सब ही खोय ।
'दरिया' पडे आकास चढ़, रावण हार न कोय ।।२८।।

पाप बिसारे राम को, महा अपराधी सोय ।
'दरिया' तीनों लोक में, ईस्यो न दूजो कोय ।।२९।।

पाय बिसारे राम को, तीन लोक तल सोय ।
जन दरिया अघ जीव का, दिन दिन दूणा होय ।।३०।।

दरिया निरगुण नाम है, सरगुण सतगुरु देव ।
ये सुमरावे राम को, वो है अलख अभेव ।।३१।।

※※
※※

❋ मिश्रित साखी का अग ❋

फूलों में फल मानकर, भली विभूति जाय ।
अति शीतल सुगन्धता, नवधा भगति उपाय ॥१॥

फूलों में फल मानकर, भली विभूति येह ।
ता सेती मऊवा भला, सकल त्याग फल लेह ॥२॥

दरिया धन बहुता मिला, तू नहीं जाणत मोय ।
ताते उनत रहित है, साच कहत हूँ तोय ॥३॥

जन दरिया अग साध का, शीतल वचन शरीर ।
निरमल दसा कमोदिनी, मिल्यां मिटावे पीर ॥४॥

सकट पड़े जब साध पे, सब सन्तन के सोग ।
दरिया सहाय करे हरि, परचा माने लोग ॥५॥

बाताँ में ही बह गया, निकस गया दिन रात ।
दरिया मोलत पूरी भई, आण पड़ी जम घात ॥६॥

दरिया औषध राम रस, पीयां होत समाध ।
महारोग जामण मरण तेहि की लगे न व्याध ॥७॥

दरिया अमल है आसुरी, पीयां होत शैतान ।
राम रसायण जो पिवे, सदा छाक गलतान ॥८॥

'र' रा तो रब्ब आप है, 'म' मा मोहम्मद जाण ।
दोय हरफ के मायने, सब ही वेद पुराण ॥९॥

रं रंकार अनहद की, दरिया परख अवाज ।
और इष्ट पहुँचे नहीं, जहाँ राम का राज ॥१०॥
शिव ब्रह्मा अरु विष्णु का, ये ही उरे मँडाण ।
जन दरिया इनके परे, निरगुण का निसाण ॥११॥
दरिया देही गुरुमुखी, अविनासी की हाट ।
सन्मुख होय सोदा करे, सहजां खुले कपाट ॥१२॥
अरंड आक अरु वांस तरु होता चन्दन संग ।
गाँठ गंठीला थोथरा, पलटा नाहिं अंग ॥१३॥
उभय करम बंधन करे, नाम करे भय हाण ।
दरिया ऐसे दास के, वरते खेंचाताण ॥१४॥
दरिया दुखिया जव लगी, पखा पखी बेकाम ।
सुखीया जब ही होयगा, राज निकण्टा राम ॥१५॥
दिष्ट न मुष्ट न अगम है, अति ही करड़ा काम ।
दरिया पूरण ब्रह्म में, कोई सन्त कर विश्राम ॥१६॥
है कोई अवगुण दास में, नहीं राम को दोस ।
साधु चाले पेंड दस, हरि आवे सौ कोस ॥१७॥
दरिया साधु कृपा करे तो तारे संसार ।
तारणहारा राम है, जा में फेर न सार ॥१८॥
दरिया गम दरियाव की, खबर मरजीवा लावे ।
तन की आसा छोड़ ही, तव हीरा पावे ॥१९॥

इ गावे साखी कहे, मन्न रिझावे आन ।
रिया कारज ना सरे, देह करि गुजरान ।२०।
रिया दाई बांझड़ी, आवे व्यावर संग ।
रद मरम जाणे नहीं, करे रंग में भंग ।२१।

हु विधन माया करे, निस दिन झंपे काल ।
रिया कुण बल साध के, रछक राम दयाल ।।२२।।
रिया देखी बानगी, वेस मुलाई नाहिं ।
न्य धन्य वे साधवां, गरक भया ता माहिं ।२३।

रिया काया कारवि, औगण ही की रास ।
औगण ऊपर गुण करे, ता जन को स्यबास ।२४।

किसकी नींदू किसकी बंदू, दोनों पल्ला भारी ।
निरगुण तो है पिता हमारा, सरगुण है महतारि ।२५।

जन दरिया के दोय पख, दोनूँ उत्तम सार ।
निरगुण मेरा शीश पर, सरगुण उर आधार ।२६।

दरिया भरिया नाम सूँ, भरिया हिलोला लेह ।
जो कोई प्यासा नाम का, ताहि को भर देह ।।२७।।
दरसण आडा सहस पाप, परसण आड़ा लाख ।
सुमिरण आडा क्रोड़ है, जन दरिया की साख ।।२८।।

दरिया इन्द्र पधारिया, कर धरती सूँ हेत ।
सब जीवां आनन्द भवा, साँडे दर मुख रेत ।।२९।।

दरिया भरिया रहत है, भगत मुगत का माट ।
साधु पीवे सुरत सूँ, देखे औघट घाट ॥३०॥

पंचा माहि परण के, लावे गह कर हाथ ।
दरिया खेलत और सूँ, सुख पावे नहीं नाथ ॥३१॥

पति कू भूला ना बणे, अन्त होगी खवार ।
चौरसी के चौंहटे, दरिया पड़सी मार ॥३२॥

दरिया पतिवरत राम सूँ, दूजा सब व्यभिचार ।
दूजा देखे वीर सम, गड़णहार भरतार ॥३३॥

जतन जतन कर जोड़ ही दरिया हित चित लाय ।
माया संग न चाल ही, जावे नर छिटकाय ॥३४॥

सूई डोरा साह का, सुर्ग सिधाया नांह ।
जन दरिया माया यहू, रही यहाँ की यहां ॥३५॥

मोटी माया सब तजे, झिणी तजी न जाय ।
दरिया झिणी सो तजे, जौ रहे राम लिवलाय ॥३६॥

रं रकार मुख उचरे, पाले शील सन्तोष ।
दरिया जिनको धिन्न है, सदा रहे निर्दोष ॥३७॥

**
**

* राग भैरव *

पद [१]

आदि अनादि मेरा सांई । टेक ।

दृष्टि न मुष्टि है अगम अगोचर,
यह सब माया उनहीं माई ॥१॥
जो बन माली सींचै मूल,
सहजै पिवै डाल फल फूल ॥२॥
जो नरपति यो गिरह बुलावै,
सेना सकल सहज ही आवै ॥३॥
जो कोई, करे भानु प्रकाशा,
तो निश तारा सहजहि नाशा ॥४॥
गरुड़ पंख जो घर में लावै,
सर्प जाति रहने नहीं पावै ॥५॥
दरिया सुमिरै एकहि राम,
एक राम सारै सब काम ॥६॥

पद [२]

जो सुमिरू तो पूरण राम ॥टेक॥

अगम अपार पारन हीं जाको,
है सब संतन का विश्राम ॥१॥

कोटि विष्णु जाके अगवानी,
शंख चक्र सत सारंग पानी ।।२।।
कोटि कारकुन विधि कर्मधार,
प्रजापति मुनि बहु विस्तार ।।३।।
कोटि काल शकर कोतवाल,
भैरव दुर्गा धरम बिचार ।।४।।
अनंत संत ठाढ़े दरबार,
आठ सिद्धि नौ निद्धि द्वारपाल ।५।
कोटि वेद जा को जश गावै,
विद्या कोटि जाको पार न पावै ।।६।।
कोटि आकाश जाके भवन द्वारे,
पवन कोटि जाके चंवर डुरावे ।।७।।
कोटि तेज जाके तपे रसोय,
वरुण कोटि जाके नीर समोय ।।८।।
पृथ्वी कोटि फुलवारी गंध,
सुरत कोटि जाके लाया बंध ।।९।।
चंद सूर जाकु कोटि चिराक,
लक्ष्मी कोटि जाके रांधै पाक ।।१०।।
अनंत सत और खिलवत खाना,
लख चौरासी पलै दिनाना ।।११।।

कोटि पाप कांपै बल छीन,

कोटि धरम आगे आधीन ॥१२॥

सागर कोटि जाके कलशधार,

छप्पन कोटि जाके पनिहार ॥१३॥

कोटि संतोष जाके भरे भंडार,

कोठि कुबेर जाके माया धार ॥१४॥

कोटि स्वर्ग जांके सुख रूप,

कोटि नर्क जाके अंध कूप ॥१५॥

कोटि करम जाके उत्पत कार,

किला कोटि बरतावनहार ॥१६॥

आदि अंत मध्य नयीं जाको,

कोई पार न पावै ताको ॥२७॥

जन दरिया के साहब सोई,

ता पर और न दूजा कोई ॥१८॥

पद [३]

जांके उर उपजी नहीं भाई,

सो क्या जाने पीर पराई ॥टेक॥

ब्यावर जाने पीर की सार,

बांझ नार क्या लखै विकार ॥१॥

पतिव्रता पति को व्रत जानै,

व्यभिचारिन मिल कहा बखानै ।।२।।

हीरा को पारख जौहरी जानै,

मूरख निरख के कहा बतावै ।।३।।

लागा घाव करावै सोई,

कोगत हारके दर्द न होई ।।४।।

राम नाम मेरा प्राण- अधार,

सोई राम रस पीवनहार ।।५।।

जन 'दरिया' जानैगा सोई,

प्रेम की भाल कलेजे पोई ।।६।।

पद [४]

जो धुनियां तौ भी मैं राम तुम्हारा,

अधम कमीन जाति मति हीना,

तुम तो हो सिरताज हमारा ।।टेक।।

काया का जन्त्र शब्द मन मुठिया,

सुषमन तांत चढ़ाई ।

गगन मण्डल में धुनुआं वैठा,

मेरे सतगुरु कला सिखाई ।।१।।

पाप पान हर कुबुध कांकड़ा,
सहज सहज झड़ जाई ।
घूण्डी गाँठ रहन नहीं पावै,
इकरंगी होई आई ।२।
इकरंग हूआ भरा हरि चोला,
हरि कहै क़हा दिलाऊँ ।
मैं नाहीं मेंहनत का लोभी,
बक़सो मौज भक्ति निज पाऊँ ।३।
किरपा कर हरि बोले बानि,
तुम तो हो मम दास ।
दरिया कहै मेरे आतम भीतर,
मेलौ राम भक्ति विश्वास ।४।

पद [५]

आदि अन्त मेरा है राम,
उन बिन और सकल बेकाम ।१।
कहा करूँ तेरा वेद पुराना,
जिन है सकल जगत भरमाना ।।२।।
कहा करूँ तेरी अनुभव बानी,
ज़िनते मेरी शुद्धि भुलानी ।।३।।

कहा करूँ ये मान बड़ाई,

राम बिना सब ही दुखदाई ॥४॥

कहा करूँ तेरा सांख्य और योग,

राम बिन सब बन्धन रोग ॥५॥

कहा करूँ इन्द्रन का सुख,

राम बिना देवा सब दुख ॥६॥

दरिया कहै राम गुरु मुखिया,

हरि बिन दुखी राम संग सुखिया॥७॥

※ राग पञ्चम ※

पद [६[

पतिव्रता पति मिली है लाग,

जहँ गगन मण्डल में परम भाग ।टेक।

जहं जल बिन कंवला बहु अनन्त,

जहं बपु बिन भौंरागोह करन्त ॥१॥

अनहद बानी अगम खेल,

जहं दीपक जलै बिन बाती तेल ॥२॥

जहं अनहद शब्द है करत घोर,

बिन मुख बोले चात्रिक मोर ॥३॥

बिन रसना गुन उदत नार,
पांव बिन पातर निरत कार ॥४॥

जहं जल बिन सरवर भरा पूर,
जहं अनन्त जात बिन चन्द सूर ॥५॥

बारह मास जहं ऋतु बसन्त,
ध्यान धरैं जहँ अनन्त सन्त ॥६॥

त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर,
बिन बादल बरषै मुक्ति नीर ॥७॥

अमृत धारा चलै सीर,
कोई पीवै बिरला सन्त धीर ॥८॥

ररंकार धुन अरूप एक,
सुरत गहो उनहो को टेक ॥९॥

जन दरिया वैराट चूर,
जहं बिरला पहूँचै सन्त सूर ॥१०॥

पद [७]

चल चल वे हंसा राम सिन्ध,
बागड़ में क्या रह्यो बन्ध ॥टेक॥

जहाँ निर्जल धरती बहुत धूर,
जहं साकित बस्ती दूर दूर ॥१॥

ग्रीष्म ऋतु में तपै भोम,
जह आतम दुखिया रोम रोम ॥२॥

भूख प्यास दुख सहै आन,
जहं मुकताहल नहीं खानपान ॥३॥

जउवा नारू दुखित रोग,
जहं मै तै बानी हरष सोग ॥४॥

माया बागड़ बरनी यह,
अब राम सिन्ध बरनूं सुन लेह ॥५॥

अगम अगोचर कथ्या न जाय,
अब अनुभव मांहींकहूं सुनाय ॥६॥

अगम पन्थ है राम नाम,
ग्रह बसौ जाय परम धाम ॥७॥

मान सरोवर बिमल नीर,
जहं हँस समागम तीर तीर ॥८॥

जहं मुकताहल बहु खानपान,
जह अवगत तीरथ नित स्नान ॥९॥

पाप पुन्न की नहीं छोत,
जहं गुरु शिष्य मेला सहज होत ॥१०॥

गुण इन्द्री मन रहे थाक,
जह पहुँ न सक्के वेद वाक ॥११॥

अगम देश जहं अभयराय,
जन दरिया सुरत अकेली जाय ॥१२॥

पद [८]

चल सूवा तेरे आद राज,
पिज्जरा में बैठा कौन काज ॥टेक॥

बिल्ली का दुख दहै जोर,
मारे पिज्जरा तोर तोर ॥१॥

मरने पहले मरो धीर,
जो पाछे मुक्ता सहज छीर ॥२॥

सतगुरु शब्द हृदे में धार,
सहजां सहजां करो उचार ॥३॥

प्रेम प्रबाह धसै जब आभ,
नाद प्रकाशै परम लाभ ॥४॥

फिर ग्रह बसावो गगन जाय,
जहं बिल्ली मृत्यु न पहूँचै आय ॥५॥

आम फलै जहं रस अनन्त,
जहं सुख में पावो परम तन्त ॥६॥

झिरमिर झिरमिर बरसै नूर,
बिन कर बाजै ताल तूर ॥७॥

जन दरिया आनन्द पूर,

जहं बिरला पहूँचै भाग सूर ॥८॥

* राग विहँगड़ा *

पद [६[

नाम बिन भाव करम नहीं छूटै ॥टेक॥

साध संगत और राम भजन बिन,

काल निरन्तर लूटै ॥१॥

मल सेती जो मल को धोवै,

सो मल कैसे छूटै ॥२॥

प्रेम का साबुन नाम का पानी,

दोय मिल तांता टूटै ॥३॥

भेद अभेद भरम का भाण्डा,

चौड़े पड़ पड़ फूटै ॥४॥

गुरु मुख शब्द गहै उर अन्तर,

सकल भरम से छूटै ॥५॥

राम का ध्यान तू धर रे प्राणी,

अमृत का मेंह बूटै ॥६॥

जन दरियाव अरप दे आपा,

जरा मरन तब छूटै ॥७॥

पद [१०]

दुनियाँ भरम भूल बौराई,
आतम राम सकल घट भीतर,
जाकी शुद्ध न पाई ।।टेक।।

मथुरा काशी जाय द्वारका,
अड़सठ तीरथ न्हावै।
सतगुरु बिन सोजी नहीं कोई,
फिर फिर गोता खावै ।।१।।

चेतन मुरत जड़ को सेवै,
बड़ा थूल मत गैला ।
देह अचार किया कहा होई,
भीतर है मन मैला ।।२।।

जप तप संजय काया कसनी,
सांख्य जोग व्रत दाना ।
यांते नहीं ब्रह्म से मेला,
गुण हर करम बन्धाना ।।३।।

बकता होय कर कथा सुनावै,
श्रोता सुनघर आवैं ।
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई,
कह सुन जनम गमावै ।।४।।

जन दरिया यह बड़ा अचम्भा,
कहै न समझै कोई ।
भेड़ पूँछ गहि सागर लांघे,
निश्चय डुबे सोई ॥५॥

पद [११]

मै तोहि कैसे बिसरुं देवा।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा,
तेभी बछै सेवा ॥टेक॥
शेष सहस मुख निशदिन ध्यावै,
आतम ब्रह्म न पावै ।
चांद सूर तेरी आरती गावै,
हृदय भक्ति न आवै ॥१॥
अनंत जीव जाकी करत भावना,
भरमत बिकल अयाना ।
गुरु प्रताप अखंड लिव लागी,
सो तेहि माँहि समाना ॥२॥
बैकुंठ आदि सो अंग माया का,
नरक अंत अंग माया ।
पार ब्रह्म सो तो अगम अगोचर,
कोई विरला अलख लखाया ॥३॥

जन दरिया यह अकथ कथा है,
अकथ कहा क्या जाई ।
पंछी का खोज मीन का मारग,
घट घट रह समाई ॥४॥

पद [१२]

जीव बटाऊ रे बहता भाई मारग माँहि ।
आठ पहर का चालना,
घड़ी एक ठहरै नाँहि ॥१॥
गरभ जनम बालक भयोरे, तरुनाये गर्भान ।
वृद्ध मृतक फिर गर्भ बसेरा,
यह मारग परमान ॥२॥
पाप पुन्न सुख दुख की करनी,
बेड़ी थारे लागी पांय ।
पंच ठगो के बस पड़्यो रे,
कब घर पहुंचै जाय ॥३॥
चौरासी बासो बस्यो रे, अपना कर कर जान ।
निश्चय निश्चय होय गोरे,
पद पहुंचै निर्बान ॥४॥
'राम बिना तो ठौर नहीं रे ।
जहं जावै तहं काल ।
जन 'दरिया मन उलट जगत सूं,
अपना राम सम्भाल ॥५॥

※ राग सोरठ ※

पद [१३]

है कोई संत राम अनुरागी ।
जाकी सुरत साहब से लागी ।।टेक।।

अरस परश पिवके रंग राती,
होय रही पतिव्रता ।।१।।
दुतुयां भाव कछु नहीं समझै,
ज्यों समुंद समानी सलिता ।।२।।
मीन जाय कर समुंद समानी,
जहं देखै जहं पानी ।
काल कीर का जाल न पहुंचै,
निर्भय ठौर लुभानी ।।३।।
वांवन चदन भौंरा पहुंचा,
जहं वैठे तहं गंदा ।
उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा,
निश दिन करत अनंदा ।।४।।
जन दरिया इक राम भजन कर,
भरम वासना खोई ।
पारस परस भया लोहू कंचन,
वहुर न लोहा होई ।।५।।

पद [१४]

साधो राम अनूपम बानी ।
पूरा मिला तो वह पद पाया,
मिट गई खैंचातानी ।।टेक।।
मूल चांप दृढ आसन बैठा, ध्यान धनी से लाया ।
उलटा नाद कंवल के मारग,
गगना मांहि समाया ।।१।।
गुरु के शब्द की कूंची सेती,
अनंत कोठरी खोली ।
भ्रू लोक पर कलश विराजै,
ररंकार धुन बोली ।।२।।
जहं बसंत अगाध अगम सुख सागर,
देख सुरत बौराई ।
वस्तु धनी पर बरतन ओछा,
उलट अपूठी आई ।।३।।
सुरत शब्द मिल परचा हुआ,
मेरु मध्य का पाया ।
ता में पैस गगन में आया,
वह जाय अलख लखाया ।।४।।
जहं पग बिन पातर, कर बिन बाजा,
बिन मुख गावै नारी ।
बिन बादल जहं मेंह बरसै है,
डुमक डुमक सुख क्यारी ।।५।।

जन 'दरियाव' प्रेम गुण गाया,
वहं मेरा अरट चलाया ।
मेरु डड होय नाल चली है,
गगन बाग जहं पाया ॥६॥

पद [१५]

साधो ऐसी खेती करई,
जासे काल अकाल न मरई ॥टेक॥
रसना का हल बैल मन पवना,
बिरह भोम तहं बाई ।
राम नाम का बीज बोया,
मेरे सतगुरू कला सिखाई ॥ १ ॥
ऊगा बीज भया कुछ मोटा, हिरदा मे डहडाया ।
किया निनाण भरम भरम सब खोया,
जह प्रेम नीर बरखाया ॥ २ ॥
नाभी माहिं भया कुछ दीरघ, पोटा सा दरसाना ।
अर्ध कंवल में सिरा निकासा,
गगन नाद गरजाना ॥ ३ ॥
मेरु डंड होय डांडी निकसी, ता ऊपर प्रकाशा ।
विज बुवाया विरह भोम में, फल लागा आकाशा ॥४॥
परथम जहां शंख धुन उपजी,
मन की आरत जागी ।

गाजै गगन सुधा रस बरसै,
नौबत बाजन लागी ॥५॥
त्रिकुटी चढ़ा अनत सुख पाया,
मन की ऊनत भागी ।
ऊंचै ज्ञान ध्यान सत बरतै,
जहां सुषमन चूने लागी ॥६॥
चढ़ आकाश सकल जग देखा,
जुगती थो सो जानी ।
सम्पत मिली बिपत सब भागी,
ब्रह्म जोत दरसानी ॥७॥
जम गया दूध ब्रह्म कन निपजा,
सुरत अवेरन हारी ।
हुई रास तब बरतन लागा,
आनंद उपजा भारी ॥८॥
निपजा नाज भवन भर राखा,
ता मध सुरत समाई ।
जन 'दहिया' निर्भव पद परशा,
तहं काल त पहुँचै आई ॥९॥

पद [१६[

बाबल कैसे बिसरा जाई ।
जदी मैं पति संग रस खेलूंगी,
आपा धरम समाई ॥टेक॥

सतगुरु मेरे किरपा कीनी,उत्तम वर परनाई ।
अव मेरे सांईं को शरम पड़ैगी,
लेगा चरण लगाई ॥१॥
थें जानराय में वाली भोली,
थां निर्मल में मैली ।
वे वतलाएं मैं वोल न जानूं,
भेद न सकूं सहेली ॥२॥
थे ब्रह्म भाव मैं आतम कन्या,
समझ न जानूं बानी ।
'दरिया' कहै पति पूरा पाया,
यह निश्चय करि जानी ॥३॥

पद [१७]

साधो मेरे सतगुरु भेद वताया,
तासे राम निकट ही आया ॥टेक॥
मथुरा कृष्ण अवतार लिया है,
धुरै निसाना धाई ।
ब्रह्मादिक शिव और सनकादिक,
सव मिल करत वधाई ॥१॥
गगन मंडल में रास रचा है,
सहस गोपि इक कंथा ।
शब्द अनाहद राग छती सौं,
वाजा वजै अनंता ॥२॥

अकाश दिशा इक हस्ती उलटा, राई मान दरवाजा ।
ता में होय गगन में आया, सुनै निरंतर बाजा ।।३।।
सर्प एक बासक उनि हारे, विष तज अमृत पीवै ।
कृष्ण चरण में लौटे दीन होय,
अमर जुगन जुग जीवै ।।४।।
जह इड़ा पिंगला राग उचारै, चंदन सूर थकाना ।
बहती नदियां थिर होय बैठी,
कलजुग किया पयाना ।।५।।
राधा हरि सतभाभा सुन्दर, मिली कृष्ण गल लागी ।
अरस परस होय खेलन लागी,
जब जाय दुबिधा भागी ।।६।।
आइ प्रतीत और भया भरोसा, भीतर आतम जागी ।
दरिया इकरंग राम नाम भज,
सहज भया बैरागी ।।७।।

पद [१८]

साधो एक अचंभा दीठा ।
कडुवा नीम कहै सब कोई, पीवै जाको मीठा ।।टेक।।

बूंद के माहिं समुंद समाना, राई में परबत डौलै ।
चींटी के माहिं हस्ती बैटा, घट में अघटा बोलै ।।१।।
कूंडा माहिं सूर समाना, चंद्र उलट गया राहू ।
राहू उलट कर केतु समाना, भोम में गगन समाहू ।२।

त्रिन के भीतर अगिन समानी, राव रंक बस बोलै ।
उलट कयाल तुला माहि समाना,
नाज तराजु तोलै ॥३॥
सतगुरु मिलै तो अर्थ बतावै, जीव ब्रह्म का मेला ।
जन 'दरियाव' पद को परसै,
सो है गुरु मैं चेला ॥४॥

पद [१६[

अब मेरे सतगुरु करी सहाई ।
भरम भरम बहु अवधि गंवाई,
मैं आपहि में थिल पाई ॥टेक॥
हिरनी जाय सिंध घर रोका डरप सिंघनी हारी ।
सोता साह होय कर निर्भय, वस्तु करै रखवारी ॥१॥
अजगर उड़ा शिखर को डांका,
गरुड़ थकित होय बैठा ।
भोम उलट कर चढ़ी आकाशा,
गगन भोम में वैठा ॥२॥
सिंह भया जाय स्याल अधीना, मच्छा चढ़ै आकाशा ।
कुरम जाय अगन में सोता,
देखै खलक तमाशा ॥३॥

राजा रंक महल में पौढ़ा, रानी तहां सिधारी ।
जन 'दरिया' वा पद को परसे,
ता जन की बलिहारी ॥४॥

पद [२०]

मुरली कौन बजावें हो, गगन मंडल के बीच ॥टेक॥
त्रिकुटी संगम होय कर, गंग जमुन के घाट ।
या मुरली के शब्द से, सहज रचा बेराट ॥१॥
गंग जमुन बिच मुरली बाजै उत्तर दिशा धुन होय ।
उन मुरली की टेर सुनि सुनि,
रहीं गोपिका मोही ॥२॥
जहां अधर डाली हंसा बैठा, चुगत मुक्ता हीर ।
आंनद चकवा केल करत है, मानसरोवर तीर ॥३॥
शब्द धुन मृदंग बाजै, बारह मास बसंत ।
अनहद ध्यान अखंड आतुर, धरत सबही संत ॥४॥
कान्ह गोपी नृत्य करते, चरण बपु हि बिना ।
नैन बिन दरियाव देखै आनंद रूप घना ॥५॥

राग भैरो

पद [२१]

कहा कहूं मेरे पिउ की बात,
जोरे कहूं सोई अंग सुहात ॥टेक॥

जब में रही थी कन्या 'क्वारी,'
तब मेरे करम होता सिर भारी ॥१॥
जब मेरी पिउ से मनसा दौड़ी;
सत गुरु आन सगाई जोड़ी ॥२॥
तब मैं पिउ का मंगल गाया,
जब मेरा स्वामी ब्याहन आया ॥३॥
हथलेवा दे बैठी संगा,
तब मोंहि लीनी बांये अंगा ॥४॥
जन 'दरिया' कहै मिट गई दूती,
आपो अरप पीव संग सूती ॥५॥

पद [२२]

ऐसे साधु करम दहै ।
अपना राम कबहुं नहिं बिसरै,
बुरी भली सब सीस सहै ॥टेक॥

हस्ती चलै भुंसै वहु कूकर,
ता का औगुन उर ना गहै ।
वाकी कबहूं मन नहीं आनै,
निराकार की ओट रहै ॥१॥
धन को पाय भया धनवंता,
निरधन मिल उन बुरा कहै ।

वाकी कब हूं न न वन मैं लावै,
अपने धनी संग जाय रहै ॥२॥
पति को पाय भई पतिव्रता,
बहु व्यभिचारिन हांस करैं ।
वाके संग कब हूं नहिं जावै,
पति से मिलकर चिता जरे ॥३॥
दरिया राम भजै जो साधू,
जगत भेख उपहांस करै ।
वाका दोष न अंतर आनै,
चढ़ नाम जहाज भव सागर तरै ॥४॥

❋ राग बिलावल ❋

पद [२३]

राम भरोसा राखिए, ऊनित नहिं काई ।
पूरन हारा पूरसी, कलपै मत भाई ॥टेक॥
जल बरषे आकाश से, कहो कहां से आवै ।
बिन जतना ही चहूं दिशा, धेह चाल चलावै ॥१॥
चात्रिक भूजल ना पीवै, बिन आहर न जीवै ।
हर वाहो को पूरवै, अन्तर गत पीवै ॥२॥
राज हंस मुक्ता चुगै, कुछ गांठ न बांधै ।
ताको साहब देत है, अपनो व्रत साधै ॥३॥

गरभ वास में आय कर, जीव उद्दम न कर ही।
जानराय जानै सबै, उनको वहि भर ही ॥४॥
तीन लोक चौदह भवन, करै सहज प्रकाशा।
जाके सिर समरथ धनी, सोचै क्या दासा ॥५॥
जब से यह बानक बना, सब सूंज बनाई।
दरिया विकलप मेट के, भज राम सहाई ॥६॥

पद [२४]

साहब मेरे राम है, मैं उनकी दासी।
जो बान्या सो बन रहा, आज्ञा अविनाशी ॥टेक॥

अरध उरध षट कवल बिच, करतार छिपाया।
सतगुरु मिल किरपा करी, कोई विरले पाया ॥१॥
तीन लोक चोदह भवन, केवल भर पूरा।
हाजिर से हाजिर सदा, दूरां से दुरा ॥२॥
पाप पुन्य दोय रूप हैं, उनहीं की माया।
साधन के बरते सदा, भरमी भरमाया ॥३॥
जन दरिया इक राम भज, भजबे की बारा।
जिन यह भार उठाइया, उनके सिर भारा ॥४॥

※※
※※

* राम गुंड *

पद [२५]

अमृत नीका कहै सब कोई,
पीये बिना अमर नहीं होई ।।१।।
कोई कहै अमृत बसै पताला,
नाग लोग क्यों ग्रासै काला ।।२।।
कोई कहै अमृत समुद्र मांहि,
बड़वा अगिन क्यों सोखत तांहि ।।३।।
कोई कहै अमृत शशि में बासा,
घटै बढ़ै क्यों होइ है नाशा ।।४।।
कोई कहै अमृत सुरगां मांहि,
देव पियें क्यों खिर खिर जांहि ।।५।।
सब अमृत बातों की बाता,
अमृत है संतन के साथा ।।६।।
'दरिया' अमृत नाम अनंता,
जा को पी-पी अमर भये संता ।।७।।

पद [२६]

साधो अरट बहै घट मांहि ।
जो देखा ताहि को दरसै,
आदि अंत कछु नांहि ।।टेक।।

अरध उरध बिच अमृत कूवा,
जल पीवै कोई दासा।
उलटी माल गगन को चाली,
सहज भरै अकाशा ॥१॥
चेतन बैल चलै नहीं डोलै,
अलख निरंजन माली।
इच्छा बिना दशों दिश पीवै,
सहज होत हरियाली ॥२॥
नेपै हुई तभी मन परचा,
कन की रास बढ़ाई।
सुरत सुन्दरी संग नहीं छोड़ै,
टारी टरै न जाई ॥३॥
अगम अर्थ कोई बिरला जानै,
जिन खोजा तिन पाया।
जन दरिया कोइ पूरा जोगी,
कांसे नाद समाया ॥४॥

पद [२७]

साधो अलख निरंजन सोई।
गुरु परताप राम रस निर्मल,
और न दूजा कोई ॥टेक॥

सकल ज्ञान पर ज्ञान दयानिधि,
सकल जोत पर जोती।
जाके ध्यान सहज अघ नाशै,
सहज मिटै जम छोती ॥१॥
जाकी कथा के सरवन तेही,
सरवन जाग्रत होई।
ब्रह्मा विष्णु महेश अरु दुर्गा,
पार न पावै कोई ॥२॥
सुमिर सुमिर जन होई हेराना,
अति झीना से झीना।
अजर अमर अक्षय अविनाशी,
महाबीन परवीना ॥३॥
अनंत संत जाके आश पियासा,
अगन मगन चिरजीवै।
जन 'दरिया' दासन के दासा,
महा कृपा रस पीवै ॥४॥

पद [२८]

संतो क्या गृहस्थी क्या त्यागी।
जहां देखूं तेहि बाहर भीतर,
घट घट माया लागी ॥टेक॥

माटी की भीत पवन का थंबा,
गुण औगुण से छाया।
पांच तत्त आकार मिलाकर,
सहजां गृह बनाया ॥१॥
मन भयो पिता मनसा भई माई,
दुख सुख दोनों भाई।
आशा तृष्णा बहिनें मिलकर,
गृह की सौंज बनाई ॥२॥
मोह भयो पुरुष कुबुध भई धरनी,
पांचों लड़का जाया।
प्रकृति अनंत कुटंबी मिलकर,
कलहल बहुत उपाया ॥३॥
लड़कों के संग लड़की जाई,
ता का नाम अधीरी।
बन में बैठी घर घर डोलै,
स्वारथ संग खपीरी ॥४॥
पाप पुन्न दोउ पास पड़ोसी,
अनन्त वासना नाती।
राग द्वेष का बंधन लागा,
गृह बना उतपाती ॥५॥

कोई गृह मांड गृह में बैठा,
वैरागी बन बासा ।
जन दरिया इक राम भजन बिन,
घट घट में घर बासा ॥६॥

※ रेखता ※

पद (२९)

सतगुरु से शब्द ले रसना से रटना कर,
हिरदै में आन कर ध्यान लावै ।
षट कंवल बेध कर नाभि कंवल छेद कर,
काम को लोप पाताल जावै ॥१॥
जह साई को सीस ले जम के सिर पाव दे,
मेरु मध होय आकाश आवै ।
अगम है बाग जहं निगम गुल खिल रहा,
दास 'दरियाव' दीदार पावै ॥२॥

※※
※※

॥राम राम॥

श्री पूरणदासजी महाराज

का

अनुभव आलोक

मन चरित्र का अंग

※ दोहा ※

यो मन निरमल कुंण करयो मन है मल को रास ।
तीन लोक भटकत फिरे, बंध्यो कालको पास ॥

※ चौपाई ※

ओमन धरे भेख वुहबांना,
ओमन रहे परवतां छांना ।
ओमन फिरे मिरगज्यु मुक्ता,
ओमन रहै भुजंगज्यु गुपता ।
ओमन आय इंद्रज्यु वरसे,
कवहुक ओमन अनविन तरसे ।
कवहुं ओ मन माया धारी,
धर्म हीन करमा अधिकारी ।

कबहुक श्रोमन देवी देवा,
कबहुक हुय जाय अलख अभेवा।
मन का मरम न जाने कोई,
जानत है साधू जन सोई।

* साखी *

दीसे सोमन चरित है, चलेन मनका डाव।
स्वपने मन झूंझे सही, लगे न मन के घाव ॥१॥
पूरण मन को परगती, रहै न एकण रास।
मन चंचल निश्चल नहीं, नाहीं मन विश्वास ॥२॥
पूरण मनघर आविया, सतगुरु संग पाया।
नाम निरंजन नाथ का, निसिवासर ध्याय ॥३॥
मन घेरे गुरु शब्द सूं, लग्या प्रेम का बान।
चंचलसू निश्चल भया, मिट गई खेंचा तान ॥४॥
श्रोमन निरमल होत है, जहां त्रिकुट्टी घाट।
अखड ज्योत लागी रहै, सहजा खुले कपाट ॥५॥
श्रोमन निरमल होत है, जहां सुखमरणा मेल।
सुख सागर सू भर गया, हस करत है केल ॥६॥

**
**

श्री किसनदासजी महाराज कृत

※ राम रक्षा ※

शिष के शीश पर दस्त गुरुदेव का,
रमे नव खण्ड सत शब्द लीयाँ ।
देश परदेश अरू राज का तेज में,
मड़ा मशाण से नांहि वियां ।
दिष्ट मल मुष्ट छल छिद्र लागे नहीं,
राम रिछपाल घर गॉंव वारे ।
जाण वेजाण अरू नाटकी चेटकी,
विघ्न के सन्त जन नाहि सारे ।
भूत अरू प्रेत डाकनी साकनी,
देख निज सन्त को दूर भागे ।
राहू अरू केतू वलवीर यक्ष योगिनी,
सन्त घर गाँव वल नहिं लागे ।
शरण साधार आधार एक राम को,
शब्द सत सार तिहूं लोक निर्भय ।
फिरे सन्त दीदार चाहते सब चौकियाँ,
चौकियां तीन लघ चौथी चढया ।
ब्रह्म की जोत में जाय पेठा,
दास किशनो कहे विघ्न कुण वापड़ा ।
काल जम जोध पच हार वैठा ।

❋ अथ गोरख छन्द❋

गोरखग्यानी ब्रह्म का ध्यानी, अजराप्याला पीवन्ता ।
जुरा न झंपे काल न कंपे, जोगी जुग जुग जीवन्ता ।।
त्रस्ना खडी मोबत मडी, दरसन परसन देखन्ता ।
मन परचाया त्यागी माया, सत गुरु सबदां दाखन्ता ।।
उलटा आया मेरम पाया, मीर जागया मेमन्ता ।
हसे न बोले डिगे न डोले, पड़े ना झोले जुगजन्ता ।।
सुखं निवासी सिध सुरासी, अकल उदासी खेलन्ता ।
अजपा जपता सुन्न में तपता, अधर पियाला झेलन्ता ।।
षटचक्कर मांही यही मिलाही निसदिन जांहि जोगन्ता ।
इगलासुंयारी पिंगला प्यारी, सुखमरण नारी भोगन्ता ।।
अनहृद गाजै नाथ विराजै, दसवै छाजे दीपन्ता ।
वार न पारा मांहि न बारा, सब सूंन्यारा सीपन्ता ।।
राजा राणी सेज समाणी, पीया पाणी पर घर का ।
नाथ निसाणी अणभे वाणी, बोल्या बाजी सुन्न सरका ।
ऐसा जोगी रसीया भोगी, ऐगी सबही दीपन्ता ।
पंथ चलाया निरमल काया, छोत न छाया छीपंता ।।
अम्बर बर अगा जाय रूलगा, सब्रद सुजगा जाणन्ता ।
तिहुँलोक नियारा परम पियारा परब्रह्म लग प्राणन्ता ।।
अष्टग कमाया सिध कुहाया, जोग समाया जग ।
निरलेप निराजू लगे न काजू, जोत उजालू ठेछन्ता ।।

आप अकेला गुरु न चेला सदा सहेला सुगसन्ता ।
निरवाण निसन्धु तोड़्या, धन्दू सबद फिरंदू सबगन्ता ।।
गुपता ग्यानी उलटा ध्यानी, पीसणवानू पीसन्ता ।
महेछा मारण मेरम तारण, दास उधारण दीसन्ता ।।
जामण मरण बहुरिन करण, सतगुरु दाता दर्सन्ता ।
रमता रावल नाद रसावल ब्रह्म बिलावल जहँ बसता ।।
निज आरंभू रोप्या खंभू, अवगत शिभूं एकन्ता ।
दहसण पाया खेल चलाया, सब भरमाया भीकन्ता ।।
निज तत बताया विरला पाया निसदिन ध्याया नामंत ।
निनाणू छोडू फन्दन तोडू, राम नाम सत सिवरन्ता ।।
सिवरण कीआ सो सत सीधा, निरणे राधा निरभंता ।
तज ससारू विषे विकारू, अजरा जारू अवधूता ।।
नदी निवाणू उलटा आणू, जोग सुजाणू जाणन्ता ।
भीतर भेदू करम न खेदू, बांचत वेद पुराणन्ता ।।
बेगम बाटम् लहेन घाटम् खोल कपाटं खेवन्ता ।
रगत न मंसु सबद न हंसू, आदू व प्रसू वेहन्ता ।।
पांच पठाया मन लो लाया, बिन्द चढ़ाया बीजन्ता ।
मूल मंजारू सोख्या पारू, खपतन खारु खीजन्ता ।।
दसवें द्वारू सजीया सारू, गिगन मजारू घेरन्ता ।
ओउँ कारा प्राण हमारा पवन बसे सुर फेरन्ता ।।

नगर बसाणा नहचल थाणा, बेहद निसाणा बाजन्ता ।
चित अस्थानू धुन शमानू बिरम गियानू गाजन्ता ।।
नाथ सनूरा बजे तूरा, दत्री न पूरा भदन्ता ।
जन सत जीता जोग बदीता, कालन ममता भेदान्ता ।।
नाथ नहंगू रिधसिध संगू, भजन अभगू पोखन्ता ।
दास कबीरू ग्यान गभीरू, मुक्त उजीरू मोखन्ता ।।
गुरु दयाल गोरख बालं सिष रिछपाल संग रहंता ।
सतगुरु देवा सिखकर सेवा, पाया भेवा परसन्ता ।।
सर्वं सन्यासं कर्मनिकासम, दत्त अभ्यास दरसन्ता ।
अगम अपारा गुरु हमारा, दसवें द्वारा परसन्ता ।।
गोरख आया किसने पाया, विमल वधावा बाजन्ता ।
किसनादासू तत परकासू मोख निवासू मम भरता ।।
राम रमेला अमी महेला, दास दूतेला ना करता ।
सतगुरु सांई मिलिया मांहीं, मोख सिधाई मम भरता ।।

※ दोहा ※

गोरख छन्द पचीस पद, सीख रखे घट मांय ।
नागा भूखा ना रहे, कीया करम कट जाय ।।१।।
किसनदास गोरख मिल्या, बोल्या अणभे बाण ।
राम राम निसदिन रटै, निरभे पद निरबाण ।।२।।
किसनदास गोरख दिया, सबद उधारण एक ।
राम जोग सम को नहीं, आरभ ज़ोग अनेक ।।३।।

॥ राम-राम ॥

श्री सुखरामजी महाराज कृत

※ विरह का अंग ※

नमो नमो परब्रह्म गुरु, नमस्कार सब संत ।
जन सूखिया वंदन करे, नमो नमो हरि कंत ॥

※ अरेल ※

निसदिन जोऊँ वाट, पीव घर आईये ।
चाहि तुम्हारी मोहिं दरश दिख लाइये ॥
कैसे धरिये धीर, पीर है पीव की ।
हरि हाँ विन दरशन सूख राम, किसी गत जीव की १

तलफत रेण विहाय, दिवस जाय तलफतां ।
वीत गई सब आयु, विरहनी कलपतां ॥
दया न आवे तोय, खबर नहीं लेते है ।
हरि हाँ यूं विरहन सुखराम सन्देशो देते है ॥२॥

आवो दया विचार, सलोना श्यामजी ।
आया ही सुख होय, सरे सब काम जी ॥
चेरी अपणी जान, दरश पिव दीजिये ।
हरि हां साच कहे सुखराम, विलम नहीं किजिये ॥३॥

राग रग रूचि नाय, बात नहिं स्वावहीं ।
चातक ज्यूं चित चाह, पीव कब आवहीं ।।
दीजै दरश दयाल, पीव मन- भावणा ।
हरि हां तलफत है सुखराम, राम घर आवण ।।४।।
जिस दिन पिछड़े पीव नहीं जक मोहिजी ।
दूभर निश दिन जाय, दया नहिं तोयजी ।।
अब तो आव दयाल, अनाथां नाथजी ।
हरि हॉ शरणागत सुखराम गहो पिव हाथजी ।।५।।

* राम- राम *

श्री नानकदासजी महाराज कृत

* साखी *

नमो नमो गुरुदेवजी नमो नमो श्री राम ।
जन नानग की वीनती चरण कमल विश्राम ।।

* छन्द *

दाता गुरु दरियाव सही, गुरु देव हमारा ।
राम राम सुमिराय, पतित को पार उतारा ।।
राम नाम सुमिरण दिया, दिया भक्ति हरि भाव ।
आठ प्रहर विसरो मती, यूं कह गुरु दरियाव ।।१।।

※ दोहा ※

तन मन अरपण करत हूं,
चरण कमल की आश।
जन नानक के सिर तपै,
दाता दरिया दास ॥१॥
राम नाम सुमिरन करै,
राम मिलन की चाय।
जन नानग गुरुदेव को,
निश दिन शीश नवाय ॥२॥
आनंद रूप दयालजी,
सदगुरु दरिया साह।
नर क्यू चूके नानगा,
राम भजन की राह ॥३॥
मीठा बोलन नव चलण,
पर ओगंण ढक लेण।
पाँचू चँगा नानगा,
हरि भज हांथा देण ॥४॥

※※
※※

।।राम-राम।।

श्री हरकारामजी महाराज

की

अनुभव गिरा

❋ छन्द पचीसी सार ❋

(१)

गढ़-मढ़ महल अनेक, जिरण घर बाजा बाजै।
सब दुनिया पर हुकम, तखत सिर आप विरजै ।।
चवर- छतर सिर फिरै, करै कीरत जग सारा ।
माया- मुल्क अपार, द्रव्य बहु भरे ...... भण्डारा ।।
बड़े- बड़े बड़ भूप, नरां- नर शीश निवावै ।
करे बहुत इदकार, अनन्त आजीज्यां गावै ।।
अब- खर्ब दल जोड़कर, बहुता करै हगाम ।
परण सोच- विचार कहै यूं, हरको राम बिना बेकाम ।।

(२)

कंचन वरणी देह, स्वरुप सुन्दर मुख सोहे ।
उत्तम कुल बड़ भाग, देख सब ही मन मोहे ।।
अङ्ग पोपांखा पूर, बाग - बगायत साजै ।
खान - पान महरान, सबन सिर मोर विराजै ।।

हीरा जड़े जवाहर, कान कुण्डल भल मोती ।
पना पेच सोहंत, सुजस संसार सुहाती ।।
क्रिया-कर्म सब दान, कर सभी गुणां को धाम ।
पण सोच-विचार कहे यूँ, हरको राम बिना बेकाम ।।

(३)

मिन्दर वण्या अनूप, खूब सुन्दर फिर गोखा ।
लगे जाय असमान, जबर यह अजब झरोखा ।।
जाजम-दुलीचा सेज, सङ्ग सुन्दर सुख नारी ।
महा मोहनी रूप, स्वरूप सब में इदकारी ।।
बहु मेवा-मिष्ठान्न, थाल कंचन पधरावे ।
मनसा भोजन भोग, जगत सुख सब ही पावै ।।
जग विलास ऐसो वण्यो, स्वर्गादिक विश्रास ।
पण सोच-विचार कहे यूँ हरको, राम बिना बेकाम ।।

(४)

लालाँ धरती-धरा, हीर जड़ रतन लगावै ।
घर दर चिणे संवार, सर्व चितरावण छावै ।।
कामधेनु कल्पवृक्ष, पोल पारस का द्वारै ।
गज ऐरावत राज, इन्दर ज्यूँ सोभा सारै ।।
इदक अफसरा अजब नार, नाना विधि गावै ।
गंधर्व गुण विस्तार, सुनत सब ही सुख पावै ।।

सुख विशेष कैलाश सम, पुनः बैकुण्ठां धाम ।
पण सोच-विचार कहै यूँ,हर को राम बिना बेकाम ।।

(५)

हाथां परवत तोल, समुद्र जल सब भर पीवै ।
अनन्त जोधा बलवन्त, बहुत दिन जग में जीवै ।।
शूर–वीर–सामन्त, सिंह ज्यूँ गहरा गाजै ।
एक छत्र ह्वै राज, स्वर्ग की शोभा छाजै ।।
दल बादल के बीच, वीर नर पड़त न पाछा ।
सार सांच संसार, गिणजै मनसा······वाचा ।।
वीर पुरुष रण में लड़, करै युद्ध-संग्राम ।
पण सोच-विचार कहै जन हरको राम बिना बेकाम ।।

(६)

उत्तम उत्तम से उत्तम, ऊँच से ऊँच कहावै ।
नाना विधि आचार, धारणा सभी निभावै ।।
सदा प्रातः स्नान, सभी अंग मंजन करि है ।
बिन धोवे घर द्वार, पांव धरती नहीं धरि है ।।
आप स्वयं ही जाय, नीर डोली भर लावै ।
अपरस लेत अहार, और की करी न खावै ।।
पला समट नर नीसरै, छिवे न मृतक जाय ।
पण सोच विचार कहै, जन हरको राम बिना बेकाम ।।

(७)

करैं यज्ञ अश्वमेध, नरपति सुर सवै जिमावै ।
तुला दान गज ग्रहण, द्वार कन्या परणावे ।।
कंचन मेरू सुमेरू, दान कर मुक्ति विचारे ।
भोम दान मिष्ठान्न, विधिवत् विघ्न निवारै ।।
कामधेनु मणि-दान, पुण्य पुनि करैं सदाई ।
चिन्ता मणि कल वृक्ष, दान दीन्हों इधकाई ।।
और धर्म विधियुत करैं, नित उठ यही काम ।
पण सोच विचार कहे, यूं हरको राम बिना बेकाम ।।

(८)

जोगी जुगत विचार, पहर वाघम्बर डौले ।
घर आसन अवधूत, बोल धीमै श्वर बोले ।।
वस्ती वसे न वास, जगत की धरैं न आशा ।
आवू गढ़ गिगनार, करैं जगल में वासा ।।
मूल द्वार दृढ़ चाप, प्राण मस्तक में लावै ।
ध्रुव मण्डल लग देह, योग अष्टांग कमावै ।।
धोला केश न संचरैं, सदा केश सिर स्याम ।
पिण सोच विचार कहै, यूं हरखो राम विना वेकाम ।।

(९)

भारी ज्यूं गिर मेर, धरण ज्यूं धीरज ठाणे ।
सागर जिसा समाय, वात वुद्ध, वुद्ध की जाणै ।।

सूरज ज्यूं तप तेज, चन्द ज्यूं सम सीतल काया ।
निरमलता जिमि नीर····················।।
गुण गाढ़ा में गरक, तर्क सब शास्त्र विचारे ।
जत सत मत प्रवीण, सदा नर सुमता धारे ।।
मन प्रत्यक्ष सब बस किया, ऐसो पुरुष अमान ।
पण सोच विचार कहै यूं, हर को राम बिना बेकाम ।।

(१०)

षट् कर्म करै अनेक, वेष नाना विधि धारै ।
एक लोच सिर करै, एक सिर जटा बधारै ।।
एक लूण रस तजै, एक मन मान्यां खावै ।
एक सजै बहु स्वांग, एक लै कान फड़ावै ।।
एक डिगम्बर रहै, एक संकट सह सारा ।
एक विरक्त वैराग्य, एक बहु करै पसारा ।।
अजरी बजरी स्वांग धर, भजै नहीं निज नाम ।
पण सोच विचार कहै, यूँ हरको राम बिना बेकाम ।।

(११)

एक रहै एकन्त, एक घर संग चलावै ।
एक रहे घर मांहि, एक वन को उठ जावै ।।
एक जीवत तन गढ़ै, एक आसन बहु साजै ।
एक सेवे आकार, एक तैतीस आराधे ।।

एक चढ़े गिरीमेरु, एक पातालां पूजै ।
एक कहे सतवेण, एक आगम की सूजै ।।

एक गुटका संग लै उडै, बड़े सिद्ध जो नाम ।
पण सोच विचार कहै, यूं हरको राम बिना बेकाम ।।

(१२)

राम नाम तत सार, सर्व ग्रन्थन में गायो ।
सन्त अनन्त पिछाण, राम ही राम सरायो ।।

वेद पुराण उपनिषद्, कह्यो गीता में ओही ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम नित ध्यावै सोही ।।

ध्रु, प्रह्लाद, कबीर नामदे आदि प्रमाणी ।
सनकादिक नारद, शेष जोगेश्वर सारा जाणी ।

सो सद्गुरु प्रताप तें, कियो ग्रन्थ-विस्तार ।
जन हरका तिहूं लोक में, राम नाम तत्सार ।।

राम राम

श्री अमाबाईजी महाराज कृत

अरणभै वाणी

※ भुरकी प्रसंग ※

भुरकी मैं डारूँ मण्डारूँ, मन मत को मारूँ ।
राम नाम की भुरकी मेरे, मेरा जिसमें डारुँ ।
जनम जनम का कड़दा काढूं, प्रगट ब्रह्म दिखारूँ ।।
भायां ने दूँ उज्जल भुरकी बायां ने दूँ राती ।
प्रेम पियाला भर भर पाऊँ रहूँ राम रंग राती ।।
रामानन्द कबीर कूँ दीनी, शुखदेव जनक चीनी ।
जन रैदास मीरां को दीनी, भक्ति प्रगट कीनी ।।
मेरी भुरकी पांया सेती, तन मन हरि को अरपे ।
परापरी सन्ता के बायक, हिरदे गाढ़ा थिरते ।।
मेरी भुरकी पाय उखाले, सो नर नरकां जासी ।
जम का दूत पकड़ ले जाप़ी, अंतकाल पछतासी ।।
जन अभा की ऐसी भुरकी, भाग भला सो पासी ।
जनमजनम का बधन टूटे, ब्रह्मजोत मिल जासी ।।

राम राम राम राम राम

※ आरती संग्रह ※

ऐसी आरती करो मेरे मन्ना ।
राम न बिसरू एको छिन्ना ॥१॥

देही देवल मुख दरवाजा ।
बन्या अगम त्रिकुटी छाजा ॥२॥

सतगुरुजी की मैं बलिजाई ।
निश- दिन जिव्या अखंड लिवलाई ॥३॥

द्वितीय ध्यान हिरदे भया वासा ।
परमसुख जहाँ होय प्रकासा ॥४॥

तृतीय ध्यान नाभी मधि जाई ।
सनमुख भये सेवक जहाँ सांई ॥५॥

अब जाय पहुँचा चोथी धामा ।
सब सन्तन का सरिया कामा ॥६॥

अनहद नाद झालर झँणकारा ।
परम जोत जहां होय उजियारा ॥७॥

कोई कोई सन्त जुगत यह जाणी ।
जन संतदास मुक्ति भये प्रांणी ॥८॥

※——※

ऐसी आरती कर मन मेरा ।
जन्म – मरण का मेटो फेरा ॥१॥

सुरत शब्द मिल हिरदय आया ।
रोम रोम सब ही चेताया ॥२॥

राम निरंजन चहुं दिस देख्या ।
उर अन्तर में साहिब पेक्या ॥३॥

अगम आरती वार न पारा ।
जन प्रेमदास भज सिरजन हारा ॥४॥

※——※

ऐसी आरती निस दिन करिये ।
राम सुमिर भवसागर तिरिये ॥१॥

तन मन अरप चरण चित दीजै ।
सतगुरु शब्द हिरदै धर लीजै ॥२॥

तन देवल बिच आतम पूजा ।
देव निरंजन और न दूजा ॥३॥

दीपक ज्ञान पांच कर बाती ।
धूप ध्यान खेवों दिन राती ॥४॥

अनहद झालर शब्द अखण्डा ।
निश दिन सेव करे मन पण्डा ॥५॥

आनन्द आरती आतम देवा।
जन दरियाव करे जहाँ सेवा ॥६॥

※——※

तन मन आरती करूँ नित सेवा।
जन दरियाव मिल्या गुरुदेवा ॥टेर॥

सद्गुरु शब्द दिया सुख धारा।
निस दिन रसना राम उचारा।
कण्ठ हिरदा विच भया परकासा।
ब्रह्म मिलन की भई मन आशा।
नाम कंवल विच शब्द गुंजारा।
रग रग रोम रोम रंरंकारा।
पेस पयांल आकास सिधाया।
चढ्या त्रिकुटी परम सुख पाया।
ईडा पिंगला सुखमण मेला।
चान्द सूरज एकण घर मेला।
शुन्न सिखर जहँ अनहद वाजे।
अनन्त कोटि जहँ सन्त विराजे।
अनघड़ रूप अखण्ड अविनासी।
जन पूरणदास जहाँ के वासी।

※——※

कर मन आरती देव निरंजन ।
आवागमन सकल दुख भंजन ।।१।।

प्रथम सेव सत्गुरु की कीजै ।
तन मन अरप चरण चित दिजै ।।२।।

राम राम रसना लिव लागी ।
हिरदे जोत ब्रह्म की जागी ।।३।।

नाभ कमल बिच नाद बजाया ।
गरज्या शहर गगन गरणाया ।।४।।

शहर आनन्द घर मंगलचारा ।
चढ्या त्रिकुटी में प्राण हमारा ।।५।।

आदि अनादि राम वर मेरा ।
जन किसनदास चरणों का चेरा ।।६।।

——

आरती सुणज्यो सिरजन हारा ।
पलक न बिसरूं नाम तुम्हारा ।।१।।

सरगुण सेवा ओंम्कारा ।
निरगुण नाम सकल विस्तारा ।।२।।

वेद कतेब सुणै सब कोई ।
राम भज्यां बिन मुक्ति न होई ।।३।।

काया कंथा भेष बनाया ।
गिगन मण्डल बिच मन मठ छाया ॥४॥

शंकर शेष मिल्या शुख सागर ।
हंसा हीर चुगैं उस आगर ॥५॥

ध्रु प्रह्लाद सन्त सब आदू ।
दास कबीर नाम देव दादू ॥६॥

सन्तदास जन प्रेम पठाया ।
गुरु दरियाव शरण सुख पाया ॥७॥

अनन्त सन्त जहाँ धरते ध्याना ।
जहाँ सुखराम किया विसरामा ॥८॥

——

करमन आरती राम निवाजे ।
गगन मण्डल में अनहद गाजे ॥टेर॥

प्रथम पूज गुरां का पाया ।
दीन दयाल दया कर आया ॥१॥

रसना भजन हृदय हरि वासा ।
नांभ कंवल निज नाद प्रकासा ॥२॥

मन का पुहुप भाव की पूजा ।
अलख निरंजन और न दूजा ॥३॥

इड़ा पिंगला सुखमरण मेला ।
पांचू पुरुष त्रिकुटी भेला ।।४।।
सुरत निरत में जाय समावे ।
जन 'नानगदास" आरती गावे ।।५।।

——

ऐसी आरती राम तुम्हारी ।
चरण शरण में सुरति हमारी ।।१।।
ज्ञान ध्यान का बाजा बाजे ।
सुरत अनाहद अम्बर गाजे ।।२।।
धुन बिच शहर सुन्न बाजारा ।
गृह में लाग रह्या झणकारा ।।३।।
चान्द सूरज एकरण घर छाजे ।
त्रिकुटी मांहि ब्रह्म बिराजै ।।४।।
ईडा पिंगला राग उचारै ।
सुखमरण सेजा पीव पधारै ।।५।।
झिलमिल ज्योति ब्रह्म की जागी ।
जुरा-मरण जम का भय भागी ।।६।।
जन हरका गुरु देव बताया ।
देव दिरंजन देह में पाया ।।७।।

——

आरती राम गुराँ की कीजे ।
सुरत लगाय दरस सुख लीजे ॥टेर॥

सतगुरु सवद दिया ततसारा ।
ता ते छूटा जगत पसारा ॥१॥

मिट गया भरम भया उजियाला ।
सहजां खुल्या मुगत का ताला ॥२॥

वार पार से सुरता लागी ।
दिल की काई सब ही भागी ॥३॥

हिरदा मांही विरम का वासा ।
कोट भाण का भया परकासा ॥४॥

सेवक स्वामी एकऊ होई ।
टेम न दरसे दूजा कोई ॥५॥

श्री रामाय नमः

※ —— ※

दरियाव महाप्रभु का प्रादुर्भाव प्रसंग

रामरतनजी कृत वाणी

रामरतनजी कृत जीवन लीला मे से यही प्रसंग लिये गये है जो पद्मदास कृत जीवन लीला मे इस प्रकार के प्रसंग प्रचा नही पाये गये है ।

इस प्रसग मे मनसा गीगावाई द्वारा जयतारण से द्वारकाधाम में जाकर पुत्र कामना हेतु भगवान से प्रार्थना करना द्वारकाधीश का प्रकट होकर मनसाराम गीगावाई खत्री की मनोकामना पुरी करना द्वारकाधीश का पुजारी के याचना करने पर मनसाराम द्वारा दरिया पुत्र रत्न को घनश्याम पंडा को सौपना घनश्याम पडा स्वस्त्री को दरियालाल की सेवा करने के लिए प्रेरणा देना ।

मनसा गीगा का कुछ दिन द्वारका पुजारी घनश्याम पडा के वहाँ रहना उन्ही दिनो मे जयपुर से जडिया सुनार जो मोतीराम बूवचन्द नाम से उन्हो का मनसाराम से मिलन एवं बातचीत उन्हो के साथ पुनः स्वदेश मारवाड लोटना ।

श्री मनसारामजी गीगाबाई द्वारका मे पुत्र हेतु भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं ।

कृपा मोपर किजो देवा ।
चरण कमल की चाऊ सेवा ।।

केसा काज किया जाणे जग सारा ।
वेद भेद नहीं लहन तु मारा ।।

सती द्रोपदी साख विचारी ।
बढयो चीर अन्त नहीं पारी ॥
तुम त्रिभुवन दीन हितकारी ।
आशा पुरो एक हमारी ॥
पुत्र एक मोकुं दीजे ।
तात इच्छा पूर्ण कीजे ॥
लक्ष्मीनाथ बाल एक लाये ।
मनसा से वचन सुणाये ॥
लेवो पुत्र चित भूलो नाहीं ।
भगत हमारा यह निज भाई ॥
भक्ति आदू प्रिय माने ।
प्रीत जान मै दीना थांने ॥
होंवे भगत जगत जस भारी ।
मम सुमिरण कर सही अधिकारी ॥
पांचो इन्द्री वश यह करसी ।
अनेक जीवन का संकट हरसी ॥
दे उपदेश जीव बहु तारे ।
होसी भगत उजागर भारे ॥
नाम दरियाव इन्हो का मानो ।
सिन्धु जनम भयो है जानो ॥

सिन्धु को कोई थाह न पावे ।
अस भगत जस थाह न आवे ।।
यह पुत्ररत्न वरदान देकर ।
भगवान अन्तर्धान हो गये ।।
मन इच्छा हरि पुरी कीनी ।
सब ही वात मन मांही चीनी ।।
मनो विचार मंदिर मं आये ।
दरस करके हरसाये ।।
बंशीलाल पडो भगवाना ।
तांके ढिग जाय बैठे माना ।।
पूछी पंडे बात सुनाई ।
बरती तन पे ताई सुणाई ।।
बात सुणत पंडो हर्षाई ।
बाल कला कछु कही न जाई ।।
आद भगत जग हित अवतारी ।
दे उपदेश असंख्य जिव तारी ।।
धिन मनसा भाग तुम्हारो ।
कर सेवा तुम जलम सुधारो ।।
कछु दिन यहाँ पर दर्शन करिये ।
धीरज ध्यान हरि धरिये ।।
पुत्र तुम्हारो ऊबे ऊस पारा ।
जब ले जाजो देश तुमारा ।।

मेरे पुत्र हुआ दिन चारी।
सो तो मृत्यु भयो है वारी ॥
मम तिरिया को पुत्र दहिये।
पाय यह जब उसी थईये ॥
इतनो लाभ हमको दीजे।
मनसा मन सोच न कीजे ॥
सच सच बात कहि है साची।
मन मनसा आची राची ॥
दीयो पुत्र कुछ वार न लाई।
पंडा नारी जियो हरषाई ॥
न्हावे धोवे उवटन करावे।
अच्छे अच्छे वस्त्र पहरावे ॥
तिरिया पुरुष सदा सुख साथा।
घर जावण की करता वाता ॥
जाको एक इचरज दरसायो।
पंडो देख मन हरषायो ॥
देखी जहाँ हाथ की रेखा।
कल करतूत भक्त निज देखा ॥
सर्व बात सुणाई जिन को।
गिगा पति मनसा तिन को ॥

सुण सुण बात सदा सुख पावे ।
कहा कहुं कछु कहियन जावे ।।

दोहा—एक दिवस ऐसा भया, आया देश का लोग ।
जयपुर का जड़िया हूता, साथे और जतां को थोक ।।

कुटुम्ब कबीली सग घणो, दर्शन आया सोय ।
नाय धोय पावन होय, मंदिर आये बोय ।।

छबी निरख घनश्याम की, मोर मुकुट मुरली हे हाथ ।
जड़िया कह जगदीश को, धिन-२ दीनानाथ ।।

दीनानाथ दयालजी, दीन उद्धारण आप ।
शरण तुम्हारी राक चित, मेटो मेरी ताप ।।

देशी ढुंढते हाली कारण सोय ।
पूछयो इस विध देवो उत्तर मोय ।।

चौ०—पुत्र हेतु हम थांपे आया ।
हरि कृपा सू पुत्र पाया ।।

सर्व हकीकत बरनी भारी।
जड़िया ने जब हृदय धारी ।।

मोतीराम बूबचन्द नामा ।
बात सुणत कछ बिसमय माना ।।

देख्या चाहुँ पुत्र तेरा ।
बतावो मनसा लावो तेरा ।।

जब मनसा दीया देखाई ।
वालक देख कुशल ईधकाई ।।
देख्या तेज रूप रंग अच्छा ।
मोतीराम जब बोले वाचा ।।
ए तो पुरुष निश्चय अवतारी ।
एसा कहत है तन पे सारी ।।
पूरण भक्त ब्रह्म पढाया ।
भक्त उधारण जग में आया ।।
प्रात भई सव ही जन जागा ।
गाड़ी जोड़ चलन सव लागा ।।
चलत चलत गोमती आये ।
फिर गोमती गंगा न्हाये ।।
कर असनान हरि दर्शन किन्हा ।
पाय प्रसाद परम सुख लिन्हा ।।
जीम जूट होय खुशियारे ।
गाड़ी जोड़ चला जव सारे ।।

जती का प्रसग

इस प्रसंग मे, जडिया सुनार मनसा गीगावाई दरिया वालक को साथ लेकर मारवाड प्रस्थान पथ मे पाली के पास तालाव के निकट निवास करना, तालाव मे (जैनियो) का दादा धाम में एक जती द्वारा दरिया वालक के दर्शन करना व मनसा को प्रलोभन देकर दरिया वालक को स्व शिष्य

बनाने की चेष्टा करना। मनसा के न देने पर जादू टोना द्वारा यक्षिणी को भेज कर दरिया बालक को छिनने की कुचेष्टा करना पर इस प्रकार कृत्य करने पर यक्षिणी व जती के शरीर मे जलन पेदा होना व जती का मनसा व दरिया बालक को प्रणाम कर क्षमा याचना करके स्व शरीर की ज्वाला मिटाना।

गॉव देश सेर फिर आये।
मुरधर देश देख सुख पाये॥
चाल सभी पाली में आया।
देख तलाब परम सुख पाया॥
जती धाम अस्ताना सोहे।
दादा धाम कहत सब कोहे॥
भादव मास कृष्ण पक्ष जानो।
पांचम तिथि पुज्य ये जानो॥
खरतर गछ नाम पुनमचद वांको।
पूज्यमान सबही को ताको॥
विध्या पूरूकला कछु जाने।
नाटक चेटक बहुत वखाणे॥
उण ही देख्या उत्तम बालक।
आय पूछवा लाग्यो आलक॥
कह पूज्य ऐ बाको नहीं।
मोय बताओ तीसचे ओ नहीं॥

देख सूवेक हगीगत वरनी ।
कुण जाणे वांकी मन करणी ।
जब जती लोभ विसारयो ।
नीसचे पुत्त लेण दिल धारयो ।।
लोभ दिखायो मानसा भारी ।
कुछ दिया संग ये डारी ।।
कह मनसा पूज्य सुण लीज्ये ।
ऐसी वात मोय नां कीजे ।।
बोत कष्ट कर पुत्र पायो ।
कैसे देउ तुजको चायो ।।
धन माल की नांय कमी है ।
कृपा आपकी सदा वनी है ।।
जती जान्यो यो कैसे देवे ।
ऐलम वताय छुड़ाय हम लेवे ।।
सिध जखणी नाम सीनांई ।
हरके पुज्य अपणे मन माही ।।
गई जखणी जहां सोता है वाला ।
सव प्राणी पर नाखी जाला ।।
लगी उठावण वाला जव ही ।
खसे न धणी ऐक हेत लही ।।
उलटी लगी अग में ज्वाल ही ।

चरण लाग के चली तुरत ही।
रही बात सब हीरदे सूरत ही ॥
जाय जती से बोले जब ही।
मोसे जोर न लागे कब ही ॥
जती के लगी पिंड में ज्वाला।
दोनु त्रासित भये बेंहुवाला ॥
दोनु जाय चरण तब लागे।
सीतल भई तन की आगे ॥
जती कह सब को समझाई।
आद भगत मुनीवर भाई ॥
मेरा गुना माफ सब कीज्यो।
तुमको पुत्र जुगां जुग जीजो ॥
भेद न पायो करी खेचरी।
आस पास तन हम ही एचरी ॥
तात तुमा इन बात न मानो।
खरो अवलियो नीसचे जानो ॥
पुज्य बात कर अपनी सब भाई।
उठी गयो घर अपनाई ॥
सबी जरणा हरखिया भारी।
धिन रामजी मोच्छ निवारी ॥

सब ही संग बात मिलकर ।
अब तो चलो अपणे घर ही ॥

ऐसो मतो विचारयो तब ही ।
गाड़ी जोड़ चल्या हे सब ही ॥

दोय कोस वहां चल के आये ।
पुना गिरी माता है जहां ये ॥

पुनागिरी माता का प्रसंग

इस प्रसग में मनसा गीगाबाई आदि द्वारा पाली से प्रस्थान होकर ८-९ मील तक यात्रा कर रहे मार्ग मे गाडी (वाहन) का किसी अदृष्ट द्वारा अकस्मात अवरूद्ध देखकर व पुनागिर पहाडी पर पुनागिरी माता (देवी) द्वारा दरिया बालक का चरण छूकर अपने आपको कृतार्थ करके मनसा को चमत्कार बताना ।

सीखर टेकरी देवल सोहै ।
जिसको जस जगत में बहु है ॥

सो देवी दरसण की चाही ।
अपणा आपा दिया छिपाई ॥

बीगन भयो रसता में भारी ।
गाड़ी टूट बिखरी सारी ॥

सब मिल गाड़ी सारण लागे ।
कोई बाना कोई नावण लागे ॥

कोई रसोई करणे ढुका ।
कोई खावण लागा टुका ।।
ताय समे पुनागर आये ।
रूप सरूप बालक को बनवाये ।।
दरिया सुते झोलण भाई ।
चरण परस वा माता आई ।।
इदर उदर देख सब माता ।
जाय चरण में परस्यो गाता ।।
चरण छुय माता हरखाई ।
गई आश्रमी कला बताई ।।
जब जाण्यो सब मन में सोई ।
पुरस पुरा आदू ओही ।।
जांके देवी दरसण आई ।
भगत प्रताप ऐसो है भाई ।।

दोहा—भगती प्यारी राम को: भगता राम सहाय ।
देव देवता कुण गिणे, हरी मुख करे बड़ाई ।
आग्या हरी की आविया, भू मंडल के माह्य ।
राम रतन वो रामजी, भगती कला बदाय ।

प्रेत उद्धार का प्रसंग

इस प्रसग मे जेतारण ग्राम मे श्रावक पूनमचन्द सेठ द्वारा मनसा व उनके परिवार को भोजन निमन्त्रण देना। पूनमचन्द द्वारा आचार्य श्री का चरण प्रक्षालन करना। चरण जल का एक नाले मे वहना व २० प्रेतो का उद्धार होना। उस सेठ की भाभी एक प्रेतणी थी सो किसी विप्र ब्राह्मण की स्त्री मे प्रवेश होने से उनका देरी से आना उनके सगी प्रेतो का उद्धार व अपना अनुदार देखकर किसी लडकी में प्रवेश कर प्रार्थना करके आचार्य श्री के चरण जल देने की प्रार्थना करना व चरणामृत द्वारा उनका भी मोक्ष को प्राप्त होना।

दोहा—एक दिवस ऐसी भई, तारे भूत इक्कीस।
बनीया घर में हूता, तांकी साख कहीस।
सो सव प्रसंग कहत हूं, सुणो सकल हरिजन।
सुणता उपजे प्रेम घणो, नुगरा के दुख मन।
सुगरा सुखीया होत है, सुण परचा की वात।
राम भगत समरथ सदा, जाको हरजी चात।
हरिहर भगत एक है, वे स्वामी वे दास।
वे तो देवे ग्यान गुन, वे वेकुंठा वास।
आदू हरिजन आप है, मेटण त्रिविद ताप।
रामरतन महाराज हो, गुण सागर है आप।

चौपाई—एक वनिया श्रावग है भाई।
जन मनसा प्रीत अघाई॥

उसके घर पे टाणो आयो ।
मनसा को नेत दीरायो ।।
वाके पौत्र समछरी जानो ।
भोजन भात अनेक बखानो ।।
न्यात जात कुटुम्बी सारा ।
जीमण आया सकल न्योतारा ।।
भांत अनेक तियारी कीनी ।
मन में मोद हरख युत बानी ।।
जिन मनसा जीमण बोलाया ।
कुटम सहित सकल ही आया ।।
रंग मालियो पांत्यो बिछाया ।
वाहीं बैठाय पुरुषण लाया ।।
थाल्यां पुरष धरी सब आगे ।
भांत भांत का भोजन सागे ।।
साग अनेक गिणिया नहीं जावे ।
हिल मिल सब ही भोजन पावे ।।
जीम झूठ चूलो करायो ।
सेठ पान का बिड़ा लायो ।।
जन दरिया मुख बीड़ो चायो ।
पीक पान सो थूक बगायो ।।

सो पीक चरणा पर पड़ियो ।
माथा पग धोवण को करियो ॥
उतर नीचा आंगण लाये ।
चोक मध्य चोकड़ी भाये ॥
तांके मध्य नालों एक भानो ।
प्रेत सदा रहे वामें जानो ॥
सो वांका पीतर कहिय ।
यो ती भेद कोई नहीं लहिये ॥
श्री महाराज चरण धोवाए ।
बीस प्रेत गती सुभ पाये ॥
एक प्रेतणी मामी जांकी ।
लगी जाय विप्र के ताकी ॥
वीप्र नार वोत ही संतावे ।
कोहीक दीयस आश्रमों आवे ॥
वो दिन वांसे नीकल आई ।
अपणी मंडली वाहां नहीं पाई ॥
आय आय रोवण जव लागी ।
कोय उपगार करो रे वड़भागी ॥
एक छोरी के डीला आई ।
मुख सेती सव वरण सुनाई ॥

प्रेत सबे हम रेता यांही ।
श्री दरियाव चरण पखलाई ।।
सो सब ही जोगती पाई ।
फेर चरण धोवो रे भाई ।।
जब महाराज के चरण धुवाया ।
प्रेत योनी छुट सुख पाया ।।
ऐसो नाम प्रताप है भाई ।
मूरख नर समझत है नाई ।।
पुनमचन्द वणिया को नामा ।
मनमें भयो हरष सुख धामा ।।
पुनो कह मानसा बारी ।
तेरा पुत्र बड़ा अवतारी ।।
चरणाम्रत से प्रेत गत पाई ।
या समान सम्रत कोय नाई ।।
बार बार उनको सिर नावे ।
जब मनसा बात सुणावे ।।
खूसी रहो सच तुम मानो ।
ये तो पुरस अवलिया जानो ।।
पूरब संस्कार हम पाई ।
यों कह विदा मांग घर आई ।।

अपने भवन पहुँचगा आई ।
सब मिल बात करे हरषाई ।।
जन दरिया लड़कन संग खेले ।
अटपटी बात मधुर मुख बोले ।।
वरस पांच आवता आई ।
सोभा कछु बरनी नहीं जाई ।।

एक पारधी का प्रसंग

इस प्रसग मे, आचार्य महाप्रभु श्री दारा राम सागर तालाव मे ध्यान करना वहाँ पर एक दिन चैन राम व्याध हिंसक द्वारा मरे हुए मृग लेकर सरोवर मे जल पिना। आचार्य श्री का दर्शन करने पर श्रद्धा भाव पैदा होना व साथ ही साथ मे विचारो का उदय होकर सन्त दरिया द्वारा मरा हुआ मृग जिन्दा हो जाय तो भविष्य के लिए हिसा का त्यागकरने की मन ही मन मे प्रतिज्ञा का होना। आचार्य श्री द्वारा व्याध के भावो का ज्ञान होकर व मरे हुए मृग को जिन्दा करना। ऐसे चमत्कार पूर्ण अचा से प्रभावित होकर व्याध द्वारा हिसा का त्याग व आचार्य श्री के शिष्यत्व का स्वीकार करना एव पुष्कर के पहाडो पर जाकर भजन ध्यान करके महान् सन्त को पदवो प्राप्त कर भगवत प्राप्ति का अधिकारी बनना।

दोहा—एक समे दरियावजी राम सरोवर ध्याय ।
दातण कर नांवण कियो, बैठ गये उस ठांय ।।
राम नाम सुमरण करे, आसण पदम लगाय ।
तांय समें मंस अहारी, मृग मार ले जाय ।।

सिखारी को त्रखा लगी आयो सरोवर तीर ।
पाणी पीके सुख भयो, गई तन को पीर ।।
दरिया सा को देखकर, मन उपज्यो भाव ।
चरणां में मस्तक दीयो, उपज्यो कुछ दिल में चाव।।
मन में केवे पारधी, ज्यो मिरगो जीव त थाय ।
सतगुर फिर यों करु, कबहुं न पाप कमाय ।।
ऐसी आस दिल की, जाण गये म्हाराज ।
फिर मृगी चेतन करी, सो में वरणो समाज ।।
रामराय कृपा करी, भगत काज बड़ साज ।
जन दरिया को मनोरथ, सो पुरव्यो म्हाराज ।।

चौपाई—राम सागर सरोवर कहिये,
जन दरिया नॉव कु जपहिये ।
सदा वैठ वहां हरि गुण गावे,
पावन भूम सकल मन भावे ।।
बैठा आसण ध्यान लगाई,
राम नाम सुमरत है वाई ।
ऐसे निसदिन आवे जावे,
जन दरिया महाराज सदा वे ।।
एक दिना पाछली पेरा,
दरिया गये सरोवर तीरा ।

नाय अंग मंजन कीना,
आप बैठ राम चित दिना ।।
आये एक पारधी बनका,
जीने मृग मारया है बन का ।
खांधे नाक ग्राम तट आया,
देख सरोवर मन सुख पाया ।।
तलाब पाल पे रखी सीखोरा,
जल पीवण को आयो दोरा ।
हाथ धोय पाणी जब पीना,
उपज्यो सुख अन्माई ना ।।
देखो तो दरियावसा बैठा वाई,
हाथ जोड़ चरणां सिर नाई ।
परचो लेबा मना विचारयो,
मन में मतो एक उण धारचो ।।
ज्यो यो मृगो जीवत होई,
दरियासा गुर सिर धारो मोही ।
नही तो सकल जूठ हे बाता,
सब दुनिया सो खोटी गाता ।।
ऐसो मत धार दिल सेटो,
दरिया साके आगे बेठो ।

जब दरिया ने नेत्र उघाड़ी,
देखे तो बैठो जीवताड़ी ।।

अगम बात दिल की सब जाणी,
दरिया हर से करणा ठाणी ।
राम राम तुम सरण आई,
मरी मृगी को देवो जीवाई ।।

ऐसे बार मन मांही आपू,
राम राम मुख कीनो जापू ।
भई सजीवण मिरगी जब ही,
पारधी पड़यो चरणां में तब ही ।।

सता पुन पूरबलो जाण्यो,
तेने साथे ग्यान बखाण्यो ।
राम नाम को सुमरन करो,
जीव हत्या सब परहरो ।।

एसी बात समज तम लीज्यो,
बार—२ कहुँ नहचे कीजो ।
और अनेक भ्रमना छोड़ाई,
राम मंत्र सो सुरत लगाई ।।

चेनाराम पारधी नामा,
तिन सुण सुख आयो घट धामा ।

म सासा सब भाग्या,
छोड़्यो पाप राम रंग लाग्यो ॥

रिया सतगुर सिर कीना,
अवितौ मन हरि रंग भीना ।

मांग पुष्कर पे आया,
देख पहाड़ बोत सुख पाया ॥

ख अन्दर एक सारी,
भजना बैठे देव मुरारी ।

ांच वॉह सुमरण करिया,
राम भजन से पाप सब जरिया ॥

दरसण पाया हरि केरा,
गुर कृपा ने उपज्यो सूरा ।

ोत दरिया को दरसण,
ताते मिल्या रामजी ततक्षण ॥

ारिया राम प्रतापे,
आवे शरण ताय दुख कांपे ।

ारा पाप मिटाया,
चेना पारधी परम सुख पाया ॥

रस भजन उण कीनो,
उत्तम काल देह तज दीनो ।

दोहा

सोही सदगत उणने पाई,
रामप्रताप ऐसा है भाई ।।
राम भज्या एसे सुख पावे,
मुरख के इतवार ने आंवे ।
गुर मुखी साची सत भाखे,
नुगरा सुण नींदा दाखे ।।
जो नींदा सतन की कर हो,
सात जनम इजगर का धर हे ।
ताते संत राम रूप जाणो,
भेद ताय में मत तुम आणो ।।
रामरतन गुरदेव बताया,
जन दरिया के चरित में गाया ।
सीखे सुणे सुखी जन रेवे,
भाव नेम गुर साचो लेवे ।।

दोहा—चैनराम पारधी को, परचो कह्यो सुणाय ।
गुर मुखीया हरसत भये, नुगरा ने आवे दाह ।।
चेनराम सु भगत कर, पाया पद निरबाण ।
सो प्रताप दरियाव को, मै तो अनुहार बखाण ।।
दरिया गुण दरियाव है, थाग न आवे कोय ।
जनम सुफल कर लीजिये, तन मन भाव बधाय ।।

पूरणदासजी रक्षा प्रसंग

इस प्रसग में आचार्य श्री दरिया महाप्रभु के प्रधान पाठवी
ष्य श्री पूर्णदासजी द्वारा आचार्य श्री के भक्ति प्रभाव से
ावित होकर गुरु दीक्षा लेकर ध्यानयोग का अभ्यास करना,
मे पूर्णदासजी महाराज का देवी का इष्ट होने से देवी पूजा
ति कम होने से देवी का प्रकोप होना पूर्णदासजी द्वारा भय-
त होकर सतगुरु दरिया महाप्रभु से प्रार्थना करना आचार्य
ाप्रभु द्वारा पूणदास शिष्य की देवी प्रकाप से रक्षा करना।

॥ दोहा ॥

ी प्रथम दरियाव सु मिलिया पूरण आय।
ा करी ता उपरे, सो मै कहुं सुणाय ॥

ण को भय उपज्यो, सुमरया जन दरियाव।
य करी तहां आय के, उपज्यो पूरण भाव ॥

संकट भारी पड़या, सोमे कहत सुणाय।
ी दिखायो भय जब, अरज करी मन माय ॥

यो संकट उबरां, आवु सरणे तोय।
अनाथ बल कोय नही, तुम रक्षक मोय होय ॥

बिद करुणा करी, राम जना से प्रीत।
र करी म्हाराज जब, सो सुणज्यो सब रीत ॥

चौपाई—पूरणदास रेण के माही,
देवी देव पूजते भाई ।
देवी इष्ट सदा है जांके,
आस भरोसो ओर न वांके ।।
पुजा पुजी बोत चढावे,
तन मन सेती बाको ध्यावे ।
नव नोरथा व्रत ही राखे,
होम जिग पूजा पख आखे ।।
राम नाम की भगती न भाई,
करम करे निरभे मन लाई ।
पुन पूरबला जागे जांका,
मन में प्यास लगी कछु कांका ।।
दरिया सा की महिमा सुण पाई,
कछु पाप दूरा हुआ भाई ।।
जिण समे मन मतो विचारो,
दरसण काज आये चितधारी ।।
श्री म्हाराज का दरसण पाया,
हाथ जोड़ चरणां सिर नहाया ।
जन म्हाराज बोले मुख ऐसा,
राम राम मुख करत प्रकेसा ।।

पूरणदास के दिल की जाणे,
सब ही बात प्रकट बखाणे ।
तेरा भाव राम सो नाही,
आनदेव की करत बड़ाई ।।

आनदेव को जो कोई ध्यावे,
अतकाल नरका में जावे ।
आन देव हरि भगत न भावे,
कम करे अंत दु:ख पावे ।।

देखो राम दया निध सागर,
गुण सिन्धु दील कृपा के आगर ।
मया करी मानवदेह पाई,
जाकी कला देखो रे भाई ।।

गरभ मांय उंदे सिर झूल्यो,
बारे आय राय केम भूल्यो ।
रगत चाय में दूध उपायो,
तेरे कारण खेल बणायो ।।

भूल्या भूरो होवे रे भायो,
ग्रह सुत दारा के मन आयो ।
मात पिता सब मतलब का यारी,
न्यारी सग न आवे प्यारी ।।

आचार्य श्री द्वारा पूर्णदासजी महाराज को ध्यान मार्ग वताना

पृष्ठ ११८
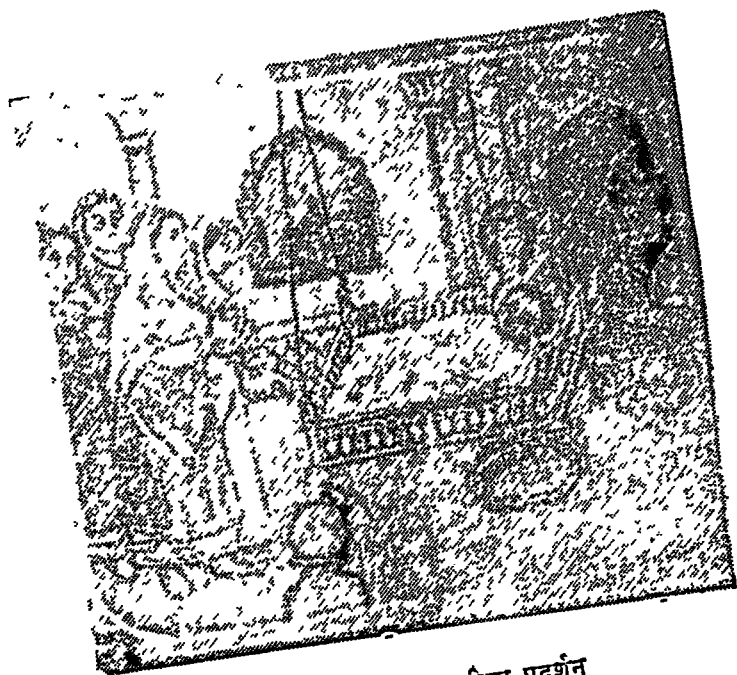
जयतारण मे बाल लीला प्रदर्शन
नाग देवता ने बालक दरियाव को धूप से बचाने के लिये
अपने फण से छत्र छाया की

पृष्ठ १२८

अभख भख असुर का खाणा,
नरक माय जाणे का ठाणा ।
करम किया सो छुटे नाई,
एक करम सहस्त्र भुगताई ॥

गरभ माय रामजी राख्यो,
जांको नाम कदे नहीं भारण्यो ।
मूरख मूढ विसे रस भाखी,
अन्त काल दुःख पावे डाकी ॥

स विध ब्यान बोत ही भाखे,
कछुक बात हिरदे में राखे ।
रसण कर अपणे घर आये,
मन में भाव घणोरे छाये ॥

मग रहयो कछु कहयो न जाई,
कल तो सिर पे गुरु कराई ।
ांज पड़ी भोजन जब कीना,
देवी को धूप न दीना ॥

तो नींद रात अन्धियारी,
आंधी रात भयं कर भारी ।
य समे देवी विकराला,
क्रोध भये बोलत मुख ज्वाला ॥

क्यो भूलो मेरी पूज पुजारीं,
भगत होवरा की मन में धारीं ।
तुज को भय नहीं हाल हमारो,
करु कुटम को नास अवेरो ।।

तेरो प्राण हरो छिन माई,
भगत मोय सुहावे नाई ।
मेरो दास अवे कहां जावे,
ओर न कर तेरो निवावे ।।

ताते हमको छोड़ो नाई,
जीवत चाहे जो जुग माहीं ।
अैसे रूप विकाल भय कारी,
पूरणदास देह कपत सारी ।।

आरत माम अरज एक लाई,
हो दरियाव सरण चरणाई ।
जो मोको जीवत तुम चावो,
ऐ संकट आण बचावो ।।

आगे सन्त साख ऐसे भाखी,
भीड़ पड़या पत सत गुर राखी ।
तुम माय संकट ले वो उबारी,
त्राय त्राय सरणागत थारी ।।

सबद ब्रह्म दरिया धर रूपा,
प्रगट भये जाहां आप अनूपा ।
देवी देख चरण सिर नाया,
अब ही करो इना से दाया ॥

यों कही देवी अन्तर होई,
श्री म्हाराज गये धाम सोई ।
प्रात भयो पूरण दासा,
अब दरसण को लागी आसा ॥

मन में उमंग दरस का आया,
हात जोड़ परसाद चढाया ।
करुणा करे अर्ज गुदरावे,
आप मिल्या अबे दुख रहावे ॥

तो विरद लाजेगा स्वामी,
तुम हमारे अन्तर जामी ।
दुख माय आप छुड़ायो,
ताते छोड़ सरण में आयो ॥

कृपा करो सरणागत राखो,
अब तो सग तजू नहीं थांको ।
राम मंत गुर दिख्या दीजो,
आव घटे बिलम नहीं कीज्यो ॥

कृपा दृष्टी पूरण पे धारे,
जन दरिया से वचन उचारे ।
ज्ञान गिरा चरचा विसतारे,
मन दुबध्या तनराग नीकारे ॥

भरम वासना दीवी भगाई,
राम मंत्र दरियाव सुनाई ।
माथे हस्त दिया है जांके,
पूरणदास के भाग प्रकासे ॥

दोहा—प्रथम मिले दरियाव सु, पूरणदास जन जाण ।
राम मंत्र दरिया दीयो, मिट गई खेचां ताण ॥

पूरणदास परचे भये, सिर पे दरिया दास ।
कलह भरमना मिट गई, हीरदे नांव प्रकास ॥

पूरणदासजी समृथ भये, सतगुर के परताप ।
रायण नगर के माय ने, जप्या अजपा जाप ॥

अथ कुवा को प्रसंग

इस प्रसंग मे जयपुर महाराज का आचार्य श्री को निमन्त्रण देकर जयपुर सत्सग हेतु बुलाना। आचार्य महाप्रभु शिष्यो सहित जयपुर गमन करना, मार्ग मे प्यास लगने पर भादु गाव के कुवा पर समन शिष्य का जाना। जल आचमन किया तो जल नमक जैसे खारा लगना, पर आचार्य श्री की कृपा द्वारा पूरे कुवा के खारा पानी का अमृत के समान मीठा बनना।

दोहा—जयपुर के रासत में, भादु छोटो गाम।
मोटो तालाब ता पास में, कूप बड़ो अतसाव ।।

पाणी की तसती घणी, सब कोई पावे त्रास।
कूप नीर खारा घणा, पाणी न भाजे प्यास ।।

जेपुर श्री माराज ही, रमणी पदारिया आप।
पाछा आवत देस में, मघ में लागी ताप ।।

भादु गांव देख के, आये कुवारे पास।
वृछ देख आसण किया, लागी जल की प्यास ।।

सिख साते पांचु होता, हुकम दीयो म्हाराज।
समन जल भर लाविया, जलद सुधारो काज ।।

चौपाई—प्यास लगी सामी को भारी,
जल भर लावो करो त्यारी।

समन जल भरवाने गये,
कूप माँहि डोरी भर दईये ॥
गड़वो जल को भरियो आई,
भाजवा लागो जल पीलाई ।
जीभ जल पे पीयो न पाणी,
खार समान एसो परमाणी ॥
सोच समन के मन में थाये,
अब जल अपणे कांसो लाए ।
बीन पाणी प्राण दुःख पावे,
कैसे करां कहां पे जावे ॥
जब चाल सतगुर पे आया,
खारो पाणी घड़ावो भराये ।
माराज जल मांगे तब ही,
कह सतगुर सुं खारा जल ही ॥
कह माराज मीठा है भाई,
तुम दिल में मत घवराई ।
जब माराज जल ही पीयो,
कुछ बाकी समन जब लीयो ॥
इम्रत जल वे गीयो हे भाई,
फेर माराज जब गड़वो मंगवाई ।

समन फेर भर कर लाया,
सब सन्ता को जल पीलाया ।।

सब मन में हरख्या भारी,
धिन कला गुर जी थांरी ।
हरि सन्ता को पार न पावे,
वुद माफक गुर कीरती गावे ।।

पेर पाछे ले वांसे पदारे,
देस आपणे आवत दुवारे ।
दीवस इग्यारे रायण आये,
बीच जीव अनेक चिताये ।।

राम भजन को करे सदाई,
जहां तहां राम करे है स्याई ।
राम जना की राम पत राखे,
वेद पुराण सासत्र भाखे ।।

दोहा—नीर पलटायो रामजी, राम जना के काज ।
राम रतन हरि आप ही, कैसे सारया काज ।।

दरिया समरथ आप है, जांके राम प्रताप ।
मन चित्या कारज करे, टले सकल सन्ताप ।।

जाट केसोरामजी को प्रसंग

इस प्रसग मे जावली ग्राम निवासी केसोराम जाट द्वारा आचार्य श्री की प्रार्थना कर घर बुलाकर सेवा करना पुत्र व धन की प्रार्थना करना। आचार्य श्री द्वारा प्रसन्न होकर वर देना व केसोराम जाट की मनोकामना पुरी करना।

दोहा—जाट केसो जावली बसे, दरिया साके दास।
उन कृपा आनन्द भयो, जाको कहु इतिहास ॥

कृपा भई म्हाराज की, गई विपत सब खोई।
अन धन लिछमी बहुवढ़ी, जां घर पर पे नित सोई ॥

केसा एसा मन है, सदा सन्त से प्यार।
जांके गुर दरियावजी, धरम हेत हो अवतार ॥

जांके खेत में फूंकड़ा, पाया श्री जी सन्त।
ता पुन तुं भगत मिली, क्रम कटे अनन्त ॥

वा घर आये दरियावजी, हेन हरि का दास।
हात जोड़ चरणा पड़यो, मन में भयो हुलास ॥

चौपाई—गांव कूड़ी म्हाराज पधारे,
दया दीन पर मन में धारे।
आप पहुंच गये उनके धामा,
हाथ जोड़ आयो मुख सामा ॥

नमसकार कर परकमा-दीना,
हाथ जोड़-सास टांग ही कीना ।
मुख से मुदरी गिरा-उचारे,
धन भाग आज भये मारे ।।

कर बिनती अपणे घर लाये,
आछो गदरो आण बिछाये ।
श्री म्हाराज वीराजे तांपे,
दरस किया आनन्द आये ।।

चरण धोय चरणाम्रत ही-लीना,
सब-जणा आनन्द सुख भीना ।
श्री माराज नावण कीना,
नित नेम सुसरण जो चीना ।।

पाछे सब ही दरसण आया,
च्यार वरण मिल मोद बढाया ।
श्री म्हाराज कथा सुणावे,
राम जनां के-आनन्द आवे ।।

दोय घड़ी चरचा फरमाई,
राम जन हरस भय भाई ।
सबी जना ऐसी उनमानो,
जनम आपनो सुफ़ल हीं मानी ।।

महापुरुषों का दरसण पाया,
जनम के ही का पाप गमाया ।
संत महिमा हरिजी मुख गावे,
ओर कूण जो पार ही पावे ॥

कथा भई पूरण भोजन की त्यारी,
केसो कहे बार नही बारी ।
जीमण सारु बाजोट बिछाये,
आसण चोको आन पतराये ॥

पीछे सतगुर माही बुलाये,
जीमण सारु आण बैठाये ।
थाल पुरस आगे धर दीना,
ले पखो तब पावन कीना ॥

राम राम कह राम अरपणाई,
गुर गोविन्द के भोग लगाई ।
पीछे ग्रास मुख में लीनो,
भोजन बखाण आछो थे कीनो ॥

पायो प्रसाद प्रेम से सोई,
चलु करायो तब ही तोई ।
पीछे आसण आय विराजे,
सेवक मन में बोत ही राजे ॥

सेवक दयाल और आग्याकारी,
पुत्रहीन और धन ही दु:खारी ।
जन म्हाराज सब ही जाणे,
दया करी बोले आप ही वाणे ।।

केसोराम कुसी रहो मन में,
जरा संक लावो नही तन में ।
पुत्र होयगा तेरे दोई,
जासो वंस बड़ जेसा होई ।।

माया घणी घर तेरे होई,
राज साज में पासो तोई ।
राम राम विसवास ही राखो,
सत वचन मुख सेती भाखो ।।

वर दीयो दरिया सा सामी,
अब केसा के रही न खामी ।
पाछा चलण रायण को धारा,
केसा सेती वचन उचारा ।।

करी मनवार बोत स्वामी का,
अब तो हमको जाणा ठीका ।

कृत वाणी मंगलाचरण

सतगुरु निमो न्मो निरजण राये ।
हर भगत कूँ करण पदम की साये ?

ूत, भविष्य, वर्तमान काल के अवतार सन्त-
माध्यम से मगलाचरण किया गया हैं ।

देव को पून फून बारु बार ।
पा करो, भगवंत सब अवतार ।।

नाथ कूँ बेर बेर प्रणाम ।
ादेव कूँ चरण शरण विश्राम ।।

। के षोडष विषवा वीस ।
ार कूँ कृपा करो दगदीश ।।

ड़दान कु निमसकार नित नेम ।
न रिष ता चरण सु प्रेम ।।

ंच्छना भगन चंद हरसूर ।
ास की, मै चरण की धूर ।।

ान्दना ध्रु कु वंदन फेर ।
ह्लाद को मेटो भरम अंधेर ।।

राम धाम रेण के निज मन्दिर का दृश्य पृ-ठ१३४

गंद विभीषण जामवंत सिवरी संत भडोर ।
तुमान सुग्रीव बिन, नही जीव को ठोर ॥

ोर धन अमरीक जन प्रीषत गुर गगेच ।
र बलब हर दास की चरण कवल की सेव ॥

ोमा रद जलु नृप, पांडव भगत पड़दान ।
रख गोपीचंद, भरतरी दीज्यो ब्रह्म गियान ॥

ह रामानन्द नाम दे, अनन्तानंदे कबीर ।
पा जन रेदास धना को धरु ध्यान मन धीर ॥

र नानक गोमद रता, दादू दीन दयाल ।
रिदास हर भगतद्यो, मेटो भरम जंजाल ॥

तदास स्वामी नमो, प्रगट प्रेम महाराज ।
न दरिया सु बीनती, सरब सुधारो काज ॥

सनदास सुखराम जन, पूरण नानगदास ।
ाख चारुँ दरिहाव का करो भगत प्रकास ॥

त आस हिरदे घणी, अहे प्रेम जिग्यास ।
ह गद वाणी अटपटी, सिवरण सास उसास ॥

रणा लुण गुरुदेव जी, बोल्या सन्त सुजान ।
रमत दुवध्या दूर कर, धरो ब्रह्म को ध्यान ॥

ोला जन दरियाव की, निशदिन करो नचीत ।
न मन धन अरपण करो, भाव सेत परतीत ॥

आग्या दिवी गुरुदेवजी, कर लीला विस्तार ।
मुद्रा जागे चाचरी, खुले ग्यान भण्डार ।।
सतगुरु मोतीरामजी, करी अगम सुं अवाज ।
हरजन को जस वरणन कर, राम सुदारे काज ।।
हरजन को जस वरणन कर, कटे काल की पास ।
निरभे होय भव करम मिटे, अण भै ग्यान प्रकाश ।।
हरजन को जस वरणन कर, मन वछत फल होय ।
सतगुर का प्रताप से, गंजन न सके कोय ।।
हरजन को जस वरणन कर, उपजे ग्यान भगत वैराग ।
विघन हरन मगल करन, व्रह् प्रेम बड भाग ।।
हरजन को जस वरणन कर, होय निरधन सुं धनवंत ।
बार बार सब कह् गया, अनत कोट निज सन्त ।।
राम नाम धन अघट है, सतगुर दियो बताय ।
पदमदास निश दिन रटे, तो मुगत खजीना खाय ।।
अैसा है गुरदेवजी, परमारथ परसिद्ध ।
तीन लोक की संप्रदा, पकड़ाई नव निद्ध ।।

अथ भगत वीसतार को प्रसंग

इस प्रसग मे श्री नारदमुनि द्वारा भगवान महा विष्णु के पास जाकर हाथ जोडकर उदासीनता प्रकट करना और भारत माता की शुन्य गोद को भरने का सकेत करना भगवान विष्णु द्वारा नारद जी माहाराज की प्रार्थना स्वीकार करके भारत भूमि को अलकृत करने दरिया महाप्रभु को भेजना ।

कहुं भगत विसतार, सरब सुण लीज्यो लोई ।
एसो नाम प्रताप, और दुजो नहीं कोई ।।
लीला अगम अगाद, साध की महिमा गाऊं ।
सतगुर के परताप, संक हिरदे नहीं लावुं ।।
निसक सबद नीरवाण, प्राण भै उपजे नाहीं ।
सुणज्यो अरथ विचार, समज देखो घट माहीं ।।
नै करमी नेह काम, राम रसणा सुं गावे ।
रागधैक भै क्रम, निकट नैड़ा नहीं आवे ।।
एसा सन्त सधीर ताहि किमि महमा करहुं ।
मनसा वाचा जाण, ध्यान हिरधा में धरहुं ।।
मात लोक के माहि, सदा रिख नारद आवे ।
गऊ दुवे पत वेर, लोक तीनों फिर जावे ।।
एसी सता समाध आप भगवान कुवावे ।
बोहत करत प्रतपाल, भगत को विड़द बधावें ।।

सिज्यां ने वैकुंठ विश्नु की सभा विराजे ।
इन्द्र वरण कुबेर, आरती सुर नर साजे ।।
सनकादिक रिषराय, पारवत निशदिन ध्यावे ।
महालिक्ष्मी महाराज, प्रीत कर मगल गावे ।।
जहां नारद भगवान, अरज संतन की करहे ।
आप विश्न भगवान, ध्यान हिरदा में धरे है ।।
कह विस्न भगवान, सुणो रिष नारद राई ।
कहा तेरा मन माहि कहा उणारथ भाई ।।
कहें नारद रिसराई. आप हो अन्तरजामी ।
सब घट व्यापक आप, आप सब ही का सामी ।।
जल जल सकल जिहान, प्रगट घट व्यापक देवा ।
सिव ब्रह्मा अरु सेस, करे चरणां की सेवा ।।
आप धरो अवतार, आप ही असुर सघारो ।
अधम उधारण, आप सब ही कुं तारो ।।
परमारथ के काज, अरज मम सुणो गुंसाई ।
सदा काल म्हाराज, भगत जन मेलो सांई ।।
एसा सन्त सधीर, धर धीरज ज्यूं समता भारी ।
ऊंडा समन्द से माह, बड़ा तरवर विसतारी ।।
वासदेव भगवान कृपा कर, भगत पठाया ।
अगम देश से चाल, हाल कर हरिजन आया ।।

भगत लषण नव वीस अंग आठुं इदकारी ।
नवधा नो प्रकार भगत दसधा सुखदाई ।।
सांख जोग सिव ध्रम, जुगति जन सुख का सागर ।
दयानद दरवेस, ज्ञान का बड़ा उजागर ।।
मत ज्ञान समंत, संत साथे ले आया ।
मान लोक के मांय, विशन भगवान पठाया ।।
सतरा सेके संमत, वरस तेतीसो भारी ।
मास भादवा वद, अष्टमी तिथि इदकारी ।।
न्मो साम की वेर, जनम धर आप पधारया ।
धरमो नांव दरियाव, अनत जीवी कुं तारया ।।
नों जोगेसर नो नाथ सिद्ध, चौरासी सारा ।
जिठा बिरयां जिण वार, किसन लिनो अवतारा ।।
भगवंत सब अवतार, जिनम सज्या घर आया ।
कर कारज महाराज, मोष तन माहि समाया ।।
धन नारद सुख व्यास, जन्म संज्या को लीनो ।
भागवत धर्म थाप, आप म्हाभारत कीनो ।।
मारु मरुधर खंड पुरी, जैतारण भारी ।
जन दरिया ववतार धार, आया ब्रह्मचारी ।।
पिता मनसा आप, मात गीगा इद काइ ।
दिन दिन कला सवाय, सदा संतन सुख दाई ।।
मात गोद के माहि पीये, ईमृत रस धारा ।

जिल मिल वरसे नूर, देव मूरत अवतारी ।।
एसो सुषम सरीर, दिष्ट कोमलता भारी ।
सीतल चरण रुप, केवल ज्यूँ अंग इदकारी ।।
अैसी सूरत अनूम, ओपमा अनत विराजे ।
उद भाण प्रकाश, चद ज्यूँ सोभा छाजे ।।

अथ बाल पणो का प्रसंग

इस प्रसग मे श्री दरिया महाप्रभु के वाल काल लोला हैं माता का वाहर जाना वालक के शरीर पर धूप आना सर्प (शेप भगवान) का स्व मुख छत्तरु से छाया करना माता का देखना अश्चर्यमयी घटना को पडित को कहना पडित काजो द्वारा शकुन शास्त्रोय ज्ञान से वालक के प्रभाव को वताना ।

बाल पणे दरियाव, एक दिन सुख फुरमायो ।
काल रुप नाग दोड़ कर दरसण आयो ।।
तपे सूर अन्त तेज, उसत (धूप) लागो अत भारी ।
व्याकुल भयो शरीर, छतर किनो मिणधारी ।।
मात पिता बड़ भाग, देख इचरज मन आन्यो ।
कही काजी ने वात, पछे धीरज मन ठान्यो ।।
काजी देख किताब, बोत विद सीस हलायो ।
कलारुप करतूत, बड़ो पे गंवर आयो ।।

नवे पातासा आप नवे परजा सब छत्र धारी ।
नवे मीर ऊमरावे, नवे परजा ससारी ।।
असी बात अदभुत, केरण में आवे नाही ।
सुरग मात पताल, ताहि में इदक बड़ाई ।।
प्रथम वरस एक दोय, त्रीतिये प्राण उजासा ।
चत्र पांच षट माहि रतन ज्यूँ जोति प्रकासा ।।
वरस सपत का भया, पिता तब धाम सिधाया ।
जैतारण सुँ चाल, हाल कर राहेण आया ।।
नानो नाम किशन भाग मोरे अति भारी ।
जन दरिया सुँ प्रीत, रीत आरत उर धारी ।।

अथ पंडित को प्रसंग

इस प्रसग मे काशी वाशी स्वरुपानंद पडित का जोधपुर दरवार के वहाँ जाना मार्ग जयतारण गांव मे वालक संग खेलने वाले दरिया महाप्रभु का दर्शन कर चकित होना व हस्तरेखा देखकर एक वहुत बड़ा महापुरुष वताना ।

एक समे दरियाव रमे बालक के माहि ।
एसी दसा सरुप, कहण में आवे नाहि ।।
सनकादिक ज्यूँ प्राण, जाण जोगेसर जैसा ।
बालजती सुखदेव, दीपे ज्यूँ जनक नरेशा ।।
पंडित चतुर सुजाण, चाल कासी ते आया ।
देखत मुख दीदार, बोहत आनन्द सुख पाया ।।

पंडित कह्यो सवाल, सुणोरे बालक भाई ।
यह लड़का हे कून, मोहि को द्यो इह बताई ।।
काह जात काह पांत, काह हे वरण वसेरा ।
कह पडित ततकाल, बाल मे मांगत बेरा ।।
सुण पडित के सवाल, बाल सब बोले सारा ।
खत्री कुल हे वरण, अब तुम करो विचारा ।।
तब दुज लिया बुलाय, हाथ की रेखा देखी ।
एसो पंडित राज, बुध को बड़ो बमेखी ।।
सामुद्रग श्रलोक, पढ पढ अरथ बतावे ।
होसी फड़ो फकीर, अवलीया पुरुष कहावे ।।
असो अजब अनूप, देवता दरसण करही ।
राव रक सुलतान, सीस चरणा में धरही ।।
सुणी लोक बाजार, कह पंडित ने एसी ।
खत्री को हे जात फकीरी आप ही लेसी ।।
स्वरुपानद पंडित कह लमझाय, जात को कारण नाहि ।
लेख लिख्या महाराज, इस्या मसतग माही ।।
साह सुलतान कबीर, फ्रीद हेतम सा आदु ।
पंडित करे बखाण, फकर दरिया सा सादु ।।

रेल मे सतगुरु जिज्ञासा व भगवद् दर्शन

पृष्ठ १४१

रेण मे श्री प्रेमदासजी महाराज ग्राचार्य श्री को तारक मन्त्र का उपदेश
देते हुए वि० स० १७६७ कार्तिक शु० ११ (एकादशी)
पृष्ठ १४२

विद्या पढ़ण को प्रसंग

इस प्रसग मे वाल्य काल मे दरिया महाप्रभु का सभी ग्रन्थो का अध्ययन करना विवेक की जागृति होना और सतगुर मिलन को तीव्र इच्छा का प्रकट होना ।

बरस बारवा माहि, आप भणवाने बैठा ।
षबर दार पर बुद, सुद कर बोले मीठा ।।
संसक्रीत व्याकरण, विद्या ले धारण कीनी ।
फेर अठारह पुराण, सासत्र सता लीनी ।।
कलमा कुँन कताब, पारसी हरफ उचारया ।
हीन्दु मुललमान, ग्यान दोन्युं मन धारया ।।
भागवत श्रीमद पढे, रामायण गीता ।
पढे वसिसठ सार, वेद धुन निसदिन करता ।।
जप तप संजम आप, कासटया करड़ी किनी ।
गुण ग्राही महाराज, समज सारां की लीनी ।।
लाखे लाव तलाब साद रहे वरगु माहि ।
एसी कथा बमेख, सुणावे सब के ताही ।।
जन दरिया बड़ भाग सतगुर पर उपकारी ।
देवे सत उपदेश, सदा पर हितकारी ।।
एक दिन अख्यान कथा में एसो आयो ।
राम राम हे साच, और सब झूठ बतायो ।।

सिव सनकादिक इन्द्र, बिन सतगुर नही तीरिया ।
भागवत का वचन, आप सुण हिरदे धरिया ।।

सिख गुर मिलण प्रीत को प्रसंग

इस प्रसग मे भगवत प्राप्ति की महान जिज्ञाला का जागृत होना सतगुर के लिए भगवान से प्रार्थना करना प्रार्थना सुनकर भगवान का आकाशवाणी द्वारा सतगुर मिलन का आश्वासन देना । ओर प्रभु की प्रेरणा पाकर दिव्य सतगुरु श्री प्रेमदास जी म० की दिव्य कृपा से गुरुमत्र दीक्षा धारण करना

राम नाम निज मूल, ओर सब डालर पाना ।
कह्यो दास दरियाव, मिले कोई संत सयाना ।।
इण विद उपजी प्रीत, सुरत सतगुर सु लागी ।
घट दरसण ले आद, हेर वड़ भागी ।।
राहेण नगर मझार प्रगट जन दरिया दासा ।
ब्रहे ग्यान बेराग, नाम सु लगी पीयासा ।।
हीरदे आरत ध्यान, प्रेम उपज्यो घर माही ।
निसदिन फिरे उदास, मिले कोई साहेब सांई ।
तव वासदेव भगवान, क्रिपा कर वोल्या वाणी ।।
दरिया धिरज राख, मिलेगा सारग प्राणी ।
जव आयो विसवास, दास दरिया के भारी ।।

तुम देवन का देव, सेव सब करे तुमारी।
हूं दासन को दास, सदा चरणा में राखो ।।
भगतदान द्यो मोहि श्रोर दुजी मत भाखो।
कृपा करी म्हाराज दास दरिया पर भारी ।।
प्रेम दास निज संत भगत जन करी करारो ।।
एक ग्रासण षट मास, सास सासो इक धारा ।।
करी ब्रह्म की भगत, प्रेम जन हरके प्यारा।
उनको धर विश्वास, सदा अन्तरगत धारो ।।
मिलसी विसवावीस, कह्यो तूं करजे म्हारो।
अन्तर ध्यान भगवान, आप वेकुंठ सिधाया ।।
ततकाल तहतीक सत जन राहेण आया।
तपे सूर जूं तेज, अंग सीतल ज्यूं चंदा ।।
बदन करे भललाट, संत जन हरके वंदा।
देखत जन दरियाव हरश आनन्द मन माहो ।।
दयानंद जन जान, बड़ा गुरदेव गुंसाई।
कह्यो दास दरिधाव कृपा मोय ऊपर कोजे ।।
पूरब प्रीत पीछाणा, भेद भगतन को दीजे।
प्रेमदास म्हाराज, मया कर भेद बताया ।।
राम राम निज मँत्र, हाथ दरिया के आया।
तेतीसा को जनम गुणतरे दक्ष्या दीनी ।।
बरस छतीस का भया, दिन अठतर बीता।

जन दरिया म्हाराज, लीबी सतगुर सुं संता ।।
होय लघुता आधीन दीन होय चरणा लागा ।
सुण्या सखणां सबद, प्राण का भोडर भागा ।।
सिव मत्र सुखदेव सदा पारवती ध्याया ।
जन दरिया म्हाराज राम रसाण सुं गाया ।।

अथ घट प्रथा को प्रसंग

इन प्रसङ्ग मे ध्यान योग साधना का प्रायोगिक विशद वर्णन रसना कण्ठ हृदय मे शब्द की अद्भुत लोला व नाभी पताल मे सुरत शब्द योग से अद्भुत चमत्कार का होना शब्द का वकना मे चलकर त्रिकूटी मे जाना और वहाँ पर शब्द कृपा का प्रत्यक्ष (भीतर की) आँखो के दर्शन करना एवं शब्द का ब्रह्मरन्ध्र मे पहुँचना व कई प्रकार वाद्यो का सुनना व पूर्ण आनन्द का अनुभव करना और सतगुरु प्रेमदासजी महाराज का प्रसन्न होना ।

रसणा हिरदे नाभ काम गढ जीता भारी ।
मूल चक्र कु वंद भेद पायो इदकारी ।।
लांघ्या ओघट घाट मेर होय मारग लागा ।
चढ्या त्रिकुटी तगत, अघट सिव दाना वागा ।।
वरस एक रख मास, दास काया गढ जीता ।
मिल्या ब्रह्म सुं जाय, मड में भया वदीता ।।
घुरया नाद घण घोर, भेर मुरली धुन वाजे ।
विन बादल तां बीज, घोर गन अमर गाजे ।।

बरसै जिर भिर मैह, चलै अगम जल धारा ।
नाल खाल धहचाल, हरया वन भार अडारा ।।
बोले चातग मोर टहु का कोयल देवे ।
कवला पोप केतकी फुली, भंवर माह सुख लेवे ।।
गङ्ग जमुन बह उलट, सुरसरी बहे अकारी ।
अला पींगला नार, सुखमरण गावे प्यारी ।।
पग बिन पातर खेल, नाच नो विद को-ल्यावे ।
बहत्तर नार हजार, राग रंग विन मुख गावे ।।
जल में लागी लाय, चहुं दिस ज्वाला छुटी ।
चढा धरण आकास, बात इचरज की दीठी ।।
जिल मिल जोत अपार, अनन्त ससि भाव प्रकासा ।
मान सगोवर मंझ, हंस जहां करे बीलासा ।।
बांज नार के एक पुरुष बित्त बालक हुआ ।
गुरगडी मरदग ताल, बीण बजर सहनाई ।।
गूगर की जंणकार, श्री मंडल इद काई ।
वरगु भूंगल ढोल, पूरे कर नाल नागारो ।।
मोर चग सितार, नुपंग बाजै इकतारो ।
रणसींगो ततकार सार, सत सबद उचारो ।।
घड़ियावल की ठोर, तबला ता संग घंट कारा ।
गैरो गुरे तंदूर, मजीरा रूण झुण बाजे ।।

अल गोजां की टेर सुणी तरबीणी छाजे ।
घुरे गिगन में घूंस करे नागण की ललकारा ।
सिव शक्ति असथान सूणी रु रु रुम कारा ।।

बाजे चेंघर वाब घोर कमा कम ब्रह चलावे ।
इत पुगी सुरवीण राग सांरंगी गावे ।।

बाजे अनहद तूर, होय झालर झणकारा ।
धजा फरूके तुन संख, बोल इक धारा ।।

बाजा राग छतीस, जन्त्र ही जंत्र बजावे ।
रोम रोम जणकार, सबद धुन मंगल गावे ।।

बिन देवल जहां देव, पिंड विन सेवा करहे ।
अनंत जुगां का संत, ध्यान धुन अनहद धरहे ।।

देख्या चैन अनंत, गुरां कुं बात सुणाई ।
घमंड भया घट माही, संत घर बटी बधाई ।।

कहयो प्रेम महाराज, सुणो जन दरिया दासा ।
वणी बात वहै बींत, ब्रह्म की जोत प्रकासा ।।

करो भजन भरपूर, भगत केवल इदकारी ।
सिव ब्रह्मा अरु विश्नु, सेस लग मेमा भारी ।।

रात दिवस नित नेम, भजन को गाढ समायो ।
अवगत अगम अनाद, भगत को बिड़द बधायो ।।

अथ महालक्ष्मी को प्रसंग

इस प्रसग मे दरिया महाप्रभु के भजन ध्यान पूर्ण स्थिति को देखकर स्वर्ण कटोरा लेकर महालक्ष्मी द्वारा अमृत पान करना ।

क्रिपा करी महाराज, आप महा लिछमी आया ।
किनक कटोरो हाथ, भरयो इमृत को लाया ।।

इस्यो तेज अद्भुत रूप मायो को भारी ।
अंछरण देवी आप, त्रिगुण ईश्वर अवतारी ।।

कह्यो आप महाराज, पीयो जन दरिया दासा ।
इम्रत रस इदकार, ग्यान केवल परकासा ।।

पीयो ध्रू प्रहलाद, नाम कबीर ज्यूलावे ।
आप संगत म्हाराज, दास दरियाव ने पावे ।।

नमसकार कर जोड़, हाथ दोन्यो में लीनो ।
एक घूंट भर पीयो, भेर दूजो नहीं पीनो ।।

आरो कठण कखर, सुदारस पीयो न जाइ ।
पीवे विरला संत, सुन समाध लगाई ।।

पूथा चौथे देश, जहां कोई दिवस न राती ।
आप ही उपर आप, अखंडत जागे जोती ।।

जगे अखंडत जोत, छोत कोइ लागे नाही ।
जन दरिया महाराज, मिल्या केवल पद माही ।।

अथ समाद को प्रसंग

इस प्रसग मे दरिया महाप्रभु के सुरत शब्द योग से समाधि लगना शरीर जडवत् होना निश्चेप्ट शरीर को देखकर शिष्यों को चिन्ता होना व जैन मन्दिर मे जाकर महावीर भगवान की समाधि युक्त मूर्त को देखकर धैर्य धारण करना समाधि-विराम के वाद दरिया महाप्रभु द्वारा शिष्यो को ध्यान योग कृपा चमत्कार वताना ।

पहल प्रथम दरियाव, आप समाद लगाइ ।
भई नग्र में बात, दुनी सब देखण आई ।।
सोच करे नर नार, और षड दर्शन उभा ।
पड़ी हाक बाजार, भया एक बड़ा अचंभा ।।
रामस्नेही जके सभा सब संगत बैठी ।
सुणी न कानां बात, नई कोई आंख्या दिठी ।।
या गत लषी न जाई, करे इचरज जो सारा ।
हंस गयो हर पास, पिये इमृत रस धारा ।।
बधी कला करतूत, देह को नूर सवायो ।
सरद पुन्यूं की रात, चद ज्यू निरमल थायो ।।
षुल्या कँवल ज्यूं नेण, साम रेखा सब न्हासत ।
शुक्ल वरण चष रूप, तेज उडगण ज्यूं भ्यासत ।।
नष चष यह सेनाण, तुचा सो वरण विराजे ।
ता घट लोही न मांस, प्राण सुंन सेवा साजे ।।

आसरण वजर विग्यान, धुन धू ज्यूं धारयो ।
कुशालचद कुशवगत, उगत कर अर्थ विचारयो ।।

अग्याकार इदकार बीरबल, अकल उपाई ।
गया दोड़ ततकाल, ज्यांन का मन्दिर मांही ।।

ब्राजमान मूरत, पदम आसरण इदकारी ।
उनमुन मुद्रा ध्यान, दिसट नासा धुन भारी ।।

मूरत को आकार, देख पाछा घर आया ।
डूंगर पूर्णदास जनां कुं भेद बताया ।।

सोच करो मत कोय, सुन समाद कहीजे ।
नामदेव कबीर तायें के आह सुणीजे ।।

निमसकार कर जोड़, आण परसाद चढाया ।
सब सिख करे उछाहें, सतगुरु पुरा पाया ।।

परबुधी परवीरण, परष समाद बताई ।
जन दरिया के सिख, सोभ नारद ज्यूं पाई ।।

सवा पोहर समाद, दास दरिया के लागी ।
निरभो पद निरवाण, चढया अणभो अणरागी ।।

सुंन मडल में जाय, आप पाछा फिर आया ।
तेज पुंज का नूर, प्रथम लीलाट भलकाया ।।

चेतन भया सरीर, इन्द्र घट भींतर खोल्या ।
क्रिपा कर म्हाराज, बेण इम्रत का बोल्या ।।

प्रसन करी म्हाराज, सिषा कुं सबद सुणाया ।
म्हाने लागी समाद, कुणी जन भेद बताया ।।
धिन बड भागी सिष, गुरु सुं अरजी किनी ।
भई आपकी मेहर, बात मैं दिल में चिनी ।।
भगवंत पारस नाथ, जिनां की मूरत देखी ।
आसण इडग अडोल, सुरत नहचल धुन पेषी ।।
निरष परख आकार, आप के चरणां लागो ।
मुख सुं कही समाद, भरम सारों को भागो ।।
परसण भये म्हाराज, आप शिष पर राजी ।
कुरसी बंद कुशाल, चाकरी आछी साजी ।।
अकल बजीर मन कुवास, बुध विचक्षण ज्यूं भारी ।
जन दरिया के सिख, ग्यांन पूरण इदकारी ।।
भगतण भजन प्रगट्या, लागी सुन समाद ।
पदमा जन दरियाव की, महिमा अगम अगाद ।।

अथ नारदजी को प्रसंग

इस प्रसग में महाविश्णु की प्रेरणा पाकर दरिया महाप्रभु को नारद मुनी द्वारा दर्शन व सभी देवता लक्ष्मी भगवान की कृपा का वर्णन व दरियाव माहाराज का नारदजी द्वारा भगवान को प्रणाम व कृपा बनाये रखने की प्रार्थना। नारद मुनी द्वारा भगवान को सारा वृत अवगत कराना भगवान द्वारा दरिया महाप्रभु को आशीर्वाद देना।

तब नारद होय प्रसण, दरस दीदार दिखाया।
कर क्रिपा महाराज, मिलण दरिया सु आया।।
प्रसन करी म्हाराज, श्रीमुख कथा उचारी।
सुरगादिक वैकुंठ, अनत सोभा है भारी।।
आप विसन भगवान, भगत की महमा गावे।
सिव ब्रह्मा अरु सेस, हस मुख प्रेम बढावे।।
सनकादिक रिषराय, पारषत सदा चितारे।
म्हा लिखमी म्हाराज, ध्यान हिरदा में धारे।।
भगत तेज परताप, इसी विध सोभा छाजे।
च्यार मुगत वैकुंठ, ताही में जाय विराजे।।
कह्यो दास दरियाव, सुणो रिष नारद सामी।
सिव ब्रह्मा अरु सेस विस्न है अंतर जामी।।
हूँ तो रवाना जाद, सदा चरणां को चेरो।
रंरकार भरतार, और दूजो नहीं मेरो।।

तम जावो वैकुंठ, विसन को केज्यो हमारी ।
कह्यो दास दरियाव, सदा सरणागत थांरी ।।

जव नारद भगवान, आप वैकुंठ पधारया ।
धिन धिन जन दरियाव, श्रीमुख वचन उचारया ।।

अथ माया को प्रसंग

सतरा सें के सम्वत, चोतरो वरस वदितो ।
पांच सेर को धान, भाव जव मूंगो विगतो ।।
एक दिन आकास भई, दरिया कूं वाणी ।
अंछाया रूपी आप, बोलिया सारंग प्राणी ।।
तीन सवद की वाज, ध्यान की आग्या दीनी ।
मान मान दरियाव, क्रिपा तोय पर कीनी ।।
माया ईश्वर आप, त्रिगुणी रूप दिखाया ।
जन दरिया म्हाराज, भेद अन्तर में पाया ।।
प्रसन करी म्हाराज, शिख सुं गिरा उचारी ।
भयो अचंभो मोय, विघन मायो को भारी ।।
धान लीयो ते मोल, जाय पाछो फिर दीजे ।
राम भरोसो राख, राम को सिवरण कीजे ।।
राखण हारा राम, कहो कैसी विद मारे ।
रोंम रोंम रमतीत, आप व्यापग है सारे ।।

धन बड भागी सिष, गुरां को कहीयो जकीनो ।
नफा सहत ले धान, जाय वणिया ने दीनो ।।
दिन दस को ले धान, घरे जीमण ने राख्यो ।
कुशालचद ले आप, जाय कोठी में नाख्यो ।।
भाव प्रेम परसाद, आप नित भोजन पायो ।
षट् मास लग रहयो, दिन दिन वधयो सवायो ।।
आठ सिद नो नीद, सदा संतन के आगे ।
और विघन की कूंण, देख दूरां सुं भागे ।।
काम धेनु कल्प व्रछ, पदार्थ मिठा चितामण ।
च्यार मुगत वैकुंठ, नहीं अंछाया सपनायण ।।

दोहा—छाडन माया सग रहे, नित नेम हजुरी ।
पकड़ विघन उठावे, जाय सो कोसां दूरी ।।
अैसा राम दयाल, साय सन्तन की करहे ।
मेटे विघन अनेक, आण अवतारज धरहै ।।

अथ फतारामजी को प्रसंग

इस प्रसंग में दरिया महाप्रभु द्वारा ममेरा भाई फतहचंद को यमदूत योनी से बचाना, दरिया प्रभु की कृपा से फतहचद को भगवत प्राप्ति होना।

फतहराम इदकार, दास दरिया ममेरा का भाई।
अवगत अवग्या सरूप, जूण जमरां की पाई ।।

एक दिन आया आप, दास दरिया के दरसण।
रोवे अन्त अघाय, कृपा कर बोल्या परसण ।।

मेरो दु:खी शरीर, आप सुख सागर देवा।
मेटो जम की जूण, करां चरणां की सेवा ।।

परसण भया महाराज, दया दिल माहीं उपाई।
करी विश्नु से अरज, जम तें लिया छुड़ाई ।।

एसा समरथ संत, अनंत परचे इदकारी।
सुणे सबद सत वेण, परम सुख उपजे भारी ।।

एसी हरकी भगत, जगत कोई जाणे नाही।
कुल कारण नहीं कोय, मिले हरजन हरिमाही ।।

अथ समनजी को प्रसंग

इस प्रसंग मे आचार्य महाप्रभु द्वारा पागल कुत्ता से काटा हुआ समन महात्मा की रक्षा करना।

सहर सलेमा बाज, संमन जन आप विराज्या।
जन दरिया परताप, भजन सिवरण भल साज्या।।

एक दिन भयो विजोग, बीठले लाल लगाई।
उपज्यो दुःख शरीर, कहण में आवे नाही।।

घड़ी पहर के माहीं, देह को होतब आयो।
समन करी पुकार, दास दरिया सुण पायो।।

दया करी म्हाराज, राहेण सु आप पधारया।
सहर सलिमा बाद, शिष कु जाय उबारया।।

धन समृथ महाराज, कृपा कर दर्शन दीन्हां।
मीरां वाली बात, जहर अमृत कर लीन्हां।।

करी पुत्र की साह, प्रगट अब सुणज्यो साखी।
भरगु सुकर जिसी, राम परतग्या राखी।।

अथ मदुचंदजी को प्रसंग

इस प्रसग मे आचार्य महाप्रभु द्वारा दिल्ली निवासी नगर सेठ श्रावक (जैन) शिष्य मधुचद को जमुना जल मे डूवते हुए की रक्षा करना। अत इसी गुरुभक्त सेठ द्वारा सतगुरु के नाम से दिल्ली के एक मुहल्ले को दरियागज नाम से अलंकृत करना।

मधु सेठ सरावगी, रहतो दिल्ली मजार।
प्रात समे असनान को, लीयो नेम निरधार ।।

काल्या धेह के माहीं, धस्यो जल के माहीं आगो।
हुंणहार की बात, आप डुबण ने लागो ।।

करणां करी पुकार, दास दरियाव उबारो।
मो अबला की लाज, राखज्यो बिड़द तुमारो ।।

धरयो रूप भगवान, दास दरिया को भारी।
करी सहाय ततकाल, इस्या है देव मुरारी ।।

भगत काज महाराज, साहे एसी विध कीनी।
करण हार करतार, दास कु सोभा दीनी ।।

दोहा—कलु काल परचो भयो, जाणे जुग संसार।
जन दरिया परताप ते, तिरायो साहुकार ।।

जमुना नदी मे डूबते हुए सेठ मधुचन्द की रक्षा की

पृष्ठ १५६

मदली खांन पठाण को प्रसंग

इस प्रसग में दिल्ली बादशाह के दीवान मदलीखान पठाण द्वारा पानीपत की दूसरी लडाई मे घायल स्थिति में आचार्य सतगुरु दरियाव महाराज की प्रार्थना करना। प्रार्थना सुनकर आचार्य द्वारा स्व० शिष्य की रक्षा करना।

पाणीपत असतान, मंड्यो एक भारत भारी।
फौजा का घमसाण, बात सुणज्यो नर नारी ।।

कल हलीया के काण, आवड्या आमा सामा।
भया रण संगराम, धुरया रणजीत घमामा ।।

मदली षाण पठान, लड़यो सांवत सूरो।
बण्यो साम को काम, पड्यो लोहरिण पूरो ।।

रोंम रोंम नरब चख, पीड़ घट भीतर भारी।
चेतन भयो शरीर, आप मु ह गिरा उचारी ।।

हो हो जन दरियाव, दया कर आप पधारो।
मेटो तन की पीड़, विपत सब दूर निवारो ।।

सुणी टेर भगवान, दास के बदले आया।
धर दरिया को रूप, घाव दुख दूर गमाया ।।

दोहा—चेतन भयो शरीर, नीकस्यो बारे बाण।
जन दरिया परताप सु, बात परगट जुग जाण ।।

अथ जाट को प्रसंग

इस प्रसंग मे आचार्य महाप्रभु के शिष्य मनसाराम मोदाणी का निमन्त्रण देना अति प्रेम के कारण भूल में तीनो भाईयो द्वारा आचार्य महाप्रभु की सेवा नही करना प्रसन्नचित आचार्य महाप्रभु का साजु ग्राम से रेण लोटना मार्ग मे एक जाट भक्त की भक्ति के अत्याग्रह से आचार्य श्री द्वारा वाजरा के दाने (पू ख) का जीमना व रेण पधार जाना। पता लगने पर मोदाणी का जाट के पास जाकर वाजरा दाने पुण्य के भागीदार वनने के लिए जाट को पैसा देने का आग्रह करना, पर जाट का कुछ भी नही लेना, फलस्वरूप उसी जाट का दूसरे जन्म मे नागौर नगर मे हरखारामजी के शिष्य रामकरण नाम से जन्म लेना।

जन दरिया महाराज, आप सांजु में आया।
निमसकार कर जोड़, जाट जब सीस नवाया॥
भाव प्रेम रस रीत, प्रीत कर फू क जीमाया।
जन दरिया महाराज, आप तंदुल ज्यु पाया॥
प्रसन्न भया महाराज, सभा में गिरा उच्चारी।
नफो लीयो हे जाट, बंदगी कीनी भारी॥
मोदाण्यां सुण बात, कहयो अब कैसे कीजे।
मन माग्या सो दाम, चाल फेर उनको दीजे॥
रिप्या दाम सो लेर गया, जब तीनु भाई।
कही जाट ने बात, दाय उनके नहीं आई।

म्हारे तो परताप, दास दरिया को भारी ।
मनसा भोजन मिले, राबड़्या दूध त्यारी ।।

दोहा—फूंकां का परसाद ते, भई बात इदकार ।
बदयो भाग उस जाट को, बड़ जितनो विस्तार ।।

अथ खाजु मीरां को प्रसंग

इस प्रसग मे अजमेर के खाजा मीरा (मामा भानजा) दोनो द्वारा राप धाम रेण जाकर आचार्य श्री का दर्शन कर प्रसन्न होना ।

षाजु मीरा सा है दो मामो भाणजा ।
तारागढ अजमेर, फरु के परगढ नेजा ।।
हिन्दु मुसलमान दोहुँ पूजे इकतारी ।
कलारुप करतूत जगत में मेमा भारी ।।
एक इच्छा धार, मिलण दरिया सु आया ।
भाव प्रेम रस रीत, प्रीत करु दरसन पाया ।।
सुकल रूप सिर पांव, सुगन्ध सुरगादिक जैसी ।
देखन जन दरियाव, हुवा दिन मन माहीं खुशी ।।
परसण भये म्हाराज, भक्ति की राह बताई ।
खाजु मीरां साह, जीकर की फिकर लगाई ।।
राम नाम परताप नहीं, काई जुग में छानो ।।
परगट जन दरियाव, नबी साहेब ज्यूं जानो ।

अथ भेरु को प्रसंग

इस प्रसग मे एक बार आचार्य महाप्रभु का मेडता सिटी से राम धाम रेण पधारना अधेरी रात् को देखकर भेरु द्वारा हाथ मे मुसाल (प्रकाश) लेकर आचार्य श्री की सेवा करना भेरु की प्रार्थना से आचार्य श्री द्वारा भेरु को शिष्यत्व प्रदान करना ।

एक समे दरियाव, मेड़ते आप पधारया ।
करी घरां दिस गमन, चरण अवनी पर धारयो ।।
असत भयों जब भाण, रेण जब पड़ी अंधारी ।
भेरु मिल्यो भोपाल, काल का सुन इदकारी ।।
निमसकार कर जोड़, दोड़ परदिखणा दीनी ।
लीनी हाथ मुसाल, टेल सतन की कीनीं ।।
कह्यो दास दरियाव, सुणो भेरुं भोपाला ।
किण विध उपजी प्रीत, रित तैं राखी काला ।।
कह भेरु भोपाल, भगत को दरसण पाउं ।
संत शिरोमण आप, ताहि कूँ मै पूछाउं ।।
जोजन एक परवांण, संत को घर पुगाया ।
सब भूता दिस साथ। टेहल में सारा आया ।।
अैसो नाम परताप, बदगी भेरुं कीनी ।
जन दरिया म्हाराज, ताय को दिक्ष्या दीनी ।।
क्रिपा करी म्हाराज, कथा अद्भुत उचारी ।

भजन तेज परताप, पड़्यो भेरु परभारी ।।
अक बक भयो वीराट, प्राण तन धूजण लागा ।
सब भूतादिक साथ, छोड भेरु को भागा ।।
अैसे है हर नाम, डरे जम किंकर सारा ।
धर्म राय कर जोड़, वन्दन कर बारंबारा ।।

अथ राजा बखतसिंघजी को प्रसंग

इस प्रसग मे जोधपुर दरवार श्री बखतसिह जी का रेण जाकर आचार्य श्री का दर्शन करके शिष्यत्व स्वीकार करना ।

बधी भगत की रीत, चंद ज्यूं कला सवाई।
सोभा अनत अपार, आप राजा सुण पाई
तब राज ली फोज, मोज कर दरसण आया ।
जन दरिया सुं प्रीत, रीत कर प्रेम बढाया ।।
नरपत कह्यो सवाल, धीन मेरो अवतार ।
धिन धिन हे आदेश धिन दीदार तुमारा ।।
ता दरसण अध जात, करम दाग लगे न कोई ।
चढे ग्यान गजराज, पारगत सेजां होई ।।
कह्यो नरपत राठोड़, कृपा कर मोय उधारो ।
नगर नाव नागौर, एक दिन आप पधारो ।।
महरबान म्हाराज, मया कर आप पधार्या ।

सुखरामजी साथ, चरण गढ माहीं धारया ।।
राजा भयो निहाल, परम सुख उपज्यो भारी ।।
श्रैसा जन दरियाव, जिस्या सन कादिक च्यारी ।
जैसे ध्रु प्रहलाद नाम दे. दास कबीरा ।।
परगट जन दरियाव, ग्यान गोरख ज्यूं पूरा ।
तब बोले नरपतराय, कृपा कर भेद बताश्रो ।।
सांसो सोग संताप, भरम सब दूर उडावो ।
मया करी म्याराज, ग्यान भगवंतो कीनो ।।
दया सहत निज नांव, भेद राजा कूं दीनो ।
बगतसिंघ नरेश देश मुरधर को राजा ।।
जन दरिया के चरण, सरण जब सरिया काजा ।
मास एक दरियावजी, रहया गढ नागौर ।।
प्रीत करी राजा घणी, जैसे चंद चकोर ।

श्रथ राजा विजेसिंघजी को प्रसंग

ईस प्रसग मे श्री विजय सिह जी का सेना समेत मेडता सिटी मे ठहरना व श्राचार्य श्री को वुलाकर सेवा करना श्रौर श्राचार्य महाप्रभु की श्राज्ञा मानकर मेड़ता परगना मे कर माफ करना ।

विजेपाल भोपाल, भगत नोदा इदकारी ।
जन दरिया सुं प्रीत, रीत श्रारत उर धारी ।।

भोरधज अस्त्रीक, परीखत जैसो राजा ।
जोधाणा नाथ सुनाथ, चले दरसण के काजा ॥
च्यार सीरायत साथ, मीसल आठुं ही लारे ।
दर कूचां घरबार, मेड़ते आप पधारया ॥
भाव प्रेम जग्यास, साध लावो एक छिन में ।
में दरसण को प्यास, धार आयो हूँ मन में ॥
गगादास नाजर, दूसरो गोरधन खींची ।
चढया वेग तत काल, बात सो कीनी ऊंची ॥
राहेण नगर मंजार, लेण साधांनु आया ।
भाव प्रेम परसाद, भेट नारेल चढाया ॥
अरज करी कर जोड़, मेड़ते आप पधारो ।
हो करुणा का भवन, चरण राजा घर धारो ॥
रथ बैठे दरियाव मेड़ते आप सिधाया ।
नरपत कर उछाव, मोतीयां थाल बदाया ॥
रहया दिन पचीस, मेड़ते नगर मजारा ।
राजा परजा रेत, दरसण मिल आया सारा ॥
अैसो नाम परताप, नरपत सो चरणां लागा ।
सुण्या ग्यान बहैबीत, भरम सारा का भागा ॥
तब राजा बीजे पाल, भेट पूजा विसतारी ।
लाग बाग सब माफ, सही कर दीनी सारी ॥
बीजेपाल नरपत राय, मेड़ते डेरा दीना ।

जन दरियां का दरसरण, परसरण होय परगट कीना ।।
नित नेम परसाद, राज सु थाल पुगावे ।
जन दरिया म्हाराज, आप जब भोजन पावे ।।
वालमीत ज्यूं प्रगट, ईस्या महाराज कहीजे ।
कह्यो राजा विजेपाल, नफो पाडवां ज्यूं लीजे ।।
ज्यां जिम्या जिग मांह, संख जब प्रगड वागो ।
च्यार वरण आश्रम, भरम सारो को भागो ।।
कुल को कारण नाहीं, नांव की महिमा भारी ।
भारत में कह्यो ब्यास, गीता में किशन मुरारी ।।
अै नरपत के स्वाल, वचन अत बोले गाडा ।
हाथ जोड़ आधीन, दीन होय आपै ठाडा ।।

दोहा—संत प्रगट दरियावजी मुरधर देश दयाल ।
तां दरसरण न्रप उधरया बखतसिंघ व्रीजपाल ।।

अथ फतैचंदजी भोजक को प्रसंग

इस प्रसग मे मेडता सिटी के सेवक (ब्राह्मण) फतह चन्द का आचार्य महाप्रभु को निमन्त्रण देना । प्रेम के कारण से भूल से भोजन मे तेल परोसना महाराज की कृपा से तेल का घृत वन जाना ।

फतैचंद भोजग मेड़ते रहे वड भागी ।

श्री दरियावजी महाराज द्वारा मेडता सिटी मे राजा विजयसिंह और ब्राह्मण फतहचन्द के राजसिक और सात्विक भोजन की परीक्षा

पृष्ठ १६४

आचार्य श्री मोक्ष धाम जाते हुए

हम तो जाते हमारे ग्राम।
तुम सब सुमिरो राम का नाम॥

पृष्ठ १६८

न की प्रीत सवाय, दास दरिया सु' लागी ।।
री एक दिन अरज, आप परसाद करीजे ।
ब प्रीत पिछाण, मोय गिणती में लीजे ।।
न मेरो वड भाग, आप की कृपा भारी ।
ाय मिल्यो संजोग, वीदर घर किसन मुरारी ।।
जा के प्रतीत, आप की मन में साची ।
या जद आराध, रहण सु कीनो आछी ।।
रां को परसाद, राज सूं करो मनाई ।
मोसर ओ डाव, फेर असो नहीं आई ।।
ाचंद कर जोड़, कह्यो सादां के आगे ।
प करो परसाद, भाग भल मेरो जागे ।।
ा बात दरबार, करे राजा तकरारी ।
ा संम्रथ म्हाराज, दया दिल देखो म्हारी ।।
रया दीवी म्हाराज, आप किरपा कर भारी ।
ः बेगो परसाद, होय हाजर सो तियारी ।।
ा मगन मतवाला, ईस्यो मन माही हुँस्यो ।
ो तियार परसाद, तेल जब आण परुस्यो ।।
म जूट म्हाराज, आप तब चलु कराई ।
ाचंद ने बात याद, जब मन में आई ।।
हो किरपा निधान, जलम मेरो मैं हारयो ।
रत जाण म्हाराज, तेल भोजन में डारयो ।।

ईस्यो दोष अपराध, कोहो कैसी विध जावे ।
बार बार सेवग, आप मन में पिसतावे ।।
कहयो दास दरियाव, प्रीत साधां सु' थारी ।
आज परसाद स्वाद, बोत विध लागो भारी ।।
भयो तेल को ध्रीत, रामजी आछी कीनो ।
आद अंत म्हाराज, सोब संता ने दीनो ।।
बालमीत पंच ग्रास, लिया पांडवा के द्वारे ।
वागो संख पचारण, प्रगट सब संत पुकारे ।।
कीसन देव म्हाराज, भगत की सिपत बधारी ।
पंडवां के जिग मांहि, करी अत महिमा भारी ।।
साग बीदर घर पाय, प्रीत का छू'त अरोग्या ।
तंदुल सुदामा दिया, महल कचन का होग्या ।।
इस्यो संत गोग्रास, ताय सम तुले न कोई ।
तीन लोक वैकु'ठ, ब्रह्मा लग प्रकट होई ।।
सिव ब्रह्मा अरु सेस, आहा नारायण भाखी ।
भगवत श्रीमद्, फेर रामायण साषी ।।

दोहा—सानभद्र को जीव थो, पेलै जन्म मेघवाल ।
आहार दियो भगवंत को, तूठा दीन दयाल ।।
धन व निद सदा, कंचन जड़त अवास ।
जनम लियो साह गोमंद घर,सेनक नगरी वास ।।

अथ महिमा को प्रसंग

इस प्रसग मे पद्मदास कृत आचार्य श्री दरिया महाप्रभु की महिमा का वर्णन है ।

जन दरिया भगवंत संत प्रगट अवतारी ।
परमानन्द परबुध, अगम की कथा उचारी ।।
गिरधर गोविन्द राम, राम राधो भज लीना ।
खेम द्वारका दाम, राम भज कारज कीना ।।
हरिदास हर भगत, राम ही राम उचारया ।
रामदास ध्रु राम, राम कहे कारज सारया ।।
तीन पुत्र सीष सात, प्रेम के परगट भारी ।
तां मध जन दरियाव, बड़ा दीरग इदकारी ।।
ग्यान ध्यान भरपूर, नूर निरमल सुखदाई ।
भगत तेज परताप, सुंन समाद लगाई ।।
प्रेमदास परताप, ईस्या परगट जुग सारे ।
अनंत उधारया जीव, फेर अनंता कुं तारे ।।
अैसो नाम परताप, दास द्ररिया के भारी ।
ब्राह्मणछत्री वंस, सुद्र चेला ईदकारी ।।
पूरणदास किसनो बड भागी ।
सुखराम नानग, सुरत साहिब सुं लागी ।।
भगत करी परवेस, देस मुरधर खंड माहि ।

च्यारु सिखां सुजाण, परगट घट व्यापक साही ।।

अथ सिखां को प्रसंग

इस प्रसग मे आचार्य श्री महाप्रभु के मुख्य शिष्यो का वर्णन व सक्षिप्त मे उन्होकेसाधना जीवन की झाकी व उन्होके साधना मे आगे आने वाले विघ्नो का आ म प्रभु द्वारा निराकरण व सक्षिप्त मे शिष्यो की नामावली व भगवान महाविष्णु द्वारा प्रेरणा पाकर भगवन्पार्षदो का दरिया महाप्रभु को वकुन्ठ पधारने की प्रार्थना करना, पर आचार्य श्री के शिष्यो के आग्रह करने पर आचार्य श्री की आज्ञा से चार दिन के लिए पार्षदो का वेंकुन्ठ मे लोटकर विष्णु को निवेदन करना । तत्र तक प्राय, मब शिष्यो का आचार्य महाप्रभु के निकट भविष्य के वियोग से दु खी होकर आचार्य श्री को आर्त प्रार्थना करना आचार्य श्री ज्ञान द्वारा भाँति २ से जोव शीव की अभिन्नता अद्वेत सिद्धान्त का प्रतिपादन करना व राम नाम जप ध्यान योग के आधार से जीवन धारण करने का उपदेश देना । तव तक समय पूरा होने पर पार्षदो का राम धाम रेण मे पुनः आगमन होना, व आचार्य श्री महाप्रभु का विमान मे वैठ कर भगवन्धाम (केवल्य) पधारना ।

जन दरिया परताप, परगट च्यारु है गादी ।
संत सिरोवण आप, पुरष है आद अनादी ।।
दादू ज्यू अवतार, धार दरिया वप धारया ।
ल्याया नांव जिहाज, अनंत जीवां को तारया ।।

वांवन सिख की सोभ, दास दरियाव ने छाजे ।
सुरगादिक ज्यूं सोभा, इन्द्र ज्यूं आप विराजे ।।
वहां दादू म्हाराज, यहां दरियाव कुवाया ।
वा संगत वा सभा, जनम धर जैसा आया ।।
वहां अकबर पातसाह. मिल्या दादू सुं सागे ।
यहां राजा वखतेस, पाय दरिया के लागे ।।
जन दादू निज संत, ब्रह्म था आद अनादी ।
जन दरिया म्हाराज, प्रगट्या सत समादी ।।
सोभायमान जल कँवल, फूली आफू की क्यारी ।
जन दरिया की संगत, माल मोतीयन की प्यारी ।।
हीरदे राखूं पोय, रात दिन नांव चितारू ।
जन पदमा के आप, और दूजी नहीं धारुं ।।
कुसालचंद म्हाराज, सिस दरिया का भारी ।
ज्यूं सरवण नृपराय, बड़ा जन आग्या कारी ।।
सुमन चंद धीर बड़ा दीरघ गुण वंता ।
जन दरिया का सिख, राम रस पीया अनता ।।
हस राम निज हस, भाग जिनही का मोटा ।
गुरु दास दरियाव, ताहीं घर करे न तोटा ।।
तीनु जन इदकार, दास दरिया का मसेरा पुत्र ।
बड भागी बड संत, रट्यो जन सिव को मंत्र ।।

पूरण पूरी बात, दास दरिया सुं पाई ।
घमड भया घट माहीं, संत घर बटी बधाई ।।
सतगुर के परताप, नांव नेहचे कर ल्याया ।
आनदेव का भरम करम, सब दूर उडाया ।।
हंस दिया एक रंग, संग सतगुर को लागी ।
पत भरता इदकार, रह्या चरणां में आगी ।।
आठ जाम मुख राम, काम सुकरत कर लीना ।
रसणा हिरदे नाभ, जाय चौथे घर कीना ।।
करतपस्या कैलास, गंग भागीरथ लाया ।
जन दरिया परताप, नांव पूरण प्रगटाया ।।
रसणा हिरदे नाभ होय, उलट चढया आकास ।
पहल प्रथम दरियाव सुं, मिलिया पूरण दास ।।
किसन दास वड भाग, लाग सतगुर के चरणां ।
तत तरवार समाय, कमर कस बांधी जरणा ।।
रसणा सुं लव लीन, झीण सुं झीण मिलाई ।
धरु हिरदा मे ध्यान, ब्रह्म की जोत जगाई ।।
नाभ कवल अस्थान, भंवर तब करे गुंजारा ।
रोंम रोंम जणकार, नाद घण घोर अपारा ।।
फोड़ चल्या पाताल, मेर मध मारग पाया ।
चढ तरवेणी तघत, वहां मिल अरठ चलाया ।।

अला पिंगला बीच, लगी सुखमरण सुं ताली ।
पिये अगम हि बाग, नीरजन सींचे माली ।।

पांच तत गुण तीन, पचीसुं बस कर राख्या ।
चढे चोथे असथान, ग्यान अरणभे तत भाख्या ।।

किसनदास महाराज, आप निरभे पद पाया ।
जन दरिया परताप, परम सुख माहीं समाया ।।
सुखराम सिख साच, दास दरिया का चेला ।
कर राजा सुं ग्यान, मेटिया भरम दुहेला ।।
राज पाट गढ गांव, नहीं थिर देही राजा ।
साच कही सुखराम, राम बिन बात अकाजा ।।
माया महल म्हडाण, नहीं थिर हसथी घोड़ा ।
हाकम हुकम अनेक, देख जुग जीवण थोड़ा ।।
धर अंबर थिर नहीं, नहीं थिर पवनर पानी ।
थिर है सिरजन हार, सबद साचो कर जानी ।।

सुख सागर सुखराम, भगत नीसाण बजाया ।
जन दरिया परताप, नृपत कुं सबद सुणाया ।।
नानग नांव निरबाण, जाण सतगुर सुं लीना ।
खबर दार हुंसीयार, सीस चरणां में दीना ।।

सुण्या सरवण सवद, राम रसणा सुं गाया ।
धर हिरदा में ध्यान, सबद नाभी गरणाया ।।

उलट उलंध्या मेर, गिगन गढ नोपत बागी ।
अला पिंगला बीच, सुरत सुखमरण सु ं लागी ।।
हंस दिसा इक रंग, अंग निरमल ज्यूं गंगा ।
ग्यान ध्यान गलतान, प्राण पूरण पत संगा ।।
नानग भजन भंडार, खुल्या पूरबला भारी ।
जन दरिया परताप, अगम की कथा उचारी ।।

बदरीराम राम उचारया,
होय धनत्र जुग माहीं पधारया ।
जींवां काज लीया अवतारा,
सब दुःख काट कीया भोपारा ।।
मोतीराम सन्त जन भारी,
उनमुन होय लगाई तारी ।
निस दिन राम राम रस पीया,
हंस दीसा होय दरसण दिया ।।
सांईदास राम भज लीना,
होय लव लीन ब्रह्म कूं चीना ।
सब जीवन कूं पोखज दीया,
भडा भाग जिन कारज किया ।।
रेमतराम साद बड भागी,
जन की सुरत ब्रह्म सु लागी ।

चतुर्दासजी के दुष्ट लोगो ने हाथ काट दिये पर आचार्य श्री की कृपा से पुन नये हाथ पैदा हो गये

पृष्ठ १७३
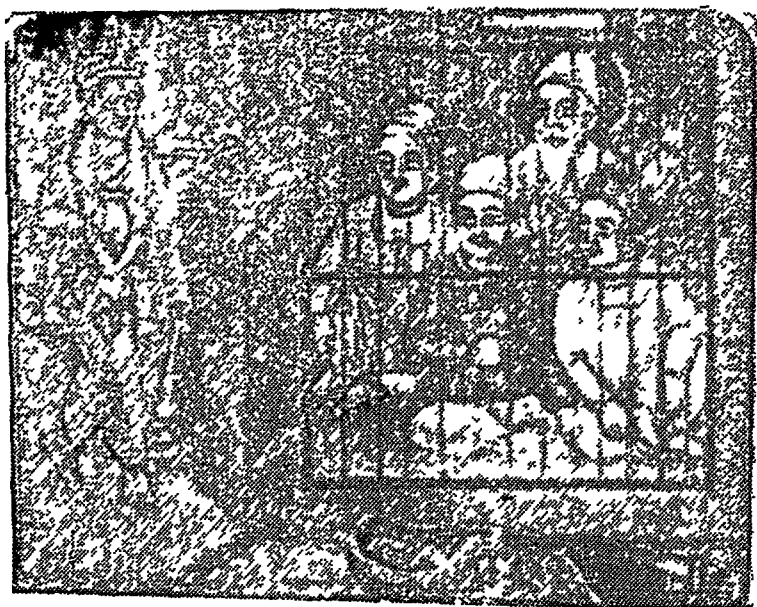
श्री हरकारामजी को राजा विजयसिंह ने जैल मे डाल दिया और
धनाबाई ने राम नाम के लिए प्राण त्याग कर दिये

पृष्ठ १७४

एको मत एको लिव धारा,

राम भजन रट उतरया पारा ॥

डूंगर सी डर मेट, सरण सतगुर की लागा ।
रसना सुं लव लीन, भरम हिरदा का भागा ॥

सतगुर के परताप, ब्रह्म की जोत जगाई ।
घमण्ड भया घट माहीं, मुक्त की रसत चलाई ॥
बीरदभान भलीमान, प्रीत सतगुर सुं लागी ।
रसणा हिरदो नाभ, सबद धुन झालर बागी ॥
रोंम रोंम झणकार, ब्रह्म जड़ पूर लगाया ।
प्रेम मगन मतवाल, आतमा नगर जगाया ॥
आठ पोहर इकतार, सग सतगुरु की रहता ।
दिल खोल दरियाव, बात बिरदा ने कहता ॥
चुत्र दास चौकस, भगत नेंहचे कर धारी ।
बणी राज सुं आय, राम जी भली सुधारी ॥
जात पांत कुल न्यात, भरम सब दूर उड़ाया ।
जन दरिया परताप राम ही राम रिझाया ॥

कृपा करी दरियाव, आप फिरड़ोद पधारया ।
बीजेराम के भाग, चरण ले द्वारे धारया ॥

सकल कुटम्ब परवार, आय सब चरणा लागा ।
सतगुर के परताप, भरम सारां का भागा ॥

हरकाराम हर भजत, ब्रह्म की जोत प्रकासा ।
नेमीचन्द, जयचन्द, श्रीचन्द लिखमी दासा ।।

जनम भोम फिरड़ोद, चाल नागीणे आया ।
विजेराम का पुत्र, भगत नीसाण बजाया ।।

जात पांत कुल न्यात, राज में जाय पुकारी ।
उभी करे फीराद, सुणो एक अरज हमारी ।।
ज्यान धरम को छाड, नांव की टेक समाई ।
सात पीडया के माहि, ईसी मेह सुणी न काई ।।
कारकुन हाकम कह्यो, कोट वाल बुलावो ।
घरबार धन माल, लूट सारो ले आवो ।।
कोटवाल कर कोप, गढ में आण बेसाण्या ।
राम जनां के राम, सदा आनन्द सुख जाण्या ।।
अणदेखी अजगेब वात हाकम लिख दिनी ।
जोधाणा नाथ कुं जाय, गोकल्या मालम कीनी ।।

तब राजा बिजेपाल, कोप अत करड़ो कीनो ।
साह सुलतानी जिस्यो, दुःख नामां ने दीनो ।।

साह सकंदर आप, पातसा कासी आयो ।
परगट दास कबीर, ताय पर गज जुकायो ।।

असे दिन गुणतीस, आर पाणी नहीं लीनो ।
निरधारया आधार, ईस्यो दुख राजा दिनो ।।

कहयो राज बीजेपाल, छाड नांगारणो जावो ।
मारवाड़ की आरण, डारण जहां रहरण न पावो ।
राम सभा ले साथ, नीसरया पांचू भाई ।
छोडयो मुरधर देश, जाय मेवाड़ वसाई ।।
आद अन्त आ नात, संतां सु धेक चलायो ।
दादू ने गुजरात, अहमदाबाद छुड़ायो ।।
धिनं राणा को भाग, देस में साध पधारया ।
मांडल गढ सुथान, चरण मुथा के धारया ।।
फोजा का घमसारण, देस मुरधर में आया ।
लूट लिया धन माल, राज परजा दुख पाया ।।
दीयो मुलक पर जाल, घरां की छार उडाई ।
बरत्यो हाहाकार, ईसी ले त्रास दिखाई ।।
एक दिन राजा सोच, कर मन में पिसतावो ।
राम जना ने जाय, देश में पाछा ल्यावो ।।
ताकीदी धरबार लिख, कागद पूछाया ।
मांडलगढ़ सु चाल, हाल जो धारणे आया ।।
कलुकाल म्हाराज, राम जी परचो कीयो ।
मिल्यो राजा बीजपाल, सुख सतों को लीयो ।।
मारु मुरधर देश, नगर नागौर विराज्या ।
भगत बीड़द म्हाराज, काज संतां का साज्या ।।

नागाणां सु चाल, हाल राहेण में आया ।
जन दरिया के पाट, थाट कर दरसण पाया ।।

राम प्रभा की आग्या, दास दरियावजी दीनी ।
हरखा लिखमाराम, भली विध सोभा लीनी ।।

ओर धरम सब छाड, नांव की टेक समाई ।
प्रगट करी नागौर, मुरधरा भली दिखाई ।।
तन मन धन ले प्राण, आण सतगुरु कुं चाडया ।
जन दरियाव परताप, नांव का नेजा गाडया ।।
संमत अठारे से झगड़ो भयो, वरस पेंतालीसो जाण ।
पदमा नांव परताप ते, सुरां करी बखाण ।।
हरखा लिखमी चद के, रही नांव की टेक ।
हरजन जीता पदमदास, पचग्या दुष्ट अनेक ।।
सांजु शहर सुथान, प्रगट माजन मोदाणी ।
जन दरिया परताप, भगत साची कन जाणी ।।

आठ बेर दरियाव, चरण सांजु में धारया ।
महावीर भगवत जिस्या, महाराज पधारया ।।
धिन जादा को भाग, पुत्र तीनुं बड भागी ।
अमीचंद हरदेव, दास मनसो अनुरागी ।।
खेमदास के खेम, कुसल वा घट माही ।
त्याग खाग वैराग, भाग भल भगत कमाई ।।

नागौर मे हरकारामजी परिवार सहित घर वार व धन छोड कर जाते हुए, पर राम नाम और गुरु भक्ति नही छोडेंगे

पृष्ठ १७५
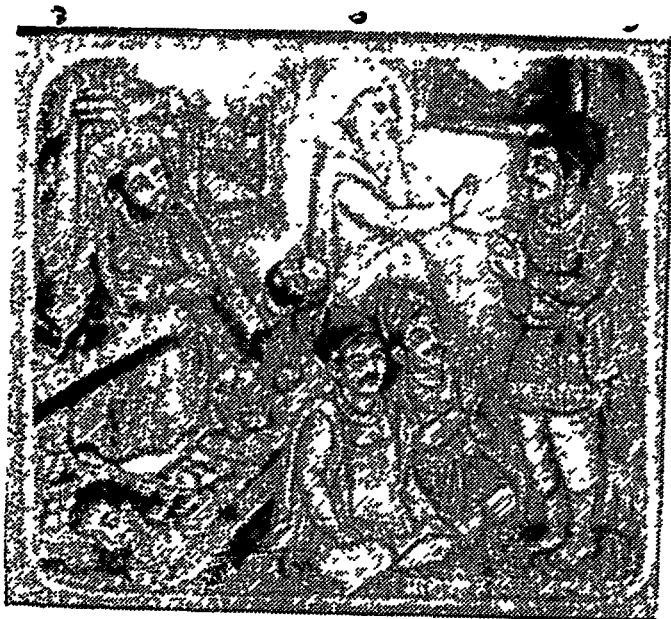
साजु ग्राम निवासी सेठ मनसारामजी की गर्म तख्ते से रक्षा की
पृष्ठ १७६

जनमत सत सुखदेव, ईस्या दीरघ गुण नामी ।
जन दरिया परताप, कुहाया परगट सामी ।।
टेमदास के ठीक, बीज रसणा सुंबाया ।
धना वस हर भगत, घट में अघट निपाया ।।
होय लघुता लवलीन, दीन होय कमज्या किमी ।
जन दरिया परताप, नांव नेपे कर लीनी ।।
थलवट देश मंजार, प्रगटया हरिजन भारी ।
रामचन्द्र भूगान उदैगर, भगत उचारी ।।
ईकमनिया इकतार, सुरत सत सबद मिलाई ।
जन दरिया परताप, प्रगट तीनूं गुर भाई ।।
तीन समेश (पुत्र) सिख चार, ताय की मेमा गाऊं ।
सिख तो अनन्त अपार, जिनां कूं सीस नवाऊं ।।
और सिख ते सिख, ज्ञान का बड़ा उजागर ।
सतगुर जन दरियाव, दयानन्द सुख का सागर ।।
एसो राम प्रवार, वण्यो सीसद चकारा ।
ध्रू ज्यूं जन दरियाव, परकमा दे सिख सारा ।।
मूल पेड दरियाव जी, सिख है डाला पान ।
पदम दास तरवर बढयो, दीरघ मेरु समान ।।
च्यार डाल समेट के, दसुं दिसा विसतार ।
पदमा जन दरियाव के, यूं दीरघ सिख चार ।।

सिनकादिक सुखदेव ज्यूं, भगत करी भरपूर ।
पदमा जन दरियाव जी, उदै हुवा ससि सूर ।।

पदमा जन दरियाव जी, इमृंत सुख की सीर ।
नामदेव ज्यूं नाम है, प्रगट दास कबीर ।।

जनम कथा दरियाव की,
सुणे श्रवण चित लाय ।
भगत उपजे पदमदास,
करम खिले होय जात ।।

।। प्रथम अंग सम्पूरण ।।

।। अथ दूसरो अंग लिख्यन्ते ।।

प्रकट हुए दरियावजी, मात लोक में आय ।
अनन्त जीव ले उद्धरया, मिल्या ब्रह्म सु जाय ।।

समत अठारेसे, बरस पनरोतड़ो धिन २ मिगसरमासा ।
दरियाव धाम पधारया, थित पून्यूं इति आसा ।।

आग्या भई अवगत की, बेग पधारो संत ।
सुरगादिक बैकुंठ में, बाजा बजे अनन्त ।।

घर घर मंगलचार है, अनन्त बधावा होय ।
गन गन्ध्रव मंगल करे, ता सम तुलेन कोय ।।

पारखत बैकुंठ से, त्यारी भई चोयार ।
अरज करे भगवान से, कहा कहो कर्तार ।।

नंद सुनंद सुभ्रसुं, कह्यो बिसन भगवान ।
बीचरो जुग संसार में, ज्यां धरे संत निज ध्यान ।।

वासुदेव आग्या दीवी, तम जावो बेगा दोड़ ।
हर बलभ दरियाव है, हरजन लाख करोड़ ।।

पारखत वैकुंठ सुं, चले बेग तत काल ।
काना कुंडल सिर मुकुट, गल वैजंत माल ।।

तेज पूंज की जोत हैं, च्यार भुजा अवतार ।
मात लोक पधारिया, राहेण पुरी मजार ।।

आगे सन्त विराजिया, उन्मुन ध्यान इकंत ।
सता समाध सत व्रत जिसा, ज्यां सुख घणा अनन्त ।।

पारषत परसण भया, देखत मुख दीदार ।
सन्त सरोवण हर भगत है, कलुकाल अवतार ।।

परसण होय दरियावजी, मिलीया प्रीत लगाय ।
बात कहो उण देश की, कंठ न छाडया जाय ।।

पारषद तां परसण करी, हो हो जन दरियाव ।
बैकुंठा धारण करो, धरो विवाणा पाव ।।

जब कह्यो दास दरियावजी, जैज करो दिन च्यार ।
सिख साखा दरसण करे, वधे भगत विसतार ।।

तब बोले श्री पारखत, कही धरम सुत बात ।
खम्या करो धीरज धरो, च्यार दिनां की बात ।।

आते रहे हम वैकुंठ कूं, पीछा जावां फेर ।
सिख साखा को ज्ञान द्यो, मेटो भरम अंधेर ।।

जेज कियां अब ना सजे, बेगा वेग तियार ।
सिव विरंची आदर करे, विसन देव इदकार ।।

नारद सारद पारखत, सिनकादिक रिख राय ।
च्यार मुकुत बैकुंठ में, महा लिखमी के चाय ।।

इन्द्र वरण कुभेर जी, याद करे दिग पाल ।
क्रोड़ तितीसुं देवता, सुण कर भया निहाल ।।

पारखतां एसी कहीं, चले विसन हजूर ।
जन दरिया म्हाराज के, तेज पूंज निज नूर ।।

सब सिख आया प्रीत कर, अपणे अपणे काज ।
परसण होय दरसण दीयो, जन दरिया म्हाराज ।।

सब सिख मिल एसे कह्यो, सुणज्यो दीन दयाल ।
आप पधारो ब्रह्म लोग में, म्हारो कूंण हवाल ।।

आप बिना संसार में, म्हारे वारस नाहीं ।
दुख सुख री किने कहां, झोत वहे घट माहीं ।।
दरसण कर कर जीवता, पलक पलक सो वाट ।
धीन दिहाड़ो धीन घड़ी, धीन विरिया धिन वाट ।।
इम्रत भर भर पावतां, प्रेम छाक गलतान ।
अगम देश की बातड़ी, कूंण कहेलो आण ।।
हम हां कवल मोदनी, तुम सतगुर ससि भाण ।
तुम सरवर हम माछली, बिछड़्या दुखी पीराण ।।

कुरजां ज्यूं क्रिपा करो, कोयल ज्यूं प्रतिपाल ।
नागर बेली का पान ज्यूं, परदेशां हरियाल ।।

धिन दाता गुरदेव जी, बैरागर की खान ।
घट में हीरा नीपजे, धीरज धरा समान ।।

सतगुर समदर रूप हो, सिख मरजीवां होय ।
पैठ दिल दरियाव में, हीरा ल्याया दोय ।।

आरतवंती सीप ज्यूं, सवांत बूंद की आस ।
यूं सिख मोती नीपजे, सुरत सतगुर के पास ।।
सतगुर कछप रूप हो, सिख लुग विछ्या जाण ।
इम्रत दिष्ट न्हालो सदा, पूरब प्रीत पीछाण ।।
तुम गुर चंनण बावना, सीतल अंग सुभाव ।
तपत बुजावो तन की, दिल ठाडा होय जाय ।।
अनड पंख ज्यूं राखज्यो, अन्तर दया विचार ।
इन्द्र घटा गुरदेव जी, सिख चात्रग करे पुकार ।।
भ्रंग सत गुरदेव जी, सिख है कीट पतंग ।
लट पकड़ भ्रंगी किया, तन मन एको रंग ।।
काम धेनु गुरदेव जी, सिख है बिछया जेम ।
पै पीया परतीत कर, भाव प्रेम निज नेम ।।
चीत्रामण गुरदेव जी, पूरो मन की आस ।
गुर तरवर कल ब्रछ हो, छाया छतर निवास ।।
तम गुर पारस रूप हो, सिख है लोहा समान ।
परसत ही कंचन भया, लका कोट प्रवान ।।
सिख कंचन होये नीवड़या, सतगुर भया सुनार ।
ब्रह्म अगन में ताय कर, जन्त्री काड्या तार ।।
ग्यान कसोटी चाडी, तोला कांटे घाल ।
रजमा सूतज काढ कर, रज सोदा गुर दयाल ।।

गुर चंबक पारा जिस्या, सिख है कंचन खासार ।
सोद लिया भव मंड में, सतगुर अंछ्या धार ।।

भवसागर संसार में, धिन सतगुर म्हाराज ।
पार उतारया तुरत ही, ल्याया नांव जिहाज ।।

सिख बालक भोलो घणो, रोयर मांगे खीर ।
माता ज्यूं प्रतपाल कर, पावे इम्रत सीर ।।

सिख वचन इम कहत हैं, सुणज्यो सतगुर आप ।
म्हा रोग जामण मरण, काटो त्रिविध ताप ।।

आरत की वाणी सुणी, कह्यो दास दरियाव ।
मनसा वाचा जाणज्यो, फैले माहिला भाव ।।

कृपा करी गुरदेव जी, बोल्या सबद बिचार ।
सिख साखा सनमुख सुणो, कहुं भगत बीसतार ।।

दुरमत दुबध्या दूर कर, छाडो कुल अभमान ।
तन मन धन अरपण करो, सत सबद कर जान ।।

कुल को कारण को नहीं, भगत सरोवण सत ।
बीधक जात केता लिरया, जांकी ओड़ न अंत ।।

क्रीपा करी गुरदेव जी, बोल्या सत का बैण ।
सिख चयारु मम देह, ज्यूं सब सन्ता का सेण ।।

पूरण तत पूरै मिल्यो, अरे लोक में नाहीं ।
पत भरता पत टेक में, है मेरा मुझ माहीं ।।

प्रगट संगत पूरण करी, कीसनदास इदकार ।
सुखराम सुख सागर है, नानग सींद अपार ।।

सिख च्यारूं सतगुर मुखी, जैसे पूरण चंद ।
ग्यान ध्यान वाणी, निरमल ज्यूं घन बरसे इन्द ।।

इक मनिया इको दसा, एक मत इकतार ।
सिख च्यारुं है तत बड़े, कहग्या वारु वार ।।

साच कहो गुरदेव जी, तामें फेर न सार ।
बिड़द बधारचो रघुनाथजी, सिवरी को इदकार ।।

परसरा होय गुरदेवजी, कही सिखां ने बात ।
राम राम रसणो रटो, संगत करो दिन रात ।।

सिव ब्रह्मा हर विसन के, एक नांव आधार ।
सेस नाग सिवरण करे, रसणा दोय हजार ।।

अवतारां मुख सुं कहयो, राम नाम ततसार ।
भगवतां का भे मिटया, पूंथा मोरव दवार ।।

असो नाम प्रताप है, परगट ध्रू प्रहलाद ।
रिषभ देव भगवंत के, नव जोगेसर साद ।।

वड़ो नांव म्हाराजै, सब राजन को राज ।
तीहुं लोक तारण तीरण, सबको सारण काज ।।

मो मुख महमा का कहुं, कैसे करू बंखाण ।
अरध नांव सुं तिरगया, जल परवत पाखाण ।।

नामदेव का पात में, लिख्यो नांव रंरकार ।
अरध नांव असो भयो, तीन लोक सु भार ।।

नांव नाम सु रहत है, नांव नांव सु जाय ।
नांव नांव सु मिल गया, आवागवण नसाय ।।

ऐती कहत दरियावजी, नांव महातम जाण ।
सास उसासा राम कहहत चल भयो पीराण ।।
सवा पोहर रजनी गई, आयो रतन विवाण ।
आकास मारग होय, सिर तरणा तज्यो आप जद प्राण ।।
तीन लोक चोदहा भवन, बागा भगत निसाण ।
पारषत आधीन होय, बोल्या वचन सुजाण ।।
धरम राय आशत करे, सन्त धरो सिर पाव ।
जन्म हमारो सफल करो, हो हो जन दरियाव ।।
वीबाण बेस दरियावजी, चले काल सिर कूट ।
गवन करी वैकुंठ कुं, लीयो राम धन लूट ।।

सुरग इकीसां सुख भया, सुरनरकरे उछाव ।
ब्रह्म लोक में घर कीया, धिन धिन जन दरियाव ।।

धिन थारो गुरदेव जी, धिन थांरा दीदार ।
धिन थांरा माता पिता, धिन सिख साखा लार ।।

धिन राजा परजा धिन, धिन धिन हे उन देस ।
धिन नगरी धिन भोम घर, धिन सन्त चरण परवेस ।।

जम्बू दीप भरत खण्ड में, देस मुरधर कोट।
राहेण पुरी प्रगट भई, जन दरिया की ओट ।।
सपत रिख सत लोक में, करे बंछना आस।
देव लोक धारण करो, हरिजन दरिया दास ।।
इन्द्र देव सब भीभो, राज-पाट सब सूंज।
लीजे जन दरियावजी, क्रीपा कीजे मूंज ।।
सिव ब्रह्मा अरु विसन जी, करे बोत मनवार।
आठ सिध नो निध ल्यो, कूबेर तणा भण्डार ।।
पुर इन्द्र बैकुण्ठ ल्यो, फेर अटल ध्रू राज।
च्यार पदारथ मुकत ल्यो, कहे विसन म्हाराज ।।
नारद कहे हर विसन सुं, सनकादिक कर जोड़।
भगत राज मांगे नहीं, तम चरणां लग दोड़ ।।
ब्रह्म लोक ब्रह्मा देह, सिव अरपे कवलास।
जन दरिया लवे नहीं, माहा मुगत की आस ।।
ब्रह्म लोक भी थिर नहीं, थिर नहीं मेर मड कवलास।
सुरनर मुनी थिर नहीं, थिर नहीं धर आकास ।।
आप मिलावो आप में, राखो चरणा माही।
भगत दान मुझ दीजिये, दूजी मांगु नाहीं ।।
सब ही माया आप की, उपज उपज खप जाय।
जन दरिया ने राखज्यो, हला बोल पद माहीं ।।

सिव ब्रह्मा अरु विसन सुं, हुवो बोत समाग ।
त्रिगुण देव उच्छब करे, जन दरिया बड भाग ।।
महालिखमी गोरा कहे, सांवलरी सत बेण ।
सदा रहो वैकुंठ में, म्हा परम सुख लेण ।।
वैकुंठा में सुख घणा, सन्तां को विश्राम ।
जन दरिया के एक है, माहा मुकुत सुं काम ।।
माहा मुकत सुन सहज में, जगे अखण्डत जोत ।
आवगवण का दुख मिटया. भागी जम की छोत ।।
जहां अनन्त चन्द रवि जिल मिले, जहां दरिया का वास ।
आठ पोहर चोसठ घड़ी, धरे ब्रह्म को ध्यान ।।
चोथे पद दरियावजी, केवल ब्रह्म समान ।
आठ पोहर चोसठ घड़ी, वसे अगम के देस ।।
परगट जन दरियाव जी, करी भगत परवेस ।
नो जोगेसर नो नाथ ज्यूं, नव खण्ड परगट नांव ।।
तीन लोक बरनन करे, धिन धिन राहेण गांव ।
धिन धिन राहेण गांव, जहां दरियाव विराज्या ।।
अवध पुरी की रीत, बिड़द कासी ज्यूं छाज्या ।
माया कांयेची जाण, राहेण मथुरा ज्यू सागे ।।
जो जन परसे आय, पाप क्रिया सब भागे ।
राहेण अन्त का पुरी, दवार का ज्यू इदकारी ।।
जन दरिया परताप, परस पांवन नर नारी ।

दोहा—राहेण छेतर धाम है, सातां पुरी समान ।
प्रगट जन दरियाव जी, धरयो ब्रह्म को ध्यान ।।

बरस बयासी सात पख, सात दिन सिर ताज ।
दरियाव धाम पधारिया, सारया सब का काज ।।

कान सुधारण राम जी, बिड़द बधारण आप ।
पदमा जन दरियाव है, जहां कोई पुन न पाप ।।

।। अथ सरूपचंदजी को प्रसंग ।।

इस प्रसग मे इड्वा निवासी स्वरुप चन्द जी सुराना (ओसवाल) द्वारा आचार्य महाप्रभु का दर्शन हेतु राम धाम रेण की ओर गमन करना मार्ग मे ग्वाला से गुरुमोक्ष समाचार सुनकर आचार्य श्री वियोग से दू.खी होकर प्राण त्यागना ।

सरूपचंद महाजन, जात सुराणो प्रगट ।
नगर इड़वा माहीं, प्रेम भगता जन गगड़ ।।

एक दिन उपज्यो भाव, प्रीत सतगुर सुं लागी ।
होय घोडे असवार, चल्यो दरसण बड भागी ।।

दोय कोस उनमान, रेण को कांकड़ आयो ।
तांनो मिल्यो ग्वाल, जाण तांको बतलायो ।।

कोहो गुवाल मम साच, बात एक पूछूं तोने ।
जन दरिया का कुसल, प्रसण होय कैजे मोने ।।

कह्यो गवाल मुख सवाल, हाल मोड़ा क्यूं आया ।
जन दरिया महाराज, आप तो धाम सिधाया ।।

सुण्यो सरवण सबद, देह हकारे छुटी ।
पींगला जैसी प्रीत, प्रेम की गागर फूटी ।।

आण मिल्यो सजोग, पुन पूरबलो भारी ।
मनसा वाचा साच, मिल्या जन देव मुरारी ।।

जन दरिया परताप, परम गत असे पाई ।
सदा काल आनन्द, रहै चरणां के मांई ।।

साखी—पदमा जन दरियाव जी, कलुकाल भगवन्त ।
अवतारां ज्यूं अवद है, मोख गिरामी सन्त ।।
मोख मुगत पर लोक में, जाहां निरंजण राम ।
पदमा जन दरियावजी, पूथा केवल धाम ।
केवल मिल केवल हुआ, अन्तर रही न रेख ।
पदमा जन दरियावजी, मिलगा ब्रह्म अलेख ।।
एक मेल हिलमिल हुवा, ज्यूं पाणी में लुण ।
पदमा जन दरियावजी, धरे न दूजी जूण ।।
आहा कहो गुरदेवजी, सब सन्तन को साख ।
भागवत गीता कह्यो, वेद पुराणां के वाख ।।

अनत जीव तिरसी घणा, सत संगत सुख लेह ।
पदमा नाम परतापते, धरे न दूजी देह ।।

राम मन्त्र है पदम दास, तीहुं लोक सिरताज ।
गिर परबत जल पर तिरया, पसू जूठा गजराज ।।

पसु पंखेरू भूत गत, म्हा क्रम कुल नीच ।
पदमा नाव परताप ते, तिरग्या बन्दर रीछ ।।

लीला जन दरियाव की, सुणो सकल घट पूर ।
सुख संपत नो निधि रहे, आठ सिध हजूर ।।

लीला जन दरियाव की, पढ सुण करे विचार ।
ग्यान भगत उर में उदे, भोजल उतरे पार ।।

मो मन सारुं मै कही, सतगुर के उपगार ।
पदमा जन दरियाव की, म्हैमा कही न जाय ।।

मो मुख महिमा का कहुं, म्हमा अथंक अथाय ।
पदमदास महमा कही, जन मोती परताप ।।

तां सुणिया सुख उपजे, कटे जनम २ के पाप ।
सिख तो जन दरियाव का, जन मोती महाराज ।।

पदमदास सिर तपे, सरव सुधारण काज ।

दोहा—समत अठारे से इकंतरो, चेत मास सुद जाण ।
तिथ पून्यूं गुरवार दिन, हुई लीला परवाण ।।

गुर हरजन कृपा करी, कह्यो लीला ग्रन्थ विचार ।
नर नारी श्रवण करो, उपजे सुख अपार ।।

आ पदमा की बिनती सुनो सन्त जगदीश ।
घटत बधत मम वचन है, गुना करो बगसीस ।।

पदमो बालक आपको, मात पिता गुर राम ।
भुलै चुके ओलबो, माफ करो घण साम ।।

म्हैमा सिंध अघाध है, आवे नाहीं अन्त ।
में लघु चिड़कली, पीवे अणी चांच भरत ।।

अथ उदेगिर किस्तुरां बाई की परची

इस परची मे आकासर (वीकानेर) निवासी उदयगिरीजी द्वारा द्वारका गढ गिरनार जाकर हिंगलाज सिद्ध (सन्त) को गुरु वनाने की जिज्ञासा करना । हिंगलाज सिद्ध द्वारा प्रेरणा पाकर उनके सिद्धपने से आकाश मार्ग से जाकर आचार्य श्री के चरणो मे हिंगलाज द्वारा दिया हुआ हीरे को भेट चढाना । आचार्य श्री से ध्यान योग सीख कर शिष्यत्व स्वीकार करना व पुन आकासर आना । विकमपुर की सेठाणी द्वारा उदयगिरीजी महाराज से परिचय प्राप्त करके मन ही मन मे आचार्य श्री दरियाव जी महाराज को सतगुरु धारण करना । उदयगिरी जी का सतगुरु दर्शन हेतु रेण गमन मार्ग मे उदयगिरीजी को लुटेरो द्वारा लुटा जाने का प्रयास व उदयगिरीजी महाराज की दरिया महाप्रभु से रक्षा के लिए प्रार्थना करना । आचार्य श्री द्वारा तुरन्त प्रकट होकर चोरो से उदयगिरीजो की रक्षा करना । इधर सतगुरु दर्शन प्यासी किस्तुरा को दर्शन देना । परचो कार सुख सारण का भक्त भगवान का अभेद(एक रूप) सिद्ध करना ।

॥ दोहा ॥

केता हरि भक्ता हुआ, गुरु भक्ता जग माय ।
गुरु भक्ता हरि भक्त को, वेरो कहुं सुणाय ॥१॥
हरि भक्ता हर पूजसी, गुरु भक्ता गुरु सेव ।
सुख सारण या भेइ धक, गुरु नारायण देव ॥२॥
हरि व्यापक सो होय रहया, सब घट ठामो ठाम ।
सुख सारण सतगुर विना, कौन कहावे राम ॥३॥

आचार्य श्री द्वारा उदयगिरी जी सेणणी तथा किस्तुराबाई की
चोरो से रक्षा की

पृष्ठ १६२

श्रीदरियावजी महाराज का द्वारकापुरी मे प्रादुर्भाव वि० स० १७३३

पृष्ठ १९७
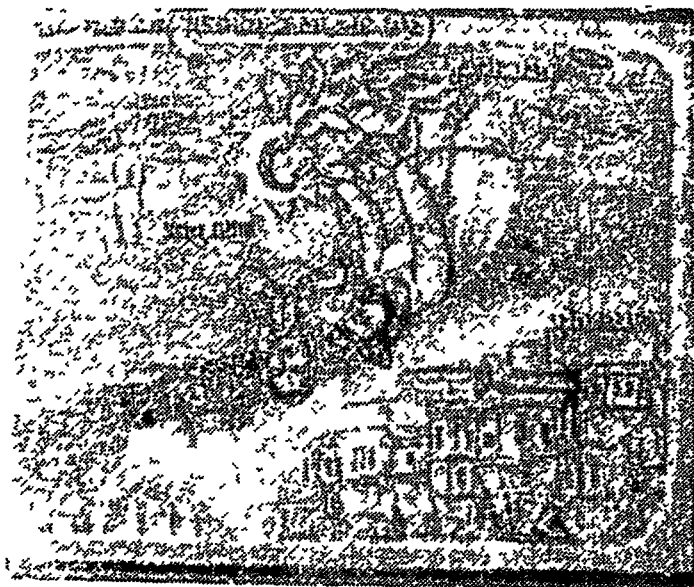
हरि उत्पन्न किने सबे, नख चख पिण्ड प्राण ।
सुख सारण सतगुरु बिना, भक्त न भाव न ज्ञान ॥४॥
किस्तुरा उदेराम जी, हुआ गुरु भक्ता ।
जिनकी परची कहत हूँ, मन उनमान जथा ॥५॥

* चौपाई *

बीकानेर गांव आकासर,
एक उदेगिर सांमो ।
हींगलाज प्रसण को चाल्यो,
अन्त आतुर नहकामी ॥१॥
दरस परस द्वारिका आयो,
उलट चढ्यो गिर नारी ।
सिध हर साध मिले कोई जोगी,
कार्ज करे हमारा ॥२॥
भूखो प्यासो भंव्यो दिन राती,
दिवस तीसरे पायो ।
धूणो देख काठ बिन जलतो,
मना भरोसो लायो ॥३॥
जोगी एक गुफा के माही,
आड़ी सिला लगाई ।
सांज पड़ी धूणी पर आयो,
लग्यो उदेगिर पाई ॥४॥

रे बाला खुदुया रथ भूखों,
पान बेल का लाई ।
पांच पात सो ग्रास बणायो,
खुद्या दूर भगाई ॥५॥
धूंणी माय गुदड़ी ताजी,
ठण्ड लगे तो काढी ।
पहली हाथ जलन कुं लागो,
दियो दूसरो ठाड़ी ॥६॥
जोगी कह सुणो रे बाला,
यहां तो ही कोन पठाया ।
दर्शण किया अबे तुम जावो,
जहां सु चल कर आया ॥७॥
कह्यो उदेगिर कहां मैं जाऊं,
आयो शरण तुम्हारी ।
धिन धिन भाग दर्श मोही दीयो,
कीजो मुक्त हमारी ॥८॥
साजो जोग जुगत दूं कूंची,
अमर करूं कल काया ।
लाख वर्ष लग बिनसे नाहीं,
जीव की मुक्त न भाया ॥९॥

काया अमर किया ह्वै काई,
लाख वर्ष तोही छीजे ।
आवगवण मिटे भव फेरो,
जीव को कारज कीजे ॥१०॥

मुरधर देश माँहि एक प्रगट्या,
बड़ा पुरष ओतारी ।
रायण नगर नाम दरियासा,
जीवां-काज देह धारी ॥११॥

बोहता जीव तीरे जग माँहि,
वे जन तारण आया ।
दास कबीर नामदे दादू,
ऐसा मोही लखाया ॥१२॥

वांसु मिल्या एक रा पूछो,
हम पासे तुम आज्यो ।
ले पाषाण धरयो कर मांही,
हीरो भेट चढाज्यो ॥१३॥

सिध का वचन सुणत सुख हुआ,
मन ही सतगुर धारया ।
रायण आप उदेगिर बूजे,
सांजू साध पधारया ॥१४॥

आगूं ही कृपा कर बोल्या,
आज उदेगिर आयो ।
गढ गिगनार हुआ दिस दाता,
जोग्यां जीव पठायो ॥१५॥

इतनी सुणी उदेगिर हरस्यो,
प्रेम उमंग घट आयो ।
ले प्रसाद किया सिर सतगुर,
हीरो भेट चढायो ॥१६॥

हीरो लेवो तुम्हारो तुम ही,
राम राम हम दीनो ।
जोग्यां पास भले मत जाजे,
कोल आवण को कीनो ॥१७॥

आज्ञा लिवी आकासर आयो,
भक्त पुरातन जागी ।
श्रवण सुण्या सब्द जणकारा,
सुखमण चुल्या लागी ॥१८॥

एक साध पधारया वन में,
जोगी उड़े अकासा ।
मन्त्र लिख्या गोट का मुख में,
देखे तो दरिया सा ॥१९॥

उत्तर सिधां वन्दना कीवी,
हाथ जोड़ सिर नाया ।
बद्रीनाथ के दर्शण जावां,
गिर नार सुं आया ॥२०॥
उदेराम को यहां तुम मेल्यो,
वचन तुम्हारो पायो ।
उण तो सुरत मिलण किनी,
बिन आज्ञा नहीं आयो ॥२१॥
किस्तुरा बिराणी विक्रमपूर,
साचा सन्त न सूजे ।
पूजे भेरव अरु षड़ दर्शण,
फिर फिर कार्ज बूजे ॥२२॥
कह्यो उदेगिर सुण किस्तुरा,
संगत साध की कीजे ।
रायण नगर नाम दरिया सा,
वहां जाय शरणो लीजे ॥२३॥
पूज्यां भेरव हुवे कहो कांई,
सतगुर तोय बताऊं ।
जांसु मिल्या परमपद पहुंथे,
वे जन तोय मिलाऊं ॥२४॥

रायण आय आज्ञा उण लीवी,
केवल भक्ति द्रिढाई ।
सांस उसांस राम मुख केज्यो,
हिल मिल बेनर भाई ॥२५॥
भजन करत सब ही भव भागा,
लगी नांव सु ताली ।
साधां का दर्शण कब होसी,
पड़ी देश पंच काली ॥२६॥
उदेराम के आतर लागी,
गुरु दर्शण की प्याला ।
कह्यो सभा में रायण जासा.
हिरदे प्रेम हुलासा ॥२७॥
जब बोली किस्तुरा बाई,
मै तेरे संग जावु ।
दर्शण विना बहुत दिन बीता,
ओ मोसर कब पाऊं ॥२८॥
वरजी बोत बखत ओ खोटो,
कांई किसा व्है तोने ।
काल चाल वट फाड़ा खोसे,
साध कह कांई मोने ॥२९॥

जन दरियाव सदा संग मेरे,
तुम मन जाणो दूरा ।
करसी साय संक मत आणो,
सिर सतगुर पूरा ॥३०॥
बरजो मती रहू मैं नाही,
दर्शण की मन माही ।
कह्यो उदेगिर बात भलेरी,
सेन करो घर जाई ॥३१॥
गयो अकेलो जात न जाण्यो,
कोई भायो संग लीनो ।
ऊंट झेकायर उतरयो खोटे,
बट फाड़ा छल कीनो ॥३२॥
बारो तड़े नागाणो घेरो,
मुलक लुटेरा लुटे ।
दूर्भक्ष समो मिले भख नाही,
भाज्यां लूं क्या न छूटे ॥३३॥
ऊठ अचानक मारण ध्यायो,
बात बणी अब भारी ।
हो दरियाव आप के दर्शण जातां,
आ गत म्हारी ॥३४॥

ग्राह गह्यो गज राज पूकार्यो,
तार लियो छन माही ।
वांगत आज हमारी स्वामी,
हरी गुरु दूरा नाही ॥३५॥

सुनी पुकार प्रगट्या पल में,
सतगुर साहेब नेरा ।
रुपिया पांव रह्या कर ऊंचा,
आंख्या भयो अन्धेरा ॥३६॥

भोर भयो किस्तुरा बूजे,
कहां उदेगिर भाई ।
वे तो गया गुरां का दर्शण,
पड़ी धरण मुर जाई ॥३७॥

हो दरियाव आपके दर्शण,
अबे किस विध पाऊं ।
मै अनाथ अबला बल नाही,
किण साथे आऊं ॥३८॥

गद गद रोम नेण जल वरसे,
रूदन करे हर रोवे ।
दर्शण विना दुखी जिव मेरो,
ऊठ ऊठ पथ जोवे ॥३९॥

आतर सुणी पधारया आपी,
बिड़द प्रगटो कीनो ।
अपराधि दास जाण कर दर्शन,
किस्तुरां को दीनो ॥४०॥

चरणा लगी करी परिक्रमा,
बात-बिमत-की सारी ।
अन्तर ध्यान हुआ मुख आगे,
भयो अचम्भो भारी ॥४१॥

अबे उदेगिर रायण आयो,
साधा मिरा उचारी ।
किस्तुरा को दर्शण दीनो,
कीनी रक्षा तुम्हारी ॥४२॥

आय आकासर कह्यो उदेगिर,
जन दरियाव उबारया ।
किस्तुरां कहे सुणो हमारी,
यहां महाराज पधारया ॥४३॥

सुणज्यो सकल-सभा में साधा,
राम राम फुरमाया ।
सब कोई कह दियो-मोही दर्शण,
जिण दिन तुम्हे सिदाया ॥४४॥

हर भक्ता हर ही प्रत पालों,
गुरु भक्ता गुरु तारैं ।
हरि गुरु दोऊं एक कर मानो,
मत कोई जाणो न्यारे ॥४५॥

* दोहा *

सतगुर साहिव दोय मिल, धारयो एक शरीर ।
पडदो दे प्रभु बोलिया, खोली अमृत सीर ॥१॥
निराकार हुता हरि, तो क्यो धारयो आकार ।
जीवां को परमोदवे, के मेटण भू को भार ॥२॥
वे ही गुरु वे ही हरि, वे ही सन्त औतार ।
लीला भक्त विलाश कूं, नाम धराया चार ॥३॥
मधू सेठ दरिया सा तारयो, दादू तारी जहाज ।
राम लक्ष्मण सेना तारी, बांध समुन्द्र पर पाज ॥४॥
पीपे चन्दवो जलते बुजायो, पिण्डो जलत कबीर ।
गज डूबत हरि आप उबारयो, कृष्ण बधायो चीर ।५
किस्तुरा उदेराम जी, सतगुरु जन दरियाव ।
जहां जा चग्या मै करूं, दिज्यो मोक्ष प्रसाण ॥६॥
भाव भगत मोही दीजियो, कीजो शब्द प्रकाश ।
सुख सारण को राखज्यो, दरियासा को दास ॥७॥

नवधा भक्ति विष्णु की, विष्णु लोक को जाय ।
यां रा तो गुरु बेद ही, साजन क्रिया मांय ॥८॥

केवल भक्ति ब्रह्म की, मिले परम पद मांय ।
सुख सारण सन्त जाणसी, बेदा कुं गम नांय ॥९॥

गुरु गादी गुरु परम पद, गुरु ही राम सहाय ।
गुरु सन्मुख बां प्रगटे, गुरु बेमुख टल वहां जाय ॥१०॥

श्री दरियावजी महाराज की लावणी

सन्त जयरामदासजी कृत

प्रगट भये दरिया सा दाता,
जान कलयुग में विख्याता ॥टेर॥
भरत खण्ड मुरधर के माहीं,
शहर एक जेतारण जाही ।
जन्म धर अवनी पर आये,
गिगन सुर पुष्पन झड़ लाये ॥
सतरासें तेतीस का जन्म अष्टमी जाण ।
जन्म लीयो दरियावजी सरे रोप्या भक्ति नीशाण
धिन्न है वांके पितु माता ॥१॥

एक दिन पलणे पोढायें,
नागेन्द्र दर्शण कुं आये ।
भान उदे व्याकुल भयो गाता,
गई जल भरने कुं माता ।
व्याकुल वदन विलोक के,
छत्र कियो तेहीं आन ।
देख मात सुध-बुध सब बिसारी,
रही अचभो मान ।
लग्यो है धूजण सब गाता ॥२॥
जाय पडित पे महतारी,
हकीगत वरणी है सारी ।
अचभो भयो मोय भारी,
पुरुष नहीं है कोई अवतारी ।
पडित देख पुराण कुं,
कयो सकल समजाय ।
राजा परजा बादशाह,
नीचे पैगम्बर आय ।
धरेगा चरणों में माता ॥३॥
वर्ष एक दोय तीन च्यारी,
पंच षट् सप्त तेज भारी ।

पिता देह तजी स्वर्ग पाये,
आप जद राहण में आये ।
नांनो नाम कमेसता,
राखे हेत सनेह ।
तां कारण महाराज पधारें कियो पवित्र गेह ।
ताप गई उपजी सुख साता ॥४॥
भागवत संस्कृत गीता,
बेद घुर्न निसवासुर करता ।
हिन्दगी पारसी न्यारी,
विद्या पढ हिरदा में धारी ।
एक दिनां भागवत में,
प्रसंग ऐसो आय ।
सतगुर बिना मुगत नहीं पावे,
कीजो कोट उपाय ।
सुणी जब निश्चे कर बाता ॥५॥
उदासी भई पींड मांहीं,
गुर बिन जीवण होय नाहीं ।
सोध षट् दर्सण सब लीना.
सतगुर धारण नहीं कीना ।

गिगन गिरा बाणी भई,
बोल्या श्री भगवान ।
प्रेम पुरष मिलसी अब तोकुं,
कयो हमारो मान ।
धरो मन धीरज उर ताता ।।६।।

प्रेम जी किरपा कर आये,
जाय चरणों में सिर नाये ।
मिलत ही वाणी परकासा,
जोड़ मत करना दरियासा ।
सकल भरमना दूर कर,
राम नाम कर याद ।
बार बार मिनखा तन नाहीं,
मत खोवों नां बाद ।
नाम बिन मुक्ति नहीं पाता ।।७।।

भेद मोय भक्ति को दीजो,
नाथ मोय शरणागत लीजो ।
जोड़ कर दासातन किनी,
प्रेम जी आज्ञा जब दीनी ।
काती सुद एकादशी आज्ञा सीस चढाय ।

होय निरदावे सिवरण कीजो,
दीनो भेद बताय ।
समेट सब इन्द्रिया मन हाता ॥८॥
श्रवण सुण रसना सुं ध्याये,
कण्ठ होय हिरदा में आये ।
नाभ में रूम रूम जागी,
सबद धुन रग रग में लागी ।
पेस पयाला उलट मेर होय
चढ्या त्रिगुटी जाय ।
सुन सिखर बेहद पद माहीं,
केवल ब्रह्म समाय ।
जहां कोई दिवस नहीं राता ॥६॥
समाधी पुरष भये भारी,
लगाई उनमुन होय तारी ।
भई जब अणभे की वाणी,
सिख बहो उपजे परमाणी ।
किसनदास सुखराम जन,
पूरण नानग सन्त ।
बोहतर सिखा कुं सीस नवाऊं,
उधरे ओर अनन्त ।
कहुं मैं कहां लग गुण गाता ॥१०॥

कलु में जीव बहुत जागे,
प्रगटे आप ब्रह्म सागे ।
राजा जद दर्सण कुं आये,
देख दिदारज सुख पाये ।
आज्ञा भई सुखराम कूं,
दीयो नृपति कुं ज्ञान ।
दोऊं जोड़ सीस नवावुं,
धिन्न हो कृपा निधान ।
डूबता पकड़्यो मोही हाता ॥११॥
थाग नहीं दर्या को कोई,
चीड़ी भर चोंच मगन होई ।
तुच्छ बुध कहता नहीं आई,
सन्त माहि लीजो अपनाई ।
भई महर म्हाराज की
तपे सींस सुख राम ।
जन जेराम लावणी गाई,
शहर मेड़ता धाम ।
सदा चित चरणों मे राता ॥
प्रगट भये दरिया सा दाता ॥१२॥

श्री दरियाव महाप्रभु की लावणी

※ सन्त आत्मारामजी कृत ※

दया निधी दर्या अवतारी,
सरण जीव आये शुभकारी ।।टेक:।
अवगत की आज्ञा भई तांई,
परगटे अवनी में आई ।
जिवा के तारण के तांई,
अवतरे मुरधर के मांई ।
नगर एक रायण जहां,
तां प्रगट भये दयाल ।
सतरा सौ की सन्मत माहीं,
तेहतीसा की साल ।
भादवा बद अष्टमी शुभकारी ।।१।।
जन्म समय ईचरज एक होई,
दरस कर नाग मनी मोई ।
उदय रवि तपन बहुत जोई,
व्याकुल लख छत्र कियो सोई ।
दरस करत सब ही कहे,
ये पूरण अवतार ।

जीवां के हितकारी आवै,
करणे को भव पार ।
कलि में तारण की धारी ।।२।।

मुरधर को नरपत एक होई,
बगतसिह नाम तास जोई ।
तास को तात हत्या होई,
नरपत को दीसत हे सोई ।
स्वामी का दरसण किया,
ताप पाप गया भाग ।
नरपत के मन आनन्द भयो है,
धन्य धन्य हो महाराज ।
सन्त जन सब अघ के हारी ।।३।।

मेड़ते विजे सिंग राजा,
एक समय दर्सण कीयो ताजा ।
स्वामी के भोजन के काजा,
बर जायो सहर सकल राजा ।
फतेचन्द प्रसाद जो लायो राख करार ।
दोय देह धर भोजन कीनो,
तेल घृत एक सार ।
सन्त जन एसे उपकारी ।।४।।

मेड़ते काजी एक आयो,
दरस तिन स्वामी को पायो ।
कपट को भोजन बनवायो,
देव बाणी कर बरजायो ।
मदली खान पठाण की,
पानीपत में साथ ।
घोड़ा का घमसाण मांयने,
दरस दिखायो लाय ।
हस्त दे कीनो दल पारी ॥५॥

रायण में चत्र दास होई,
न्यात से विरोध बोत जोई ।
तास के कर काटत दोई,
जासु फल दुष्ट गये खोई ।
किसनदास महाराज के,
घोड़ो दीनो लार ।
कोस चतुर पंचम नहीं पूगो,
स्वामी दीयो दीदार ।
दरस कर सुख उपजो भारी ॥६॥

मधुपुरी छोटी सी केते,
शिष्य सुखराम जहां रेते ।

गुरु धर्म गाढा माय बेते,

कष्ट कर राम नाम लेते ।

उपदेस्यो नरपती को,

राम मन्त्र दे जाप ।

धाम जात गुर दरसण दीना,

मिटी विरह की ताप ।

वचन अदेत जे उचारी ॥७॥

सतरा सें चोतर की साला,

ताही समें पड़ियो दे काला ।

पूरण मानग की ये सला,

डूंगर विरधा सुं कीयो हाला ।

सतगुर सेवा कीजिये,

समो बोत बेहाल ।

ये स्वामी दिल माहीं जाणी,

कोय कियो तेहीं काल ।

मास खट् कष्ट दीयो भारी ॥८॥

दिल्ली में शिष्य एक होई,

मधुचंद केते सब कोई ।

न्हाण गयो जमुना तट बोई,

डूब गयो काली दह सोई ।

रक्षा कोनी जाय के,
दरस दिखायो ताय ।
जामा की बांय भीजी,
दीसी बिराजा रायण माय ।
हरस में संगत भई सारी ॥९॥

नागिणे शिष्य भये भारो,
जैन धर्म व्यात तजी सारी ।
राज ने तास दीवी खारी,
सही सब रह नाही हारी ।
सप्त मास सही भाकसी,
तज्यो देश घर बार ।
स्वामी को दरसण नहीं छोड्यो,
धन्य हरखा मत सार ।
टेक जन राखी ईकतारी ॥१०॥

मोदाणी सांजू में कहिये,
धर्म की टेक पकड़ रहिये ।
काल समें राज दु ख सहिये,
तपत लो उपर पग दईये ।
स्वामी के उपदेश सु,

वचन कह्यो कुछ नांय ।

छात पड़ी ईश्वर की आज्ञा,

जना के सायक करतारी ॥११॥

आकासर उदेगिरी नामा

दरस कूं चाले गुर धामा ।

गेल में विघन भये तामा,

दरस ते अनन्त सुख पाया ।

धाड़ापत आन्धा भया,

सस्त्र सके नहीं मार ।

किस्तुरां को दरसण दीनो,

बीकानेर मजार ।

दर्स कीयो सब हो नर नारी ॥१२॥

सरूपचन्द सुराणो होई,

ईडवा माहिं रहे सोई ।

गुरा के दरसण चित होई,

तुरत ही रायण मग जोई ।

मारग में गुर अन्त सुन,

आप देह को त्याग ।

कृपा कर गुर दरसण दीना,

धन्य धन्य उनके भाग ।
सुरत गुर चरणां में धारी ॥१३॥

परचानो केता नहीं आवे,
समुद्र को पार कोन पावे ।
सन्त गुण कहां लग जो गावे,
बुद्ध जन के ते थक जावे ।
किरपा दास पर राखज्यो,
स्वामी श्री दरियाव ।
अरज आत्माराम करत है,
मम सिर तुमरो पांव ।
अर्ज ये सुणजो प्रभु म्हारी ॥१४॥

— इति *—*